



विकास चाहता हं।

रुझे टैक्स चुकाना पसंद है, क्योंकि मैं उसके बदले सामाजिक ओलिवर वेंडेल होम्स जनियर

ऐसे वक्त में जब बदलती वैरिवक भु-राजनीति के मददेनजर विश्व की बडी ताकतें अपने संबंधों को नए सिरे से परिभाषित करने में जुटी हैं, प्रधानमंत्री मोदी की मॉस्को यात्रा ने दोनों देशों के संबंधों को नई ऊर्जा देने के साथ यह संदेश भी दिया है कि बहुध्रवीय विश्व में भारत अपनी स्वतंत्र विदेश नीति पर कायम है।

# संदेश साफ है



एक नया अध्याय भी जोड़ा है। भू-राजनीति का इससे बेहतर उदाहरण क्या होगा कि प्रधानमंत्री मोदी ने ठीक उसी अवसर पर पूर्तिन से भुलाकात की, जब नाटो अमेरिका में अपनी 75वीं वर्षगांठ मना रहा था। दरअसल, यूक्रेन युद्ध ने वैश्विक समीकरणों को बदल कर रख दिया है। चीन आज जरूर रूस के साथ खड़ा दिखता हो, लेकिन ादमा है। माना जा परिस्त है कि से ताल खड़ा हिखा। है, हानने क्षेत्री अमेरिका सहित परिचामी देश परहले ही रूस का साथ छोड़ चुके हैं। भारत के रूस के साथ बेशक मजबूत संबंध रहे हैं, लेकिन यह भी सच है कि दोनों के बीच वार्षिक द्विपक्षीय सम्मेलन का सिलसिला पिछले कुछ वर्षों से बंद था। ऐसे में, प्रधानमंत्री मोदी की मॉस्को यात्रा को

भारत को रूस संबंधी नीति में बदलाव की आशंकाओं को निराधार बताने का साहसिक राजनियक प्रयास ही माना जाना चाहिए। अपने तीसरे कार्यकाल में पहली बिरंदेग यात्रा के लिए रूस को चुनकर प्रधानमंत्री मोदी ने भारतीय प्रधानमंत्री हारा अपने कार्यकाल में पहले पड़ोसी देशों की खत्रा के रिखाज को भी तोड़ा है, जो भारत-रूस के संबंधों की गहराई को ही व्यक्त करता है। उल्लेखनीय है कि यक्नेन राज्या आ गहारह की हो उपने परिताल गहरिसाना है हुए हुएना युद्ध के दौरान गहार ने प्रतिकृत्य मतदान से परहेज किया, तो रूस से रखीं, संयुक्त राष्ट्र में प्रतिकृत्य मतदान से परहेज किया, तो रूस से ऊर्जा आयात पर परिचमी देशों की धमकियों की भी उपेक्षा की। मॉस्को में दोनों कदुदावर नेता जिस गर्मजोशी से मिले हैं, उससे अंतरराष्ट्रीय समुचाय को संस्था गया है, तो दूसरी तरफ प्रधानमंत्री मोर्च को रूस के सर्वोच्च सम्मान से नवाजा जाना और 2030 तक द्विपक्षीय व्यापार को सौ अरब डॉलर से अधिक तक पहुंचाने पर सहमति व्यवत करने के भी अर्थ गहरे हैं। हालांकि व्यापार असंतुलन अब भी एक चुनौती है,



क्योंकि दोनों देशों के मध्य फिलहाल 65 अरब डॉलर के व्यापार मे भारत का निर्यात पांच अरब डॉलर से भी कम है। इसके अतिरिक्त नारा का त्यारा बाव जरव डारार से बा कम है। इसके जातारका, चीन और रूस की बढ़ती नजदीकी भी भारत के लिए चिंता का विषय है। हालांकि रूस भी समझता है कि अमेरिका, जापान और रूस, तीनों के साथ बेहतर रिश्ते रखने वाला भारत एशियाई ढांचे में निर्विवाद रूप क ताज करार रिस्प (खेज नेशा नामा (ग्रहावाड़ कार्य में नामाजन हैं से चीन से बेहतर स्थित में हैं। कुल मिलाकर, प्रधानमंत्री मोदी की यात्रा ने दोनों देशों के संबंधों को नई ऊर्जा और दिशा देने के साथ पूरी दुनिया को यह संदेश भी दिया है कि बहुधुवीय विश्व में भारत अपनी स्वतंत्र विदेश नीति पर कायम है।

# जीएसटी में कौन-से बदलाव चाहिए

जीएसटी जैसी जटिल व्यवस्था का लागू होना अपने आप में बड़ी सफलता है, क्योंकि आम सहमति बनाना कठिन था। हालांकि इसके आधे-अधूरे कार्यान्वयन को पूरा करने, दरों को तर्कसंगत बनाने और इसके आधार को व्यापक बनाने की भी जरुरत है।

स्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) भारतीय कराधान के इतिहास में एक ऐतिहासिक कर सुधार रहा है। यह अब आतिसान भए के प्रतिसालक कर सुबार हो है। यह अब सुक्त होने के बाद में इसे लेकर उन्मीर बढ़ी ही हैं मुक्त होने के बाद में इसे लेकर उन्मीर बढ़ी ही हैं मोस्सरी का सबसे बढ़ा लाभ यह है कि इसने कर व्यवस्था को अभिक कुशल और सरल बना दिया है। छालांकि विभिन्न संक्रमणकालांन चुनोतियों के कारण आंडा संदेह भी पैरा हुआ है। अप्रत्यक अर पार्थिक रूप में सरलों के लिए कर राजस्य का एक महत्वपूर्ण स्रोत रहा है। लंबे समय तक अग्रस्थ कर को राजस्य के

साधन के रूप में देखा जाता था. न कि आर्थिक विकास को बढावा देने

पिनाकी चक्रवर्ती

वाले साधन के रूप में। नतीजतन लंबे समय तक यह पुराने ढंग से चलता रहा, जिसमें कोई सुधार न हुआ। 1970 के दशक के बाद गठित विभिन्न समितियों ने इनमें व्यापक सुधार की सिफारिश की, जिनमें से कुछ को लागू किया गया। बाद में अप्रत्यक्ष कर में कई बदलाव हुए, जो अंतृतः 2005 में मूल्य हुए, जो अंततः 2005 में मूल्य वर्द्धित कर (वैट) के रूप में सामने आए। जीएसटी उसी वैट प्रणाली का विस्तार है।

ाद्रा जाद्सटा उसा जट क्रनासा ा विस्तार है। जीएसटी में तकनीक का भी व्यापक उपयोग किया गया है। पूरा जीएसटी नेटवर्क इस पर निर्भर है। ई-वे बिल इस तंत्र का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, क्योंकि यह वस्तओं की

आवाजाही को कर प्रशासन को नजर में रखता है। इसके अलावा ये विल आपूर्तिकर्ताओं के जीएसटी रिटर्न में स्वतः शामिल हो जाते हैं, जिन्हें पहले मैनुअली जांचना पड़ता था। चूंकि अब सब कुछ ऑनलाइन है, तथा ई-वे बिल का प्रारूप पूरे देश में एक जैसा है, इसलिए पारगमन दस्तावेजों की जांच में लगने वाला समय घट जाता है तथा विभिन्न राज्यों में अलग-अलग प्रक्रियाओं से पैदा होने वाली उलझन भी खत्म हो जाती है।

जीएसटी का एक लाभ यह भी है कि इससे क्षेत्रीय असमानताएं धीरे-धीरे कम हो रही हैं। चूंकि पहले ज्यादातर कर उत्पादन के आधार पर थे, इसलिए कर राजस्व का ज्यादा हिस्सा उत्पादक राज्यों द्वारा अर्जित किया



जाता था। अब चूंकि जीएसटी गंतव्य पर आधारित है, इसलिए कर राजस्व उन राज्यों को मिलता है, जहां उपभोग होता है। इससे उत्तर प्रदेश, बिहार और मध्य प्रदेश जैसे गरीब, उपभोक्ता राज्यों को मदद मिलती है। हालांकि जित राज्यों को इससे राजस्व में हानि की आशंका थी, उन्हें केंद्र सरकार ने पांच साल तक मुआवजा दिया। मुआवजा बंद करने के बाद भी राज्यों के राजस्व में कोई बड़ी कमी नहीं हुई। मतलब जीएसटी राजस्व राज्यों में सुव्यवस्थित हो गया है।

हालांकि, भारतीय जीएसटी एक ऐसा मॉडल है, जो इतने बड़े कर सुधार की जटिलताओं और उनके बाद के समाधान को दर्शाता है। फिर भी कर ढांचे के कछ पहल जीएसटी की सरलता के वादों के विपरीत हैं। इसलिए न कुछ निरुपू जाएसटा का सरराता का नाया का विकास है। इसाराए, मामलों में परिणाम अपेक्षा से कम रहे हैं। जीएसटी, कर दरों और न्न छूटों से संबंधित नियम अब भी बदल रहे हैं, जिससे पिछले सात वर्षों में जीएसटी के प्रदर्शन का समग्र आकलन करना कठिन है। फिर भी पुरुआती आंकड़ों से कुछ निष्कर्भ निकालें जा सकते हैं। हालाँकि जीएसटी ज्यादा व्यवसायों को कर के दायरे में लाने में सफल रहा है, लेकिन उन्हें करों का भुगतान करने के लिए बाध्य करने का काम अब भी बाकी है।

जीएसटी से कर प्रशासन पर दबाव बढ़ा है, क्योंकि छोटे व्यवसायी कुल पंजीकृत लोगों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, फिर भी उनका वास्तविक कर योगदान अपेक्षाकृत नगण्य है। तर्क दिया जाता है कि इन करदाताओं को लोड दिया जाए. प्रशासन को उच्च बोझ से राहत दिलाई जाए और बडे करदाताओं को बेहतर सुविधा देने पर ध्यान केंद्रित किया जाए। इसके लिए पंजीकरण सीमा को सावधानीपूर्वक निर्धारित करने की जरूरत है, ताकि

जीएसटी से सबसे बड़ी अपेक्षा सही मायनों में एक राष्ट्र की भावना पैद करना था यानी देश भर में वस्तुओं एवं सेवाओं की निर्वाध आवाजाही हालांकि जीएसटी ने ज्यादातर मामलों में व्यावसायिक पक्ष के लिए इसे कराताल आद्रसाट में अवस्थार मानार में जानसालक में के मार्टिक सुनिरिषत किया है, पर बाहनों के विनियमन और क्राधान से संबंधित कुछ और सूक्ष अंतर अब भी मौजूद हैं, जिन्हें दूर किया जाना बाकी है। बाहनों की आवाजाही के संबंध में हर राज्य का अपना अलग-अलग रोड टैक्स होता है, जो अब भी उनकी मुक्त आवाजाही में बाधा डालते हैं। ऐसे करों एवं मुख्जें को एक समान बनाने की गुंजाइश है। जीएसटी लागू होना अपन आप में बड़ी सफलता है, बसीक आम सहमति बनाना कठिन था। ध्यान रखें कि जीएसटी की संरचना अब भी लिकसित हो रही है और खस्त नहीं हुई है। दरों को तर्कसंगत बनाने का काम अभी जारी है।





मन की बनावट कुछ ऐसी विलक्षण है कि सब कुछ अपना ही अच्छा लगता है। अपना स्वभाव, चिंतन, विचार, आदतें सब अच्छा लगता है और बाहर वालों का गलत। इसलिए सबसे पहले खुद की समीक्षा से कीजिए।

### गलतियां पता चलेंगी, तभी सुधार की गुंजाइश होगी

आप अपनी समीक्षा नहीं कर पाते और दूसरों को समीक्षा करते रहते हैं। पड़ोसी, पत्नी, बच्चों, दुनिया भर की गलतियां और दोष देखते हैं। यहां तक कि भगवान की भी गलती बता देंगे। लेकिन हम अपनी गलतियों पर तनिक भी विचार नहीं करते। जब हम अपनी गलतियों और अपनी चाल की समीक्षा करना शरू कर करता जब हम अपना गंतातया आर अपना चाल का समावा करता शुरू कर देंगे, तब हमें संच्याई पता चलेंगी। गित चलेंगा कि हमें क्या नहीं करना चाहिए और क्या करना सही है। दरअसल, मन की बनाबट कुछ ऐसी विलक्षण है कि अपना ही सब कुछ अच्छा लगता है। अपना स्वभाव, चिंतन, विचार, आदतें सब अच्छा लगता है और बाहर वालों का गलत। आध्यात्मिक उन्नति में इससे लब जच्छा लगता ह आर बाहर पाला का गलता आव्यात्मक उनाम म श्रव बड़ा व्यवधान कुछ नहीं है। इसलिए सबसे पहले खुद को समीक्षा कीजिए। एकांत में बैठ, तो यह चिंतन करें कि हमारा कोई साथी या सहकारी नहीं है।



कुटुंब, व्यापार, खेती-बाड़ी सबको अपने स्थान पर रहने दीजिए। आप तो सिर्फ इस पर विचार कीजिए कि हम पिछले दिनों क्या भल करते रहे। कहीं रास्ता तो नहीं क्या नूरा करत रहा कहा रास्ता ता नहा भटक गए? क्या इसलिए हमें जन्म मिला? पेट के लिए जितनी जरूरत थी, क्या उससे ज्यादा कमाते रहे? कुटुंब की जितनी जिम्मेदारियां थीं, क्या उससे ाजाता जिम्मताला था, पथा उससे ज्यादा अपने ऊपर बोझ बड़ाते चले गए? जिन लोगों को जिस चीज की जरूरत नहीं थी, क्या उन्हें प्रसन्न करने के लिए वे सब देते रहे। सोचें, ऐसा क्यों किया?

क्या वजह है इसकी? ये सब हमारी गलतियां हैं। अपने स्वास्थ्य के लिए जिस तरह के आहार-विहार की जरूरत थी, क्या वह रखा? चिंतन की शैली में जिस तरक की शालीनता को जरूरत थी, क्या कर रखा गया? परिवार और समाज के मंति जो करिय थे, क्या उनको निमामः विचार कर कि रूप कर करिया मिमाने के मंत्र को पिछड़ गए? जब हमें अपनी गलतियों का पता चलेगा, तो उनमें सुधार की भी गुंजाश्वर होंगी। आपको जब अपनी गलतियों को जानकरों हो नहीं होंगी वा उनका एहसमा नहीं होंगी वा उनका एक पाएगा इसहिय पूरसों के बजाय अपने भूकात्व के बारे में समझेशा को जिए। पाप पिस्फ अपराध को ही नहीं कहती। पाप उनके भी कहती हैं, जो आपके जीवन को अस्त-अस्त बनाकर रखते हैं हो होंगी. उनकी हो, हल्या आदि तो बुंद काम हैं ही, लिवान आलत्त्व और प्रधाद में समय का का को की भी और इंपाह वाका हर यह उनका है का स्वार एस स्वार स्वार स्वार प्रधाद में सह हमारी गलतियां हैं। विवार करना जरूरी है कि हम से गुण, कर्म और स्वार्थ समी बचा गलतियां हैं। विवार करना जरूरी है कि हम से गुण, कर्म और स्वार्थ करना है आई का हो चूकते रहे, रख जानना बहत कर करी है हम करना की असरने का असरने हम हम हमारे हमारे कर कर हो हम हम हमते हमें एक हमारे हैं आ हम हमारे और का स्वार्थ करना हम हमते हमें एक करने हैं हम स्वार्थ के समसर का असरने हम हमते रहे, रख जानना कहता करने हैं हम स्वर्थ का असरने का असरन हमारे हमारे हमारे हमारे हमारे का स्वार्थ करना हमारे हमारे का स्वार्थ करना हमारे हमारे हमारे का स्वार्थ करना हमारे हमारे का स्वर्थ करना हमारे हमारे का स्वर्थ हमारे का स्वर्थ हमारे का स्वर्थ हमारे का स्वर्थ करना हमारे हमारे का स्वर्थ करना हमारे हमारे का स्वर्थ हमारे हमारे का स्वर्थ हमारे हमारे का स्वर्थ हमारे हमारे हमारे का स्वर्थ हमारे हमार तरह की शालीनता की जरूरत थी. क्या वह रखा गया? परिवार और समाज के यह जानना बहुत जरूरी है। इन गलतियों और चूक को सुधारने का अगला कदम होता है, आत्म-परिष्कार। गलितयों को सुधारने के लिए उनकी रोकथाम

### गलतियां सुधारने का तरीका

इन्सान को जब अपनी गलितयां समझ आ जाती हैं, तो उनको ठीक करना आसान हो जाता है। मसलन, शराब पीते हैं, बोड़ी पीते हैं। इनसे कलेजा जलता है। विचार कीजिए, अब हम शराब स्

आत्मशोधन है। ऐसा संकल्प लें कि हमसे, जो भूलें होती रही हैं, उनको अब फिर कभी नहीं दोहराएंगे। गलतियां ठीक करने का आसान तरीका है, अपने मन पर नियंत्रण करें। उन्हें रोकें।





प्रतिष्ठित परस्कार 'टर्नर प्राइज' जीतने के बावजूद जेसी डार्लिंग को लगता है कि क्य

### कला की दुनिया से निराश एक कलाकार

कुछ वर्ष पहले जब अग्रेज कलाकार जेसी डालिंग एक दुकान में सब्जी खरीदने गए, तो दुकान में प्लास्टिक में लिपटी सब्जियों को देखकर उन्हें अलग तहक की अनुभृति हुई। उन्हें सब्जियों के खोत में पैदा होने से लेकर उपभोजताओं तक पहुंचने की पूरी प्रक्रिया को जानने की तीव दुका हुई। पिछले वर्ष एक खीडियों पीटक करते हुए उन्होंने कहा, 'यह

जानन को तार्व इच्छा हुई। एछल वर्ष एक वा एहसास कितना अनुस्त्र था! मुझे इस बात का गहरा एहसास हुआ कि वह कितना नाजुक, अनिएनत और अमूर्त था। इत्रिलेंग मुहितोंगें एवं इपर-उपर पाई गई बस्तुओं में हैरफेर कर नया आकार देने वाले कलाकार हैं। हाल में हिए एक इंटरब्यू में उन्होंने कहा था कि वह 'राष्ट-राज्य, पंजीवादी उन्हान कहा था कि वह राष्ट्र-राज्य, पुणाबाद रात्रं, आधुकितको की संरचना तथा नस्त और लिंग' की 'परी कथा' को सक्के सामने लाना चाहते हैं। जैसे जब कोई अहुरण होने का लाबादा पाने हो और कोई उस पर पेंट या पाउडर डाल दिया जाए, तो वह अचानक सामने आ जाता है। डालिंग को उम्मर्गिह है कि

वह अपने दर्शकों को हकीकत बताएंगे। अपने इसी दृष्टिकोण की वजह से डालिंग ने पिछले माल समकालीन कला के लिए ने पिछले साल समकालीन कला के लिए प्रतिष्ठित ब्रिटिश प्रस्कार 'टर्नर प्राइज' जीता, जिस स्टीव मैक्सीन और अनीश कपूर जैसे दिग्गज हासिल कर चुके हैं 'टर्नर प्राइज' देने वाली जूरी के सदस्य मार्टिन क्लार्क का कहना है कि डालिंग के काम ने वैश्विक पूर्जीवाद

'टर्नर प्राइज' देने वाले क्लार्क का कहना है कि डार्लिंग के काम ने

थॉमस रोजर

डार्लिंग स्कलपचर एवं इधर-उधर

ाने वाले कलाकार

पाई गई वस्तुओं में हेरफेर कर

हैं। उन्हें उम्मीट है कि वह अपने

त्यकों को इकीकत बनायी

है कि जालिंग के काम ने वेशिलक पुंजीवार और नियममी तंत्र को सामक की 'कृषित प्रध्यात और प्रध्यवहता' को दर्शाय है। बहुँ स्थापवारी में डालिंग के ट्रांट यो को ब्रीलाट के बाद ब्रिट्टों ने श्रीड ऑफ क्रीड स्थापवार की पुणित स्थापता और स्थापता की इस्ति के ट्रांट यो को ब्रीलाट के बाद ब्रिट्टों ने श्रीड ऑफ की स्थापता रिग्राट के रूप में ब्रिजिंग के ट्रांट यो को ब्रीलाट के ब्राट ब्रिट्टों ने श्रीड ऑफ की स्थापता रिग्राट के रूप में ब्रिजिंग के ट्रांट यो को ब्रिजिंग रिग्राट के रूप में ब्रिजिंग के ट्रांट यो को ब्रिजिंग राज्य के स्थापता प्रस्ता मांच्या का रिग्रा था। जान की 'अस्पतार्क्षण वर्षा 'से दिव्हा रूप जात है। प्राचा में इस्ताह युद्ध के मदूरेनजर कला जान की 'अस्पतार्क्षण वर्षा 'से दिव्हा रूप आता में इस्ताह युद्ध के मदूरेनजर कला जान की 'अस्पतार्क्षण वर्षा या सामक करा को प्रति कन्मकी प्रविद्धात तरह खड़ा रही थी। उन्होंने कहा, यह समस्या करता को नहीं, बल्क प्रति होते कहा, वर्षा सामका आतंद से सकते थे। त्यीक्त ट्रांट स्थापता की इती चर्चा के बाद ऐसा बरलाव करता अत्रीव था। बढ़ अवस्थाहें दुनिवंदिरिंग एसंसीएस ऑफस्त का पर प्राच्य करते, तो कुछ अलग करने को क्षांत्रिक करेंग। उन्होंने कहा, 'में नहीं चाहता कि सीखन की प्रक्रिय में मुंबों को प्रविद्धात तरी हो उन्हों नहता ब्राजीवन कर प्रस्ता का वर्षाक सुत्र ओ स्थान कुछ जला नाटा का नाहिए करना सार्वजनिक प्रदर्शन हो। क्योंकि मुझे अभी तक नहीं पता कि मैं क्या बनने वाला हूं। ©The New York Times 2024



वित्त वर्ष की तलना में इस वित्त वर्ष की पहली



केंद्र सरकार द्वारा टैक्स में राहत देने से इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहनों की बिक्री पिछले

अणिमांडव्य ऋषि ने यमराज से कहा कि मैंने जब पाप किया, उस वक्त मुझे अच्छे-बुरे का बोध नहीं था। मैं तुम्हें मृत्युलोक में जन्म लेने का शाप देता हूं।

### ऋषि के शाप से यमराज बने विदुर

मांडच्य ऋषि मौन होकर तपस्या करते थे। वह कितना भी कष्ट हो जाए बोलते नहीं थे। एक बार राजा के महल में चोरी हो गई। चोरों को पकड़ने के

में चोरी हो गई। चोरी को पकड़ने के रिल्प सिंग्ड कंग्लन को ओर आए। चोर माइल्य कृषि के आश्रम में छिपे थे। सिंग्ड को ने उन्हें पकड़ रिप्पा और समझा कि कृषि बनेकर तपस्या कर रहा यह व्यक्ति चोरों से मिला हुआ है। चोरों के समझा कि कृषि को ले गए, तो राजा में सभी को शुली पर चढ़ाने का आदेश दिया। शुली पर चढ़ाने का आदेश किया। शुली पर चढ़ाने को आदेश राजा में सभी को शुली पर चढ़ाने का आदेश दिया। शुली पर चढ़ाने से चोरों के मी कहा गई, लेकिन ऋषि अपनी तपस्या में लीन रहे। राजा ने घवराकर फंटा खुलवाया और ऋषि से समझी मों, लेकिन उन्हें री समू पेंड मों, लेकिन उन्हें री समू पेंड मां, लेकिन उन्हें से समू राजा ने एक नोक (अणि) ऋषि को चुभ गई। इसी से उनका नाम

अणिमांडव्य पड़ा। यह नोक ऋषि के शरीर से निकली नहीं। वह कष्ट सहते हुए तपस्या करते रहे। अंत में, उन्होंने जब शरीर छोड़ा, तो

अंत में, उन्होंने जब गरीए छोड़ा, तो वह यमराज के पास एहंचे। उन्होंने यमराज में प्रश्न किया कि मुझे हम नोक यमराज में प्रश्न किया कि मुझे हम नोक की बजह से जो कप्ट हुआ है, वह किस पाय की बजह से हुआ। यमराज ने बताया कि आपने बचपन में एक की है को बिना हुए कप्ट का ही फ्ल है कि आपको इतना कप्ट मंगना पड़ा। अपने ने कहा कि उस बबन मुझे अच्छे-सुरं का कोई बोध नहीं था। आपका यह कैसा न्याथ? उन्होंने यमराज को शाध दिया हुमसरा मुख्लीक में जन्म होगा। उसी के प्रभाव तुम्हारा मृत्युलोक में जन्म होगा। उसी के प्रभाव से यमराज ने विदुर के रूप में जन्म लिया।



### अभर उजाला

#### पंत ने किया कांग्रेस के सभी गुटों को मिलाने का प्रयत्न

तिजी ने आगरा में कांग्रंस के सब ख़्तों की मिलाने का प्रयत्न किया मर्शक्तीय व्यक्तियों के पहुँको से राजां करी

अभ्यतिक को व तीवनाची स्व विकासकार्थ का प्रश्न प्रमाण आप, जिल कुमा का वेशित की तुन कार का क्षान किए की तुन कार्य का वर्षाक कर का व्यास्था अपने के इक वर्ष अध्या था।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री गोविंदवल्लभ पंत ने आगरा में कांग्रेस के अगरा म काग्रस क सभी गुटों को मिलाने के उद्देश्य से बैठक की। बैठक को गुप्त रखा गया था, इसके बावजूद इसमें वे लोग भी पहुंच गए, जिन्हें बुलाया नही

### आबादी को बोझ न मानें



छले कुछ वर्षों में हर ओर आईवीएफ या आम भाषा में टेस्ट ट्यूब बेबी की छोटे-बड़े

शहरों में हो रही वृद्धि, घटती प्रजनन दर, ॥ विशेष तौर पर व्यावसायिक शिक्षा में दक्ष संतानोत्पत्ति के प्रति निरंतर बढ़ती अरुचि

भविष्य के लिए शुभ संकेत नहीं है। मोटे अनुमान के अनुसार, दस वर्ष के भीतर भारत में आईवीएफ उद्योग लगभग पांच गुना वृद्धि के साथ 370 करोड़ डॉलर के

बराबर हो जाएगा, जो 2020 में 80 करोड़ डॉलर से भी कम था। इन तथ्यों से यह निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए कि प्रजनन क्षमता में कमी आ रही है, बल्कि इसकी पृष्ठभूमि में संतानोत्पत्ति के प्रति बढ़ती अरुचि

है। कॅरिअर के कारण बच्चे पैदा करना अभिजात्य वर्ग

की प्राथमिकता में लगभग अंतिम छोर पर पहुंच गया है। इस प्रकार एक नए समाज की संरचना हो रही है। इस वर्ष संयुक्त राष्ट्र ने विश्व जनसंख्या दिवस के अवसर पर उपेक्षित एवं वींचत वर्ग संबंधी गणना तथा

संतुलन समय की आवश्यकता है। आबादी का गुणावगुण के आधार पर विश्लेषण हो, न कि महज जनसंख्या को बोझ मानकर।

विवेक एस अग्रवाल

जनसंख्या दिवस



आंकडों के वैज्ञानिक संग्रहण को अपना लक्ष्य बनाय है। यह चौंकाने वाला है, क्योंकि विगत 30 वर्षों से 11 नाई (विश्व जनसंख्या दिवस) को जनसंख्या संबंधी हे-बड़े आयोजनों में नए विषयों के प्रति संकल्प लिए जाते रहे हैं। इनमें वंचित वर्ग उपेक्षित ही रह जाता था

लेकिन अब संयुक्त राष्ट्र को उसका ख्याल आया है। इसके पीछे वर्तमान संदर्भ और भविष्य की जनसंख्य संबंधी कुछ अनुमान हैं। उपलब्ध अनुमानों के अनुसार, अगले पच्चीस वर्षों में दुनिया के मात्र एक

तिहाई देशों ( 204 में से 49 देशों ) में ही पर्याप्त प्रजन दर रहेगी, जो इस शताब्दी के अंत तक मात्र तीन प्रतिशत यानी 204 में से छह राष्ट्रों तक सिमट कर रह जाएगी। अनुमान के अनुसार, आबादी में वृद्धि मुख्यत अफ़्रीकी देशों में होगी। माना जाता है कि शताब्दी है अंत तक आधी आबादी अफ्रीकी राष्ट्रों में पैदा होगी।

इसके साथ ही प्रजनन की प्रवृत्ति मूलतः निम्न मध्यवर्ग तक सीमित रह जाएगी, जिससे भविष्य में व्यापक वर्गभेद होने की आशंका है, क्योंकि आवादी में निम्न आय वर्ग की संतानों की बहुतायत होने तथा उच्च वर्ग में संतानोत्पत्ति से बेरुखी होने के कारण उपलब्ध संसाधनों पर धीरे-धीरे नियंत्रण बदल जाएगा, जो अभिजात्य वर्ग को मंजर नहीं हो सकता है। विडंबना आभजात्य वंग का मंजूर नहीं हो संकता है। विडबनी यह होगी कि सामर्थ्यवान के पास संतान नहीं और संतान वाले के पास संसाधन नहीं। आशंका यह भी है कि प्रजनन के अभाव में अनेकानेक विकसित राष्ट्रों में अप्रवासी और शरणार्थी भारी संख्या में प्रवेश करेंगे।

जनसंख्या असंतुलन का एक विशिष्ट उदाहरण है दक्षिण कोरिया और नाइजीरिया की वर्तमान स्थिति। पिछले कुछ वर्षों में जहां दक्षिणी कोरिया में ऋणात्मक प्रजनन दर रही है, वहीं नाइजीरिया में प्रजनन दर लगभग प्रति महिला सात बच्चों की पाई गई है। ऐसे में संसाधनों का पुनः बंटवारा होना लाजिमी है। कोरिया की महिलाएं अपने व्यावसायिक जीवन की उन्नति और बच्चों के लालन-पालन की बढ़ती लागत के कारण संतान देर से या नहीं पैदा करती हैं। इस ऋणात्मक

वृद्धि के कारण सृष्टि पर कई विषम प्रभाव भी पड़ेंगे। सामान्य तौर पर तो आबादी की कमी से सहज एवं सुगम जीवन की प्रत्याशा रहती है, किंतु इस कमी के सुगम जावन का प्रत्याश (देता है, कितू इस कमा क कराण किंचित महत्वपूर्ण ज्वयत्वार तथा कृषे अत्यिषक प्रमावित होंगे, जिससे खाद्य सुखा, पर्यादरण आदि पर असर पड़ेगा। कम आवादों से लोगों का व्यावसायिक रहान श्रम विहीन, तकनीकी कौशल, शोध आदि की और होगा। आशंका है कि घटती आवादी मुराजनीतिक सुखा संबंधी चुनीतियां को भी जन्म रेता। इसी कारण 1994 में जानसंख्या लेटि को अस्त स्वीत इसी कारण 1994 में जानसंख्या वृद्धि को 2.1 बच्चे प्रति महिला तक सीमित करने का लक्ष्य तय किया गया था, ताकि संतुलन कायम हो सके। वर्तमान परिदृश्य भविष्य में असंतुलन की आशंका को दर्शाता है।

आशको को दशाता है। भारत में भी जनसंख्या स्थिरीकरण एक गंभीर चुनौती है। औसत आयु में वृद्धि, बेहतर चिकित्सा सुविधाओं, संसाधनों की उपलब्धता के चलते अगले कुछ वर्षों में संख्यात्मक वृद्धि तो दिखेगी, किंतु वास्तविक रूप में प्रजनन दर निरंतर घटती जा रही है। आशंका है कि शताब्दी के अंत तक प्रजनन दर मात्र एक बच्चा प्रति महिला तक सीमित हो जाएगी। अतः आवश्यक है कि आबादी का गुणावगुण के आधार पर विश्लेषण हो न कि महज जनसंख्या को बोझ मानकर। संतुलन समय की आवश्यकता है, तो प्राकृतिक रूप से संतानोत्पत्ति को कायम रखना भविष्य की आवश्यकता।



विचार

सुख में संयम और दुख में धैर्य धारण करना ही श्रेयस्कर है

### सुप्रीम कोर्ट का बड़ा फैसला

सुप्रीम कोर्ट का यह आदेश व्यापक प्रभाव वाला है कि तलाकशुदा सुधान कर का यह आदार व्यापक प्रभाव वाला है। का त्यांकाशुर्व मुस्तिम महिलाई भी पति से स्पर्प गया मी नुवानी पत्ता पत्ता पत्ते को अधिकारी हैं। यह इसलिए एक बड़ा और बेहद महत्वपूर्ण निर्णय है, क्वॉबिन इसके माध्यम से सुप्रीम कोर्ट ने राजीव गांधी सरकार को ओर से उठाए गए एक मतान करना का प्रतिवाद करने के साथ ही मुस्लिम महिलाओं को न्याय देने का काम किया है। एक तरह से इस निर्णय के जरिये सुप्रीम कोर्ट ने यही रेखोंकित किया कि बहुचर्चित शाहबानो मामले में उसकी ओर से दिया गया फैसला सर्वथा उचित एवं संविधानसम्मत था और राजीव गांधी सरकार ने उसे पलट कर सही नहीं किया था। ज्ञात हो कि शाहबानो पर सुप्रीम कोर्ट का 1985 का फैसला भी गुजारा भत्ता से संबंधित था, लेकिन मुस्लिम तुष्टीकरण की राजनीति के चलते राजीव गांधी सरकार ने इस फैसले को पलट दिया था और 1986 में कट्टरपंथी मुस्लिम संगठनों के दबाव में आकर उनके मन मुताबिक और शरिया के अनुकल मुस्लिम महिला अधिनियम बनाया था। इस अधिनियम का एकमात्र उद्देश्य मुस्लिम महिलाओं के अधिकारों का हतन करना था। अब सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट किया कि यह अधिनियम किसी पंथनिरपेक्ष कानून पर हावी नहीं होगा और तलाकशुदा मुस्लिम महिलाएं गुजारा भत्ता के लिए दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 125 के

हत याचिका दायर कर सकती हैं। तलाकशुदा मुस्लिम महिलाओं के भरण-पोषण पर सुप्रीम कोर्ट ाराजनुष्य नुस्तिन मारुराजन में प्राचनान्य पर सुवान कट का फैसला केवल वहीं नहीं कह रहा कि अलग-अलग समुदाव की महिलाओं को भिन्न-भिन्न कानूनों से संचालित नहीं किया जा सकता, बल्कि समान नागरिक संहिता को आवस्यकता भी जता रहा है। इसी के साथ यह भी संदेश दे रहा है कि देश के लोग संविधान से चलेंगे, न कि अपने पर्सनल कानूनों से, वे चाहे जिस पंथ-मजहब के हों। यह अपेक्षा अनुचित नहीं कि विपक्षी दलों के वे नेत सप्रीम कोर्ट के इस फैसले की प्रशंसा करने के लिए आगे आएं. जो पिछले कुछ समय से संसद के भीतर-बाहर संविधान की प्रतियां लहराकर यह दावा करने में लगे हुए हैं कि उन्होंने उसकी रक्षा की है और वे उसे बचाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। यदि संविधान के प्रति उनकी प्रतिबद्धता सच्ची है तो उन्हें इस फैसले का स्वागत करना ही चाहिए। इसकी भरी-पूरी आशंका है कि इस फैसले से कुछ मुस्लिम संगठन असहमति जताने के साथ उसे सुप्रीम कोर्ट में चुनौती भी दें। पता नहीं वे क्या करेंगे, लेकिन राहत की बात यह है कि इस समय केंद्र में मोदी सरकार है, न कि तथाकथित सेक्युलरिज्म की दुहाई देने वाली कोई सरकार। यह सही समय है कि मोदी सरकार समान नागरिक संहिता लागू करने के अपने वादे को पूरा करने की दिशा में आगे बढ़े। इसका कोई औचित्य नहीं कि देश में अलग-अलग समुदायों के लिए तलाक, गुजारा भत्ता, उत्तराधिकार, गोद लेने आदि के नियम-कानून इस आधार पर हों कि उनका उनका पंथ-मजहब

### पौधारोपण में जनभागीदारी

अपने आवास में एक पौधा लगाकर विहार के मुख्यमंत्री नौतीश कुमार ने राज्यस्तरीय वन महोत्सव की शुरुआत की। उन्होंने अपील की है कि हर व्यक्ति इस अभियान में शामिल हो, अपने आसपास का है। कि हर व्यावत इस आभयान में शामिल हा, अपने आसपार पींचा लगाए। राज्य के हर व्यवित और संस्था को इस पवित्र कार्य में शामिल होना चाहिए। और हां, पींचा लगाकर भूल नहीं जाना है। संकल्प यह भी हो कि हम उस पींचे की सेवा वृक्ष बनने तक करें। परिवार के सदस्य की तरह हम उसकी देखरेख करें। राज्य सरकार का यह बृहत आयोजन है। प्रत्येक जिले में बड़े पैमाने पर पौधे लगाए जाएंगे। सरकारी तंत्र तो अपनी जिम्मेदारी का निवंहन पांच दागाए जाएंगा सरकार तत्र ता अनेना आन्मदार का गानवल कर रहा है, लिंक इसका क्रियान्वल तभी बेहतर दंश से फलीभूत होगा, जब हम सब इसमें अपनी भागीदारी सुनिश्चित करेंगे। हर साल लाखों पींचों लगाए जाते हैं, लेकिन उनमें से काफो कम वृद्ध कन पाते हैं। यह इसलिए कि इसमें तनभागीदारी के कमी है। अगर हर व्यक्ति अपने इदें-गिर्द लगूने बलूं पींचे को गोद ले ले, उसको रक्षा करे तो कोई कारण नहीं कि पौधे सूख जाएं। बस, हमें उद्देशन रहता कर ता क्याड़ करण नहा कि पाय सूख जाए। बस्त, हम संकटप को डूं इस मता होगा। यह कता को उस्तरत मी हो क्याँ के लगातार कटने का नतीजा है कि ताममान साल दर साल बढ़ता जा रहा है। प्रहत तभी मिल सरकती है जब करोड़ बढ़ें। अभी बिहार मैं महज सात प्रहितात कम क्षेत्र है, जबकि राष्ट्रीय औमा बिहार मैं महज सात प्रहितात कम क्षेत्र है, जबकि राष्ट्रीय औमा करोड़ करोब 25 प्रतिशत का है। साल दर साल बुहत पैमाने पर पौधारोपण अभियान चलाकर ही इस अंतर को पाटा जा सकता है। वैसे तो हर खाली जमीन पर पौधारोपण किया जाना उपयुक्त है, लेकिन तालाबों एवं नदियों के किनारे यह और भी मुफीद है। यहां पौधों को फलने-फूलने का तो उचित माह्रील मिलेगा ही, तालाब और नदियों को भी इससे लाभ होगा। और सबसे महत्वपूर्ण बात. पौधे ऐसे लगाए जाएं जो या तो फलदार हों या प्रचुर मात्रा में आक्सीजन देने वाले।

## चीन के साथ अमेरिका से भी सतर्क रहे भारत



दिव्य कमार सोती यदि चीन प्रत्यक्ष रूपमें हमलावर है तो अमेरिका भी विश्वास करने लायक मित्रनहीं दिखता

ह दिखा रहा है कि भारतीय प्रधानमंत्री की रूस यात्रा पश्चिमी देशों को रस नहीं आई, लेकिन भारत के लिए पश्चिम और खासक अमेरिका और उसके सहयोगी देशों पर आंख मूंटकर भरोसा न करने के पर्याप्त कारण है। अमेरिका अपने हितों की खातिर चीन के खिलाफ भारत का इस्तेमाल तो करना चाहता है, पर भारत के हितों की रक्षा करने के लिए तैयार नहीं दिखता। रही थीं। पैलोसी ने अपने भाषण में चीन के राष्ट्रपति शी चिनाफिंग के विरोध में भारत की धरती से सखा शब्दों का प्रयोग किया, पर उन्होंने भारत के प्रति चीन के ाक्या, ५२ उन्होन भारत के आज चान के आक्रामक रवैये पर कुछ खास नहीं कहा। अमेरिका इस समय चीन के साथ प्रभुत्व के संघर्ष में उलझा हुआ है तो पैलोसो की बातें हैरान करने वाली नहीं हैं। यहां भारत

का बदला हुआ रुख उल्लेखनीय है। वर्ष 1993 के सीमा शांति समझौते

और फिर 2013 तक चीन के साथ मधुर व्यापारिक संबंधों के दौर में नई दिल्ली में बैटी सरकारों ने चीन को नाराज न करने बड़ा सरकारा न चान का नाराज न करने के उद्देश्य से दलाई लामा से दूरी बनाने की नीति अपना रखी थी। भारत में सरकारों के शिथिल रवैये का लाभ उठाकर चीन हमारे तमाम हिस्सों पर अपना दावा करने का दुस्साहस दिखाने लगा। 2020 में जब गलबन घाटी में पानी सिर से ऊपर गुजरने लगा तब भारत ने चीन को उसकी भाषा में लगा तब भारत ने पान का उसका भाषा में ही जवाब देना शुरू किया। उसके बाद से दोनों देशों के बीच सैन्य तनाव रह-रहकर सिर उठाता रहा है। चीन अपनी हरकतीं से बाज आने को तैयार नहीं दिखता। अब बह पाकिस्तान से 1963 में अवैध रूप से हास्तिल की गई शक्सगम घाटी में एक नई सड़क बना रहा है। यह पाकिस्तान के साथ मिलकर सियाचिन और काराकोरम क्षेत्र में भारत को तीन ओर से घेरने का प्रयस हो सकता है, लेकिन इसे सिर्फ धारत चीन संबंधों के सीमित संदर्भ में नहीं देखा जा सकता। चीन की और से ताइवान पर भी हमले का खतरा निरंतर मंडरा रहा है।

हमले का खातरा निरंतर मंडरा रहा है। वैश्विकक भूराजनीतिक परिस्थाती को देखें तो अमेरिकी लिबरल खेमे की शह पर यूक्रेन जिस प्रकार रूस के विरुद्ध टा हुआ है, उससे पशिया को लेकर अमेरिकी समीकरण बिगड़ गए हैं। इस युद्ध के चलते पश्चिमी प्रतिबंधों के कारण रूस



चीन पर अत्यधिक निर्भर होता जा रहा चान पर अत्यधक । नभर होता जो रहा है। बीते दिनों पुतिन ने उत्तर कोरिया का दौरा भी किया। ईंग्रन भी अब रूस-चीन के खोमे में ही हैं। एक और इजगयल और दूसरी और यूक्रेन के सामरिक मोर्चे पर फंसे अमेरिका को अब ताइवान की सुरक्षा फेसे अमेरिका को अब ताइबान को सुरक्षा की लोकर भी रखान परमूर हो रहा हैं। उपक और अपनानिस्तान के लेके खिटी युढ़ों में गांधी नुकसान ठठा चुका अमेरिका संभवतत ताइबान को सुरक्षा के लिए अप-संभक्तों का खुन नहीं बखन चाहता। चिंता को बात यह भी है कि ताझुकान स्ट्रेट ताख उदिका चीन सगर में चीनी नीसेना को रक्षिण चीन सगर में चीनी नीसेना को रक्षिण चीन सगर में चीनी नीसेना को लेकर चीनी और अमेरिका नीसेना से जेकर चीनी और अमेरिका नीसेना से की अमेरिका नीसेना को भारी श्रीत उठानों पड़ सकती है। जब महत्वन में भारत ने चीन को करा जबाब टिखा गी पिक्रममें मीडिका ने उसकी

जब दिया तो पश्चिमी मीडिया ने उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की थी। उसने कहा था कि पूरे एशिया में भारत ही एकमात्र ऐसा देश दिखाई पड़ता है, जो चीन का रास्ता रोक सकता है। ऐसे में चीन के साथ शक्ति संतुलन और सीधी सैन्य झड़प की स्थिति में अमेरिका के लिए भारत का का स्थित में अभारका के लिए मारत का महत्व बहुत अधिक है। इसके बावजूद अमेरिकी नीतिकार विशेषकर उसका लिबरल खेमा दुविधा में दिखता है। एक और जहां वह भारत के बल पर चीन की जार पेह नह सार्थिक बेट र प्राप्त के प्राप्ति को संतुर्तित करना चाहता है, वहीं दूसरीं और आवश्यकता पड़ने पर भारत के कंघे पर रखकर बंदूक भी चलाना चाहता है। रूस के साथ भारत के संबंध उसे खटकते हैं। वह अपनी समस्या को भारत खाउका हो जह अनेना स्वस्था यह गाँधी की समस्य बनाना चाहता है। असल में, चीन को रोकने के मुख्य लक्ष्य पर ध्यान देने की जगह शीत युद्ध वाली मानस्किता के साथ अमेरिकी नीतिकार रूस से परोक्ष क साथ अभारका नातकार रूस स पराक्ष युद्ध में उलझे हैं और इस पूरी स्थिति का लाभ चीन उठा रहा है। पीएम मोदी की हालिया रूस यात्रा से

पहले अमेरिकी राजदूत यह कहते सुनाई पड़े कि प्रतिबंधों के बावजूद रूस के साथ व्यापार कर रहीं भारतीय कंपनियाँ पर अमेरिकी कार्रवाई की गाज गिर सकती है। अमेरिका भारत की सुरक्षा चिंताओं को भी अनदेखा कर रहा है। अमेरिका और उसके भणिपुर से लेकर स्थामार तक फैली अस्थिरता में अमेरिकी एजेंसियों की संदिग्ध भूमिका अब जाहिर हो चुकी है। बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना तो बार्शित को अभिरक्ष इस्तान प्रमुख्य हरिसान पा यहाँ तक कह चुकी हैं कि अमेरिका इस क्षेत्र में एक इंसाई राष्ट्र बनाना चाहता है ताकि चीन के विरुद्ध उसका अपना एक बेस तैयार हो सके। ऐसे में, अमेरिका को बस तथार हा सका एस में, अमारका का यह निर्मय करना होगा कि यदि उसे चीन के विरुद्ध भारत की मदद चाहिए तो वह भारत के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करना बंद करें। हालांकि डेमोक्रेटिक पार्टी के शास्नकाल में यह कठिन लगता पादा क शास्त्र-काल में यह काउन लगा। है। बास्तव में यदि चीन प्रत्यक्ष रूप में हमलावर है तो अमेरिका भी विश्वस करने लायक मित्र नहीं दिखता। इसलिए यह भारतीय विदेश नीति की कठिन परीक्षा का समय है। भारत को चीन के साथ अमेरिका से भी सतर्क रहना होगा। (लेखक काउँसिल आफ स्ट्रैटेजिक

अफेयसं से संबद्ध समस्कि विश्लेषक हैं। response@jagran.com

# राहुल की नजर में अयोध्या आंदोलन

अयोध्या आंदोलन

क्या हुल गंथी हुए हाल में लोकसभा के अंदर और बाहर दिए जा रहे कुछ बक्ताओं के ग्रहराई से क्विट्लेश्य करने की आवश्यकता है। लोकसभा में उन्होंने भावणा पर हमला करते हुए हिंदू शब्द की अपने अनुसार व्याख्या की तो गुजरात के राजबेट में कहा कि आह्वाणों जी ने जो अयोध्या आतीलन आरंभ बित्या, उसे हमने बने बिनकों मोर्चे आह्मराइंग्डिआहए ने हरा दिया लोकसभा में उन्हों कहा हम जो का स्वस्त के दिवस करे हैं 

और मोदों के प्रति हमलावर वक्तव्यों से काँग्रेस को चुनाव में लाभ मिला है, इसलिए आगे और हमलावर बनना है। राजनीति में विशेषियों की विचारधारा को नकारकर अपनी विचारधारा स्थापित

विचारपार को नक्सकर अपनी विचारपार स्थापित करने को कोशिश असामान्य नहीं हैं, किंतु यह विश्वय केवल सामान्य राजनीतिक विचारपार का नहीं हैं। हिंदु, हिंदुल और राम जन्मधूमि ऑडोलन न दलीय राजनीति का विचार है और ने काल पाजपा का नमां की पाजनीत केवल पाजपा का नमां की पराजाय उस्तीय अपने पाजना उस्तीय अपने पाजना उस्तीय की पाजना उस्तीय की पाजना के पराजाय असोध्या ऑडोलन की पराजय है? यह डॉक है कि रामला की प्राण प्रतिक्षत के बाद अगर पाजपा का उस्मीदिकार फैजाबाद से पराजीत हुआ जी निश्चित करने से अनेक प्रस्त पीत हों जी निश्चित करने से अनेक प्रस्त पीत हों जी निश्चित करने महत्व का ज्ञान और असके महत्व का ज्ञान और अससे महत्व का ज्ञान और अससे महत्व का ज्ञान और अससोस महत्व है वि पित वे राजनीतिक लाघ के लिए इसे अन्वैत हों है जिन अपीधा सीमित करने की राजनीतिक पाज है हैं। न अपीधा लाभ के लिए इसे अर्खन छोटा और भाजपा तक संभित करने की राजनीत अपन रहें हैं। न अस्पेश्य आंदोलन लालकृष्ण आडवाणों ने आरंभ किया और न हाँ उनके बैठ जाने से पर समागत हुआ। उट्यतम न्याबलाय के फिसले से भी यह सम्पर्ट हैं कि यह आंदोलन अंग्रेजों के समय और उसके पहले भी धा तथा आजार्य के बाद न्यायिक संहित कई स्तरों पर जाएँ रहा। भाजपान ने केवल चार तर किया था कि इस आंदोलन को धार देने के लिए हमें प्रमुख



अभी खत्म नहीं हुआ अयोध्या आंदोलन।

कार्यक्रमों में इसे शामिल करना चाहिए और इसी कारण सोमनाथ से अयोध्या तक आडवाणी की रथ करण सामान्य स अवका (कि काड़िया) के स्वयंत्र यात्रा निश्चित हुई। आहवाणी ने 6 दिसंबर, 1992 को अयोष्ट्या ढांचे के विष्ठांस के बाद एक लेख में इसे जीवन का सबसे दुखद दिन कहा था। उसके बाद वह आंदोलन में सिक्रय नहीं दिखे। क्या इससे मंदिर निर्माण आंदोलन स्वतम हो गया था?

मादर ानमाण आदालन खत्म हा गया था? इस समय विपक्ष की रणनीति अयोध्या पर पाजपा के विचार और व्यवहार को परस्त सिद्ध करने की है। फैजाबाद से सपा सांसद अवधेश प्रसाद को लोकसभा में आगे बैठाकर विपक्ष भाजपा के अंदर सतित पराजय का भाव स्थापित करने के साथ आम लोगों के जेहन में भी इसे बनाए रखने की रणनीति अपना रहा है। भारतीय लोकतंत्र की समस्या यह है कि दुलीय और वोट की राजनीति की दुष्टि से ह कि दुशाय और बाट का राजनाति का छूट स राजनीतिक दल कई बार इतने नीचे स्तर तक उतरते हैं कि हम उसकी कल्पना नहीं कर सकते। अयोध्या आंदोलन केवल एक मंदिर निर्माण का आंदोलन अग्रजान कथल एक मादर ानमाण का आदीला नहीं आ यह भारत सित मुंगूण हिंदू समाज के संस्कृतिक रूप से फिर से जाग्रत करने, प्रखर करने और उसके मान्सिक निर्माण का आदीलान आ इसका असर मी हुआ। यह प्रक्रिया आप पूर्व नहीं हुई है। बावजूद इसके हम यह देख सकते हैं कि

पिछले कुछ वर्षों में संपूर्ण विश्व का हिंदू अपने धर्म, सम्प्रता-संब्कृति, आचार-विचार को लेकर पहले से ज्यादा मुखर और आवरक्वता पड़ने पर आक्रामक हुआ हैं। इसका असर भारत के साथ उन सारे देशों में हैं, जहाँ-नाई हिंदुओं को टीक-टाक संख्य है। संकोण राजनीतिक कारणों से विदेशियों की कोशिश हैं कि हिंदुओं के अंदर किसो तरह होना ग्रेंथि पैदा की जाए। अंदेजों ने इतिहास, समानशास्त्र तथा सम्प्रदा से जावकारों में में दिन साम के संदर्श होनी से प्रदान होने जोड़ी जिल्ला की किया के अंदर यही हीन ग्रींथ पैदा की, जो अभी तक पूरी तरह खत्म नहीं हुई है। इस समय भारत अंतरराष्ट्रीय फलक पर भी अपना स्वाभाविक चरित्र थीड़ा–थीड़ा दिखाने लगा है अपना स्थामावक चारण बाड़ा न्याड़ा दिखान तथा। है तो इससे ट्रीनम की अनेक राशितयों की परेशानी हुई है। दूसरी और कांग्रेस सहित अनेक दलों को चुनावी राजनीत में बैसे हाशिये पर जाना पड़ा, जिसकी ठन्होंने करूपना नहीं की थी। इसलिए संसद में कही गई राहुल की बात य अयोध्या आंदोलन के हराने 

ही हैं। बच्च फैजाबाद लोकस्पा क्षेत्र में फाजपा के उपायंदावर की करीं 55 sont रात्र में पे पात्रवाय को पूरे आंदोलन को पात्रवाय मान लिख जाए? यह भी ध्यन रहे तो बेहतर कि मंदिर निर्माण आंदोलन अवीच्या तक संमित आंदोलन नहीं था। यह संस्कृण भारत और विश्व पर के हिंदुओं का आंदोलन बां। यह स्वय है कि हिंदुओं का सम्बंधिय भाजपा को अवीच्या के कारण बहुना आरंभ हुआ, मागर है दिस्मेर 1992 के बार लिखे समय का माजपा द्वारा इस्के पन्न में बहु आंदोलन नहीं किया गया। तब्य

इसके पक्ष में बड़ा आदालन नहीं किया गया। तथ्य यह भी है कि पूर्व में भी फैजाबाद से भाजपा प्रत्याशी पर्याजत होते रहे हैं। क्या यह कहा जा सकता है कि तब भी अयोध्या आदीलन पचस्त हो गया था? पुनान में कई कारकों से जीता और हार होती है। उसका किसी आंदोलन के समर्थन या विरोध के रूप

में मूल्यांकन अपने आप में वेषपूर्ण है। (लेखक राजनीतिक विश्लोषक हैं) response@jagran.com



#### लक्ष्य प्राप्ति

इस दुलंभ मानव जीवन को सार्थक बचाने के लिए किसी लोइर का होना आर्थेंग आक्ट्रपक है। लाइर ऐसा हो जो क्यापक मानविव दितों की पूर्ति पर केंद्रित हो। ऐसा लाइर हमें हर दिन प्रयास करने और सफलता की और एक-एक कदम बढ़ाने को प्रेणा देता है जा बहम अपने निमित्त लाइर के प्रति उत्साहित होते हैं जब हमाची उन्जी और क प्रात उत्साहत हात ह तब हमाच उजा आर दुद्दशंकरण हमें सफरता को ओर जो जो हैं। कई बार सफताता नहीं भी मिलती। इससे विचलित होने को आक्स्यकता नहीं। अमेरिको लेखक दोनी गुक्सिंग कहा है, 'लोग स्वामाविक क्या दोनी गुक्सिंग कहा है, 'लोग स्वामाविक स्व होते हैं जो उन्हें प्रेरित नहीं करते। यदि लोग अपने जीवन में प्रेरणादायक और अर्थपूर्ण लक्ष्य तय करें तो वे अधिक सक्रिय और प्रतिबद्ध हो सकते हैं।'

जरूरी है कि हम सकारत्मक सौच के साथ लक्ष्य का चयन करें। अपनी क्षमता पहचानें और लक्ष्य का चयन करा अपना क्षमता पहचान आर उसे पूर्ण करने के लिए बार-बार स्वयं को प्रेरित करें। लक्ष्य प्राप्ति से पहले तक सफलता दिखाईं नहीं देती। इसलिए सफल व्यक्तियों के जीवन से नहां दता। इसलए सम्भव व्यवस्था क आजन स प्रेरणा लेकर उनके समक्ष आने बाली कठिनाइयों से सीख लेना अत्यंत महत्वपूर्ण है। सफलता का मार्ग सीघा और सरल नहीं होता। हर सफल व्यक्ति ने अपने जीवन में कई कठिनाइयों और अस्फलताओं का सामन किया है, लेकिन उनके सफल होने का कारण है कि उन्होंने कभी हार

सफल शन का करण है का उन्होंन केशा हो? गूर्ते मानी नितंत्र प्रथास करते उठन एवं पूर्ण समर्पण हो लक्ष्य प्राप्ति की प्रसुख कुंजी है। हम यह समझना च्यहिए कि अमस्त्रता केवल एक पृथ्य है न कि और। अस्प्रस्ता हमें हमारी कीमयी और गर्वालियों से अवना कराती है और हमें सुपात का अवस्पर देती है। इसलिए अस्स्रताता से न इंडेर यह भी स्मरण रहे कि सफलता का वास्तविक अर्थ यह है कि हम अपने सपनों को साकार करें और जीवन में संतुष्टि प्राप्त करें।

## सैर–सपाटे में अनुशासन आवश्यक

बीते दिनों महाराष्ट्र के लोनावला में भुशी बोते दिनों महराणप्ट के लोनजला में भुशी बांध पर स्री-स्मादा करने पहुँचा एक पूर्व परिवार हुने के पानी में बन पुरे परिवार हुने पर स्थान के प्रति में तर के प्रति में बन पर स्थान के प्रति में तर के दिलाप के पर्यटन स्थलों पर ऐसे कई हादसे ही चुके हैं। हर वर्ष ही बरसत के मीसम में सेर सरावे के लिए मिकले लोगें हैं। इन हादसें का सबसे दुखद पक्ष यह है कि कभी सुरक्ष निममों को अनदेखें तो कभी सुरक्ष निममों के अनदेखें तो कभी सुरक्ष निममों को अनदेखें तो कभी सुरक्ष निममों की अनदेखें तो कभी सुरक्ष निममों की अनदेखें तो कभी सुरक्ष निममों की अनदेखें तो स्थान कि स्वार हिम्म करने कि स्थान कि सुरक्ष करने लोगे सुरक्ष निममों की निम्न स्थान करने लोगे सुरक्ष अपनी जान की कि बंस्सात के सुहाबन मासम में सर-सपाटा करते लोग स्वयं अपनी जान को जीखिम में डालने को गलती करते हैं, जबकि बांध, नदी, झरने आदि अधिकतर स्थल आबादी वाली जगहों से दूर होते हैं, जिसके चूलते समय पर बचाव दल् जिसके प्रति सिनेष पर बेपान देश पहुँचना भी कठिन होता है। इतना ही , ब्रास्शि में ऐसी जगहीं पर अचानक का बहाव तेज होने की भी आशंका रहती है। कहां और किस तरह से कोई

अक्सर लोग भारी बरसात के अलर्ट, दुर्घटना स्थल से जुड़ी चेतावनियों और पर्यटन स्थल पर सुरक्षा को लेकर जारी नियमावलीको नहींमानते

दुर्घटना हो जाए यह समझन कठिन होता है। कहीं चट्टान वाली जगह पर फिसलन की आशंका रहती है तो कहीं पानी की गहराई की जानकारी नहीं होती। अचानक तेज वर्षा होने पर कई स्थलों का पानी का बहाव रौद्र रूप ले लेता है। ध्यातव्य है कि अधिकतर मामलों में

ध्वतात्व्य है कि अधिकतर मामानों में लोग मार्ची बरसत के अज़र्ट, इंट्रोटमा स्थल से जुड़ी चेतावनियों और पर्यटन स्थल पर सुख्ता को लेकर जारी नियमावलों को मार्ने माना, कार्ची कर हो या नहीं नसूह जोक्किमपूर्ण विरसी में भी पहुंच जाते हैं, जबकि प्रशासनिक अमले हुए सम्बन्ध समय पर मानस्पत के मीराम में सैंस्-समार्ट के दौरान पहलीयात बराने की सलाह यो बार्ज हैं में मार्ची की सरकार के लाह यो जाती है। सैलानियों की सरक्षा के लिए ऐसे

स्थलों पर सुरक्षा से जुड़े दिशा-निर्देशों बाले बोर्ड लगाए जाते हैं। कई स्थलों को बाकायदा प्रतिबंधित स्थल घोषित किया बाकायय प्रतिबंधित स्थल प्रीक्षित किया जात है। बावजूद इसके अनदेखे-अजाजों पर्यटक स्थलीं पर भी न केवल सतर्कता की कभी देखने की मिराती है, बल्कि निमयों की भी अनदेखें की जाती है। हालिया क्यों में चर्चुअल दुनिया का दिख्खा भी पर्यटन स्थलीं पर होने बाले हारसे का काला चना है। आभार्स दुनिया में बिक्शेष देश से उपस्थिति दर्ज करवाने ने स्थाल की स्थलित कर्मा

के लिए रील-बीडियो, तस्बीरें खींचने और अजब-गजब करतब बाली गतिविधियों इन दुर्घटनाओं को न्योता दे रही हैं, जबकि इन्हीं तकनीकी सुविधाओं का इस्तेमाल मौसम की सही जानकारी लेने के लिए भारतम का सहा जानकार लग क लिए भी किया जा सकता है। दायिवबोध के इस मोर्चे पर लोगों को स्वयं ही चेतना होगा। इन दुर्घटनाओं पर आमजन की सजगता से ही लगाम लग सकती है। नियमों का पालन और सैर-सपाटे के समय भी अनुशासन का भाव ही जीवन सहेज सकता है।

(लेखिका स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

#### बुनियादी ढांचे की बेहतर हो गुणवत्ता

'कमीशनखोरी की कीमत चुकाता देश' शीर्षक से प्रकाशित आलेख में राजीव सचान ने देश की एक प्रभार सारस्य को रेखांकित किया है। इसमें कोई संरेह नहीं कि बाते कुछ वर्षों के दौरान देश में बाई संरेह दहीं के निर्माण में खासी तेजी आई है। केंद्र सरकार ने अपने पूंजीगत व्यय में भी अच्छी-खासी बढ़ोतरी वीय के ानमाण में आक्रा राजा अहु हो गढ़ राजा है ने अपने पूंजींगत क्या में भी अच्छी-क्यारी बढ़ीतरों कर यह संकेत दिया है कि बुनियदी डांचे का निर्माण उसकी प्राथमित के सह पर संकित दिया है कि बुनियदी डांचे का निर्माण उसकी प्राथमित के लिए प्रयासी में तेजी आई है, लेकिन इसके स्थाही जिस डांचे का निर्माण हो राजा है उसकी गुणवाता सुनिरियत करना भी उतना ही आक्ष्यक्र के हैं। यदि उसके मोनण होता रहेंगा और कुछ समस्य बाद वह परपाणी होने लगे तब फिर यह 'में दिन चले अडाई केमा बाल कहा को हो चिता के से स्थान करना भी स्थान स्थान करना भी स्थान स्थान करना भी स्थान स जाए। अगर हिमालय की चेटियों पर अटल टनल जैसे निर्माण से भारत को बैठिकक प्रतिष्ठा मिलती है तो राजधानी दिल्ली के व्यस्त हवाईअड्डे के एक हिस्से की छत गिरने से देश की जगहसाई भी होती है। हिस्से की छत गिरने स देश का जगठकार का छला छ . उसमें जान-माल का नुकसान पीड़ा भी पहुँचाता है। प्रिया पहिय, नीएडा

#### मेलबाक्स प्रशासनिक सुधार जरूरी

की जिम्मियरी के द्वारों को तो सरकारों ने प्रेस स्वा है, हर जीकरशाब को तो सरकारों के इश्रेर पर नाचना पड़ता है, अगर कोई नैकरशाब ईमानदारी को ग्रह पर चलना भी चाहता है तो उसे हर बकत अपनी नौकरी रखेने चा दियोगन को चिता सत्ताती हरती है। अगर सरकार नौकरशाहों को अपनी अंगुलियों पर नचना छोड़ दें और अपट नौकरशाहों पर नकेल कसनी शुरू कर दें तो देश में प्रण्याचार का अंत तो हो हो जाए साथ ही इमानदार नौकरशाहों के साथ कभी बेईमानी न हो पाप पर्यंत प्रेमा कीन स्था हो इसानदार नोकरशाहि क साथ कभा बुझाना - हो पाए, पार्चे प्रेसा होना अस्पेकन्स ला लगा हैं, क्योंकि अब हर किसी पर स्वार्थ हाजी हैं। यह भी सन्द हैं कि हमारे देश में सरकार्य विभागों के कर्मचारियों को किसी प्रकार का कोई डर नहीं हैं, तभी तो ये लागरवाही करने से गुरेज नहीं करते हैं। वक्त पर प्रशस्त्रीक सुधार नहीं किया गया तो न समाज का कल्याण हो पाएगा न देश का। राजेश कुमार चौहान, जालंघर

#### अपनी अर्थव्यवस्था मजबूत करे भारत

अपना अस्थरवायस्था मंजवूत कर सारत अपेक्ष स्वता है। युक्रेन युद्ध के कारण अब उसके हालात पहले जैसे नहीं रहे। नतीजतन रूस योन पर अव्यक्षित निपरं हो गया है। ऐसे पैता के किर्दू रूस से 1960-70 के दौर जैसी मदद की अपेक्षा ब्रेमानी हैं। लिहाना भारत अपनी सभी रणनीति के तत्त रूस के साथ संथी की अपने हितों कहा है। सीमित रखे। पश्चिमां ताकतों से वैद मोल न ले, क्योंकि उसे हिंद निप्ता स्वर्त की अन्य सहते पर पश्चिम का साथ च्यादिए। वहीं तेल अम्बत स्वे मामते में रूस के साथ च्यापीरक दिले कायम सखते में हमारी भलाई है। भारत की सबसे बढ़ी चुनैती है कि रूस की निर्भरता चीन पर से घटाए, लेकिन इसके लिए भारत को अपनी अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करने होंगे। mukeshkr.m7542@gmail.com

दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ईं–मेल भी कर सकते हैं। अपने पत्र इस पते पर भेजें : दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण, डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा ई-मेल: mailbox@jagran.com

### A pathway for the most populous nation

expected to touch 8.5 billion by the end of this decade. While Asia is decade. While Asia is expected to be overpopulated, Europe, it is said, will be underpopulated. Due to falling fertility levels and rising longevity, the future population could have a higher number and share of older people. Thus, the two significant transformations are expected to be an imbalanced distribution of the population across recions and the population across regions and a skewed age structure.

The population today is more centred in urban areas. By 2030, it is estimated that two-third of the people will inhabit urban spaces. which will put a strain on infrastructure and amenities. This. in turn, could compromise the quality of life of urban citizens.

Women's health and rights
The theme of this world
population day is women's sexual
and reproductive health and
reproductive rights', marking the
30th anniversary of the
International Conference on
Population and Development
(ICPD). This gives us an
opportunity to accelerate eforts
to realise the ICPD's programme of
action. While there has been
reasonable progress in three reasonable progress in three decades — women have greater access to modern contraceptives today and maternal deaths have declined considerably since 2000 - there are still unequal results across regions. It is unacceptable that each day, 800 women die globally from preventable causes relating to pregnancy and child birth. A disproportionate share of these deaths occur in developing countries. Reduced maternal mortality levels need to be associated with reduced fertility levels because lower fertility reduces exposure to maternity. However, decline in fertility levels is also associated with delayed declined considerably since 2000 is also associated with delayed

childbearing among women. World population day has obvious significance for India. The most populated country in the world with a median age of 28



S. Irudaya Rajan is Chair and Honorary Visiting Professor at the International are International Institute of Migration and Development, Kerala



U.S. Mishra

is Honorary Visiting Professor at the International Institute of Migration and Development Kerala

India needs to seriously prepare its workforce for the global labour market

years could help balance the population-defcit regions. Lowering fertility levels and rising longevity also transforms the size longevity also transforms the siz-and composition of households. There will soon be an uneven distribution of children and the elderly within households, which will have implications for inequality, an important concern for India. For instance, the Kerala Migration Survey 2073 grootts

Survey 2023 reports that 42% of households have no elderly people whereas 37% of POPULATION households have one elderly person, 20% have two, and 1% have

three elderly people.
The accommodation of elderly The accommodation of elderly people and children is uneven across rich and poor households. This gives rise to a lower dependency burden (the ratio of dependent young and old to the population of working age) in rich households compared with pooren ones. In addition, the care burden in households is also shaped by the presence of children and the elderly. Due to societal stereotypes, the burden of care falls on women. This leaves women with less time to participate in paid work. participate in paid work

Migration trends

The distribution of the population in the future will continue to be in the future will continue to be shaped by migration. In exent decades, we have seen greater mobility of people. People often migrated due to poor development and infrastructure in their regions. A study estimates that 60 crore Indians migrate within the country annually, and 2 crore migrate abroad. Given the potential of India's future urbanisation, it is important to encourage the emergence of new cities in order to release pressure on existing mega cities. These need to have the same kinds of infrastructure and public amenities as the mega and public amenities as the mega cities. We talk about smart cities.

It is clear that cities are the

drivers of the global economy. At present, 600 urban centres drive 60% of the world's GDP. An nent of global cities by assessment of global cities by Oxford Economics resulted in the Global Cities Index, which ranked the top cities in the world based on fve categories: economics, human capital, quality of life, environment and governance. This exercise evaluates the

exercise evaluates the urban quality of life, which needs to be studied so that the trends of rapid urbanisation and growing migration can be understood.

Unfortunately, not a single Indian city appears in the top 50 ranking of world cities. The best-ranking Indian city is Delhi, which occupies the 350th position out of 1,000 cities in the world. This poor performance is due to India's poor environment and quality of life, which undoubtedly threaten the sustainability of its cities. To make India's urban spaces livable, we need to address all these challenges. It is also noteworthy that the most populous country of the world does not have a realistic count of its population. Most projections of India's population are based on decades-old data. Until India conducts its census, we Unfortunately, not a

Until India conducts its census, we will only have estimates. It is important to know the exact count and the demographic make up so that we can draft better policies. World population day is significant for India since we have

significant for India since we have a global footprint. Despite more countries adopting stringent immigration policies, more Indians will continue to emigrate, at least in the near future. At the same time, India needs to seriously prepare its workforce for seriously prepare its workforce for the global labour market. It is said that the 21st century belongs to India But this statement will be India. But this statement will be validated only if India prepares its workforce to keep up with the evolving global needs. The world ount on us as much as we count on ourselves

### The Congress's many woes in Karnataka

The party is bogged down by in-fghting and corruption charges

Nagesh Prabhu

he Congress's below-par performance in the Lok Sabha elec-tions in Karnataka has high-lighted the cracks in the party. There has been political sha-dow boxing between two factions — one supporting Chief Minister Siddaramaiah and the other, his deputy D.K. Shieach leader issuing statements to undermine the other. The situation came to a head on situation came to a head on June 27 when a Vokkaliga seer, Chandrashekaranatha Swami, requested Mr. Siddaramaiah to give up the Chief Minister's post to Mr. Shivakumar.

post to Mr. Shivakumar.

The Congress fought the
Lok Sabha elections in unity,
banking on its fve 'guarantees'. However, it put up a
poor show, particularly in the
Old Mysore region, which is
often described as the 'Vokkaliga bell' owing to the electoral liga belt' owing to the electoral dominance of the Vokkaliga community to which Mr. Shi-vakumar belongs. This gave rise to the old demand of ap-

rise to the old demand of ap-pointing more deputy chief ministers. The Congress had swept this region in the 2023 Assembly polls.

The Chief Minister's loyal-ists, particularly Cooperation Minister K.N. Rajanna, re-newed the demand for the ap-pointment of three deputy chief ministers representing the Verashaiva-Lingayat, Scheduled Castel/Scheduled Tribe, and minority commun-ities to ensure more electoral ities to ensure more electoral support to the party. Given that the party high command had announced in 2023 that Mr. Shivakumar, who holds the post of Congress State chief, would be replaced after the Lok Sabha elections. Mr.



Rajanna has also said that a new Congress State chief should be appointed. Other senior leaders, such as Home Minister G. Parameshwara, see nothing wrong in this demand based on the 'one person, one post' principle Mr. Shivakumar holds multiple portfolios

ple portfolios.
The call for more deputy chief ministers was made after the 2023 Assembly results too. A section of Congress leaders believe that it is part of a strategy by Mr. Siddaramaiah's loyalists to keep Mr. Shivakumar in check amid talks that he might seek the Chief Minister's post after 30 months of this government's tenure. this government's tenure. They also say that the demand is being made to counter Mr. Shivakumar's infuence, both in the government and in the party. Party leaders have not ruled out a mid-term reshufe

ruled out a mid-term reshufe in the government. In the general elections, the Congress won nine out of 28 seats against one seat in 2019. It fell short of expectations that it would win at least 15 seats. The party's vote share increased to 45.43% from 31.88%. A survey of the results in each Assembly constituency shows that more than a dozen ministers were unable to provide leads for the party's candidates. Mr. Shivakumar sufered a major setback when sufered a major setback when his brother D.K. Suresh was defeated in Bengaluru Rural. This is why the ministers

not only renewed their de-

mand for more deputy chief ministers, but also for the reministers, but also for the re-placement of Shivakumar as Congress State chief. The Vok-kaliga seer's request to Mr. Sid-daramaiah intensifed the war of words between the loyalists of the two leaders. After his statement, Veerashaiva-Lin-gayat seers urged the party to consider leaders from their community for the top post or for the post of deputy chief minister in the event of a minister in the event of a change of guard. Meanwhile, AHINDA, an outft representing minorities, backward classes, and Dalits, warned of a State-wide agitation against any move to replace Mr. Siddaramaiah, who belongs to the Other Backward Classes

Other Backward Classes community. In the midst of this leadership struggle, the Congress is fighting other battles too. The party which came to power levelling corruption charges against the Bharatiya Janata Party is now facing allegations of fraud. Congress Minister B. Nagendra was forced to resign for allecedity swindling funds for allegedly swindling funds from the Karnataka Maharshi Valmiki Scheduled Tribes De-velopment Corporation. There have also been allega-tions of irregularities in the Mysuru Urban Development Authority scheme. In this case, allotments made to Mr. Siddaramaiah's wife have come under the scanner. Jana-

come under the scanner. Jana-ta Dal (Secular) leader H.D. Kumaraswamy has insinuated that the scam was exposed by "someone who is eyeing the Chief Minister's post." In this context, the upcom-ing by-elections to three As-sembly constituencies and the elections to urban and local bodies will be an acid test for bodies will be an acid test for the Congress. Providing a clean administration and keeping the party and govern-ment united will be the party's major challenges.

### Extreme events in the capital

With the wettest-ever June day and hottest-ever May day, an unusual spate of maximal weather has roiled Delhi

#### DATA POINT

#### Jasmin Nihalani

n the past two months, Delhi has witnessed two extreme weather events: days of unre-lenting heat in May followed by heavy rains in June. The capital also experienced the hottest-ever

neary latish Jour. In Edynia as o experienced the hottest-ever nights in June and year-round polution, making it a lough year.

On June 28, the much-awaited arrival of the south-west monsoon turned into a nightmare when houses and streets got flooded. At least five people lost their lives, including a task driver who cluding a task driver who cluding a task driver who cluding a task driver who flad wheten on him. According to the India Meteorological Department's gridded data, the city received the highest-ever rainfall for a day in June (150.7 mm) since 1951 (Chart ). The previous high for a day in The previous high for a day in June was 97.3 mm of rainfall — over 50mm lower than the latest record which occurred on June 30, 1981

Just a month earlier. Delhi was sweltering under record-breaking heat. A report by a non-proft or-ganisation, Centre for Holistic De-velopment, stated that 192 homevelopment, stated that 192 home-less people died due to a heatwave in the capital (June 11-19). In May and June this year, for 38 consecu-tive days, the city's maximum tem-peratures crossed the 40°C mark. On May 28, Debit recorded a maxi-mum temperature of 47.5°C, the highest-ever for a day in May in the capital since 1951 (Chart 2). The second-highest (47.3°C) was resecond-highest (47.3°C) was re-corded on May 29, the next day. Nights did not provide relief

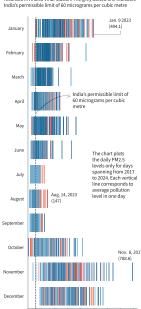
either. The average minimum tem-perature for June this year was

perature for June this year was 29.6°C, the highest for any month since 1951 (Chart 3). Moreover, PM2.5 levels above India's permissible limit of 60 mi-crograms per cubic metre were recrograms per cubic metre were re-corded on nearly all the days of November, December, and Janu-ary (Chart 4). This was the case during many days of August too, when pollution is otherwise low.

#### Sweltering heat, torrential rains

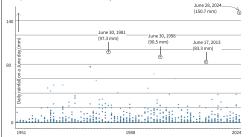
The charts are based on data sourced from the India Meteorological Department's gridded data. Data for PM 2.5 levels was sourced from the Central Pollution Control Board

Chart 4: The chart shows average daily PM2.5 levels recorded in Anand Vihar station. The grey dotted line indicates India's permissible limit of 60 micrograms per cubic metre



Almost all the days in November, December and January have PM2.5 levels above the Indian standard of 60  $\mu g/m3$ 

Chart 1: The chart shows the daily rainfall received by Delhi on every June day since 1951. Each dot corresponds to rainfall recorded in each June day between 1951 and 2024



 $\textbf{Chart 2:} \ The chart shows the daily maximum temperature in Delhi on every May day since 1951. Each dot corresponds to maximum temperature recorded in each May day between 1951 and 2024 and May 28, 2024 (47.5°C) and May 2$ May 29, 2024 (47.3°C)



# month, and if the commitment was to be fulfilled, the daily arrivals should average 2,500 runned, me daily arrivals should average 2,500 tonnes. Actually however just 1,000 tonnes a day were being received in the State for some weeks now. Frantic messages sent to the Centre only brought forth replies that the Southern Railway authorities were being alerted to move supplies. Unless about 5,000 tonnes of foodgrains arrived in the State dailv. the

A HUNDRED YEARS AGO JULY 11, 1924

#### Taxi fares in Bombay

Bombay, July 10: It is proposed to introduce revised taxi fares in Bombay in August. The rate for frst class taxis will be Rs 8 for the frst four-fiths of a mile instead of Rs 10 as at present, and for second dass vehicles the rate will remain at Rs 8 per mile. The rates for subsequent distances will be unaltered.

FROM THE ARCHIVES The Ma Frindu. FIFTY YEARS AGO JULY 11, 1974

#### Kerala's concern over slow rice movement into State

Cochin, July 10: The rationing system in Kerala will collapse unless the Central Government rushes rice supplies to the State on an "emergency footing", it is feared. The Food Corporation of India godowns in the State now contain hardly three weeks' supplies. The rice arrivals are 'unsatisfactory and dwindling". Normally, it takes at least two weeks for foodgrains released by the FCI to reach the retail shops via the wholesalers. Reliable sources said that rice movement in the State had been slow for nearly a month now. Even after the withdrawal of the Railway strike Government had been constantly urging the Union Government to help the State in meeting its ration committee, but the Centre's replies "have been unhelpful, unimaginative and routine."

The Union Government was committed to supply 80,000 tonnes of rice to Kerala per

foodgrains arrived in the State daily, the rationing system might break down. It was further pointed out that if unfortunately the rationing system broke down the consequences would be terrible and the entire responsibility for it would lie with the Union Government.

With the lean months ahead additional qualities of foodgrains were required by the State but even normal supplies were not available now, the sources pointed out.



### महिलाओं के हक में

देश की आला अदालत ने बुधवार, 10 जुलाई को एक बार फिर तलाकयापता महिलाओं के भरण-पोषण के हक में जो फैसला सुनाया है वह स्वागत योग्य तो है ही उसके गहरे निहितार्थ भी हैं। न्यायमित ह, जिस्पानी जान्य ता है हो, उसके निहर निहिताल नी है। न्यायनूरी बीवी नागरत्ना और न्यायमूर्ति एजी मसीह की पीठ ने 'मोहम्मद अब्दुल समद बनाम तेलंगाना राज्य...' मामले में स्पष्ट कहा है कि देश की दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 125 के तहत कोई भी तलाकशुदा पत्नी अपने नित से गुजाना-भत्ता मांग सकती है और इसमें घम कोई रुकाउट नहीं है। निस्सदेह, इस फैसले ने लगभग 39 साल पहले के सुप्रीम कोर्ट के उस फैसले की बाद दिला दी है, जो 'शाह बानो मुकदमे' के तौर पर देश के न्यायिक इतिहास में दर्ज है। तब राजीव गांधी सरकार ने गुजारे-भत्ते की मांग करने वाली शाह बानो के हक में आए उस सुप्रीम फैसले को अपनी विधायी शक्ति से पलट दिया था और इसके कारण देश में न का अपना विषाया त्यारकत पर पटा दिवार था आर इसक का प्रणा दर्श में सिप्पंड धार्मिक धूर्वीकरण की उपनीति को बल मिला, बल्कि सुप्रीम कोर्ट की प्रतिच्या भी आहत हुई थी। मगर इन चार दशकों में देश के मिजाज में, लोगों की मजहबी सोच में काणी तब्दीली आ चुकी है। तीन तलाक कानून के मुद्देर पर हम इस परिवर्तन को देख चुके हैं। कोई भी तरक्कीपसंद लोकताजिक देश और समाज बढ़ी चोहिंगा कि उसके किसी भी नागरिक के साथ लिंग, रंग या नस्त के आधार पर

किसी किस्म की ज्यादती न हो, बल्कि जो लोग किन्हीं भेदभाव की

न्यायमूर्ति नागरत्ना की टिप्पणी मानीखेज है कि भारतीय पति पत्नी की भूमिका और त्याग को पहचानें। संयुक्त खाता खोलकर उन्हें आर्थिक संबल प्रदान करें।

वजह से पीछे छट गए हैं, उन्हें अतिरिक्त सहारा दिया जाए, ताकि वे अवसरों के लाभ उठाकर मख्यधारा में शामिल हो सकें। इसलिए न्यायमूर्ति नागरत्ना की यह टिप्पणी बेहद मानीखेज है कि भारतीय पति पत्नी की भूमिका और त्याग को पहचानें। संयुक्त खाता खोलकर उन्हें आर्थिक संबल प्रदान करें। निस्संदेह, भारत में महिलाओं के पिछड़ेपन का एक बड़ा कारण आर्थिक रूप से उनकी पिता, पति या पुत्र पर निर्भरता रही है। उन्हें सशक्त और आत्मनिर्भर बनाए बिना भारत कैसे विकसित राष्ट्र होने के

सपने देख सकता है? विडंबना देखिए, याची अब्दुल समद ने तेलंगाना हाईकोर्ट के निर्णय के खिलाफ उसी कानून के तहत सुप्रीम कोर्ट से संरक्षण की मांग की थी, जिसे शाह बानो मामले में आए फैसले के बाद 1986 भाग को थी, जिस शाह बाता मानदान जोए रुसेदार के बाद 1986 में संसद ने बनावा था। मगर अब सुप्रीम कोर्ट ने साफ कर दिवा है कि धर्म इस कानून के आड़े नहीं आता और अब्दुल समद को अपनी पत्नी को गुजार-भत्ता देना ही होगा। गौरतलब है, परिवार न्यायालय ने समद को हर माह 20,000 रुपये अपनी बीवी को भरण-पोषण के तौर पर देने का कहा था, जिसके खिलाफ वह तेलंगाना हाईकोर्ट गए। हाईकोर्ट ने गुजारा-भत्ते की राशि घटाकर 10,000 रुपये कर दी थी। शहरनार ने जुनीय ने पत्र का साथ विश्वस र 10,000 क्षेत्र कर पत्र से मगर समद इससे भी छुटका चाहते थे। निस्सदेह, एक इंसाफपसेंद देश के तौर पर भारतीय लोकतंत्र ने लंबी वैधानिक दूरी तय कर ली है, मगर महिलाओं के मामले में धार्मिक और सामाजिक बंदिशों के ्र टूटने का सिलसिला अपेक्षाकृत धीमा रहा है। हर धर्म में अच्छी-बुरी प्रथाएं रही हैं। ऐसे में, आदर्श स्थिति तो यही है कि मुस्लिम पर्सनल अधार छे ह रिस्त , नारहा स्थिता एक छ छ ने पुरस्त न स्वतरा ला वा किसी भी अन्य समुदाव के अंदर की विसंगतियां उसी समाज के भीतर से दूर करने की शुरुआत हो, मगर जब ऐसा नहीं होगा, तो संविधान के आलोक में उसे दुरुस्त करने की जिम्मेदारी विधायिका और न्यायपालिका की ही होगी। मोहम्मद अख्दुल समद बनाम तेलंगाना उच्च मामले में सुप्रीम कोर्ट का ताजा फैसला इसी सिद्धांत

## हिन्दुस्तान | 75 साल पहले १० बुलाई

#### भारतीय ऐतिहासिक टिकट

नई दिल्ली, ९ जुलाई। भारतीय पुरातत्व शृंखला के डाक टिकट १५ अगस्त से, जिस दिन भारत अपनी स्वतन्त्रता की दूसरी वर्षमांठ मनावेगा, जनता की बेचे जावेंगे। टिक्टों का मुख्य उन पर हिन्दी तथा अग्रेजों में लिखा होगा और साथ ही उन पर छपा होगा ''भारतीय खक टिक्ट'।' टिक्टों की हस शुंखला में, जो सर्वप्रथम गत फरवरी में प्रकाशित की गुई थी, कुछ परिवर्तन किये गुंब हैं। इनमें से एक परिवर्तन तो यह है कि छः पाई के टिकट पर मोहिन जोंदड़ों के ाहित पात्र के स्थान पर कोनाके अध्य का चित्र, जो उड़ीसा में ( सन् १९३८-१९६४) के सूर्व मन्दिर में बनी एक शिल्प-मूर्ति है, फ्रकाशित किया गया है। १५ रुपये का एक नया टिकट और बनाया गया है जिस पर पश्चिमी भारत में स्थित पालीताना में सन् १६१८ में बने एक प्रसिद्ध जैन धर्मस्थान " शतुंज्य

में स्थित पालीतामा में सन् १६१८ में बने एक प्रसिद्ध जो व धर्मस्थान "मुजंब मन्दर" को लाज क्रातिशत किया मार्च है। इस मंख्या के अपनी के स्मान्तक, चित्रों के प्रकारित किया गया है, निम्म क्रातर है। (१) १६ रुपये के टिकट पर दिल्ली की १३८ पीट डेमी प्रसिद्ध कुनुवामीन का लोज प्रकारित किया गया है। तथा मीनार म्याव्याँ-बन्धवर्थी शताब्दि में बनी थी। (१) पांच रुपये के टिकट पर अगाय के ऐतितासिक जाजमस्तर का चित्र प्रकारित किया गया है। वाच्या यो रुपये के ही टिकट पर दिल्ली के लाल किया का चित्र प्रकारित किया गया है। वाच्या यो रुपये के टिकट पर दिल्ली के लाल किया का चित्र प्रकारित क्षाच्या मार्च जाता है। (३)

यो रुपये के टिकट पर दिल्लों के लाल किल का चित्र महंत लाल रोग प्रकाशित किला गायी है। एए कर पाये के टिकट पर चित्री हुन्न के निवस निवास गायी है। एक रुपये के टिकट पर पित्री हुन्न के निवस तम्म ऋ। चित्र प्रकाशित किया गया है। यह स्तम्भ सन् १४४२ - १४४९ में बनाया गया था। वह एक नी मीडिला डंग्या संगमस्य रूप बना समाक है। (५) १२ अने के टिकट पर अनुस्तर के स्वयं-निदर का चित्र प्रकाशित किला गया है। यह मन्दिर अकब्द के सामनकाल (१५५६ - १६०५) में सना या तथा सन् १७७६ में उसका पुनर्तिमाण हुआ। इस मुंखला के अन्य कम मुख्ये के टिकट पर अनुस्तर के सामनकाल (१५५६ - १६०५) में सना मुख्ये के टिकट पर अनुस्तर के टिकट पर युनरेलाई के कन्दावों माहदेव मन्दिर का चित्र है। यह मन्दिर एक ची सताबित में उत्तरी महत्त्व का स्वास के स्वस्तर का चित्र है। यह मन्दिर एक ची सताबित में उत्तरी महत्त्व आप का सामन करने कम मुख्ये के टिकट पर खी सताबित में उत्तरी महत्त्व आप का सामन करने कि टिकट पर खी सताबित में उत्तरी महत्त्व आप का सामन करने कि एक स्वास के स्वस्त करने कि एक स्वस्त करने कि एक स्वस्त करने कि एक स्वस्त करने स्वस करने स्वस करने स्वस्त करने स्वस करने स्वस करने स्वस करने स्वस कर पर बनाया गया। ६ आने के टिकट पर बीजापुर के गोल-गुम्बद का चित्र है। यह गुम्बद विश्व में सबसे बड़ा है।

# जनसंख्या नियंत्रण की निर्णायक घड़ी





जियन जनसंख्या दिवस है। दुनिया आठ अरब की संख्या को पार कर चुकी है और उसमें सबसे बड़ा योगदान किसका है ? गिस्सदेह, धारत का! और हमारे दिल्प यह चर्च करने का विश्व है या दिवा करने का? निस्सदेह, आईटी व अन्य क्षेत्रों में अपने पेशोवर नौजवानों की संख्या देखकर हमारा हृदय आहलादित नाजपाना का सख्य दखकर हमारा हुप्प जारसायत्व हो सकता है, गए एक विशाल युवा आबादी हाथों में आवेदन लिए सरकारों के दखाण खटख्यर रही है। सड़कों पर उमड़ता हुजूम बता रहा है कि हमें अपनी जनसंख्या के बारे में गंभीरता से सोचने की जरूरत है।

जनसङ्ख्या के बार मा भागत्व संख्यान के जन्म इन उत्पादक आबादी चाहिए या अनुत्यादक भीड़? वित्त मंत्री निर्माणा सीतास्यण इस साल के अतिस्य कटाद में जेशी बढ़ रही जानसंख्या व उलासिङ्कियों परिवर्तनों से उत्पन्न होने वाली चुनीतियों पर व्यापक विचार के लिए एक "हाई पायर कॉमिटों के मठन का प्राथमान किया है। प्रथमत कर देश भागता का नियंत्रण के लिए लगातार उठ रही आवाज का ही परिणाम है। याद कीजिए, अपनी दसरी सरकार के गठन पारणाम ही बाद काजिए, अपना दूसरा संस्कार क गठन के बाद 15 अगस्त, 2019 को प्रधानमंत्री नेरंद्र मोदी ने लाल किले के प्राचीर से जिम्मेदार अभिभावक बनकर अगली पीढ़ी के अच्छे पत्रिष्य के लिए प्रयत्न करने का आवाहन किया था। जनसंख्या नियंत्रण के संबंध में किसी भी प्रकार की

नीति बनाने से पहले आवश्यक था कि सभी समुदायों के लिए अलग-अलग व्यक्तिगत कानूनों को समाप्त करसमान नागरिक संहिता लागू की जाए। वर्ष 2022 में समान नागरिक संहिता का प्रारूप तैयार करने के म सभाग नागारक साहता का प्रोरूप पदार करन क लिए एक विशेषज्ञ समिति के गठन के साथ उत्तराखंड की पुष्कर सिंह धामी सरकार ने इसकी शुरुआत कर दी। राज्य की जनता और सभी हितधारकों से लंबे विचार-विमर्श के पृथ्चात विशेषज्ञ समिति द्वारा ाजपार-जिनस के परचार विसंविध सानेत द्वारी अनुशंसित समान नागरिक संहिता, उत्तराखंड, 2024 के प्रारूप को राज्य विधानसभा से 7 फरवरी, 2024 को पारित भी कर दिया गया। वर्तमान में उसकी हमें अपने संसाधनों पर गौर करना चाहिए। जिस देश के पास विश्व का लगभग 2.4 प्रतिशत भूमाग और मात्र चार प्रतिशत जल है, वहां संसार की लगभग 18 प्रतिशत आबादी रहती है।



नियमावली तैयार करने का कार्य एक अन्य समिति कर रही है और नियमावली तैयार होने के बाद समान नागरिक संहिता उत्तराखंड में लागू हो जाएगी। अब सवाल यह है कि क्या प्रधानमंत्री मोदी के इस तीस कार्यकाल में पूरे देश के लिए समान नागरिक संहिता और जनसंख्या नियंत्रण जैसे कानून आ पाएंगे?

जार जनसञ्जा नियंत्रण जैसे फानून जो बार्ल ? एनडीए सरकार का एक बड़ा सपना 'एक देश एक चुनाव' का है। मगर इस सपने को पूरा करने के लिए भी सबसे पहली जरूरत तो यही है कि केंद्र 2021 से टलती आ रही जनगणना को शीघ पर्ण कराकर टलता आ रहा जनगणना का शाघे पूण करवेकर परिसंसिम आयोग जगन करा भारतीय राजनीति पर जनसाहिकक्षीय परिवर्तन का कासी प्रपाव पड़ता है। किसी लोकसभा में 'पचास हजार भी सतदावा नहीं, और कहीं-कहीं 20 लाख से भी ज्यादा हैं। नए परिसोमन के लिए जनसाहिकक्षीय परिवर्तन एक बड़ी मुनीहों होंगी, संपेस्त देश की ज्यान में एको हुए वित्त मंत्री ह्यां उच्च सर्वित प्राप्त समिति बनाने की घोषणा की गई है। हालांकि, इस समिति के गठन की कोई सचना अभी तक उपलब्ध नहीं हो सकी है। ऐसे मे बना अभा तक उपलब्ध नहा हा सका है। एस म, बाल उठने लगा है कि कहीं यह विषय पुनः ठंडे बस्ते तो नहीं चला जाएगा ? देश के उज्ज्वल् भविष्य के लिए यह बहुत आवश्यक

हो गया है कि तेजी से बढ़ रही जनसंख्या और जनसांख्यिकीय परिवर्तनों से उत्पन्न होने वाली चुनौतियों को गंभीरता से लिया जाए। हम इस तथ्य को नजरअंदाज नहीं कर सकते कि विश्व में सर्वप्रथम परिवार नियोजन की पहल करने वाला हमारा भारत परिवार निर्वाजन का पेक्ट्र करन वाला हमारा मारत आज दुनिया में सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश बन चुका है। इसलिए इस विषय को राजनीतिक विवशताओं के बजाय राष्ट्रीय हितों के दृष्टिकोण से देखने का आवश्यकता है।

आवश्यकता ह। प्रधानमंत्री ने 15 अगस्त, 2019 के अपने उद्बोधन में भी प्रकारांतर से यही कहा था कि अपने संसाधनों के अनुरूप ही घर में बच्चों की संख्या होनी

चाहिए और यही बात देश पर भी लाग होती है। हमे अपने देश के संसाधनों पर गौर करना चाहिए। जिस अपन दश के संसोधना पर गार करना चाहिए। जस देश के पास विश्व का लगभग 2.4 प्रतिशत भूभाग और मात्र चार प्रतिशत जल है, वहां संसार की लगभग 18 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। भारत में विस्थापन, बेरोजगारी, प्रदूषण, अशिक्षा जैसी अनेक समस्याओं का मुख्य कारण संसाधनों के अनुरूप देश की जनसंख्या का न होना है। जो लोग भारत की जनसंख्या को विश्व की तीसरी सबसे बड़ी

जनसंख्या को विशव को तीसरी सत्तम बंदों अर्थव्यवस्था बनने का मुख्य बढ़ा कारण बताते हैं, उन्हें विशव के विकसित देशों के संसाधनों और उनको जनसंख्या की और अवस्थ देखना चाहिए। हमारे देश की कुष्ण समस्याओं की और गंभीरता से देखने की नरूरत है। देश की एक बढ़ी आवादी ऐसे. ऐसे रोगों की चोर में आती जा रही है, जिन पर हमारा बहुत सारा संसाधन जब होने बाला है। इंग्लंभस्त, इस समय अध्यक्तर खाद्य पदार्थ युद्ध नहीं है, पीने योग्य जल की कमी नरियंत और यह के पहरण के कारण जल की कमी, निंदियों और वायु के प्रदूषण के कारण हमारे शहर दुनिया भर में बदनाम हो रहे हैं। विशाल आबादी का पेट भरने के लिए कृषि-कर्म में बड़े पैमाने पर होने वाले रसायनों के प्रयोग ने गांवों में कैंसर जैसे रोगों को पहंचा दिया है।

राना का गुड़ेया दिया हो बढ़ती जनसंख्या के कारण कृषि योग्य भूमि निरंतर घटती चली जा रही है और परिवारों के बंटने के कारण खेतों का रकबा छोटा होता जा रहा है। देश में किसानों की बद्हाली का सबसे बड़ा कारण यही है। परंतु हमारी सरकारें मल बीमारी का इलाज न करके सिर्फ लक्षणो सरकार मूल बामारा की इलाज न करके सिफ लक्षणा के इलाज में ही व्यस्त हैं। हमारा राजनीतिक वर्ग देश की जनसंख्या की समस्या को भी वोटबैंक की राजनीति के चश्मे से देखूने का अभ्यस्त हो चला है। अभी ज्यादा क चर्चम सं त्यान का अग्यस्त हो चला है। उभा ग्यात दिन नहीं हुए हैं। मिजोग्स सरकार ने बांग्लादेश से आकर राज्य में बस गए लोगों को वापस भेजने से इनकार कर दिया। यह एक खतरनाक प्रवृत्ति है। समूचे पूर्वोत्तर की जनसांख्यिकों के बत्तन के पीछे दशकों से एलती यही प्रवृत्ति जिम्मेदार है।

देश का हर बुद्धिजीवी, करदाता, मानुशक्ति और युवा आशा भरी नजरों से केंद्र सरकार की ओर, खासकर प्रधानमंत्री की तरफ देख रहा है कि इस् स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर वह तेजी से बढ़ रही जनसंख्या और जनसांख्यिकीय परिवर्तन से उत्पन्न हो रही समस्या पर क्या कहते हैं ? (ये लेखक के अपने विचार हैं)

## आज भी गावस्कर की कोई बराबरी नहीं कर सकता

बधवार को सनील गावस्कर ७५ साल के

हो गए। मगर वह जितने

सक्रिय हैं, वह बताता है कि क्रिकेट से उनको

कितना प्यार है।

मैं अक्सर सुनील के साथ मजाक करता हूं कि आपने खेला तो 20 साल तक, लेकिन 40 साल से क्रिकेट के बारे में ही बात कर रहे हैं। वैसे, यह कोई आसान काम बार में हो बात कर रह है। वस, यह कोई आसान काम नहीं है, वह भी 75 साल की उम्में 1 वह बताता है कि क्रिकेट से उनको कितनी मोहब्बत है और इस खेल के बारे में वह कितने जहीत हैं। नए क्रिकेटरों के लिए जो पेरी उनसे सीवने को अब भी बहुत बुक्क हैं। क्या जा शायद ही कोई मानेगा कि एक ब्वत ऐसा भी था, जब शायद ही कोई मानेगा कि एक बनत ऐसा भी था, जम मारत के पास अगती योजनाओं पर अगल करने के लिए पर्याण संसाधन नहीं होते थे, तब भी गायदकर ने आगे बढ़ने का रास्ता खोज लिया था और खो आपको उनके अलग दुनिया में ले जाता है। इसे आग सिर्फ उनके अलग दुनिया में ले जाता है। इसे आग सिर्फ उनके आने हों में सुधार सकते । खुद से विफटाई के काराण में अकसर उनके भगवान के रूप में देखता था। तब में मोशा करता, 'बाह, जिस ज्योलक को में बच्चन ने सुनीद राख है, उनके साथ युद्धे देशिंग रूप माझा करने का मौता मिल

रहा है! वह एक शानदार एहसास था। मुझे अब भी वह पहली सलाह याद है, जो उन्होंने मुझे तब दी थी, जब हम विलस ट्रॉफी खेल रहे थे। भले ही उसमें हम एक-दूसरे के प्रतिद्वंद्वी थे, लेकिन वह मेरे पास आए और कहा, 'किपल, जब तुम विकेट के करीब से गेंद डालते

जब पुमानकर क करण समार जातता है, तब मुझे मुक्ता आउटियोग को समाइसे में दिककत होते हैं। जब सुम जोंचे सुर हो राज्या करते हो, तब में गेंद को अंदर आते और मूच करते देख सकता हूं। 'एक महत खिलाड़ों से मिली वह तारीस, और वह भी तब, जब में अपनी हेकंट कारियर की सुरुआत हो कर रहा था, मेर हिए फामो प्रेसक था। में जाता था कि यह कहा नामा देखा हो, स्थांकि यह जुड़ सार है, जिसे कोंच भी फाइ नहीं गाते हैं।

हालांकि, शुरुआती साल उनके लिए बहुत आसान नहीं थे। 1971 में हमने वेस्ट इंडीज और इंग्लेंड में जीत दर्ज की, लेकिन दुर्भाग्य से जब सुनील ने शुरुआत की, तो मुझे लगा कि हमारे पास लगातार जीतने वाली टीम नहीं है। इसका मतलब यह भी था कि उन्हें हार न मानने नहां हा इसका नतलब यह मा बा। बढ़ उन्ह हार न मानन को प्राथमिकता देनी थी। इसमें कुछ वक्त जरूर लगा, लेकिन धीरे-धीरे चीजें बदलने लगीं। उनकी महानता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि विरोधी टीमों का 90 फीसदी समय उनको आउट करने की रणनीति बनाने में बीतता था। उनको लगता, गावस्कर को निपटाओ, तो पूरी टीम बिखर जाएगी। यह वह दबाव



कपिल देव । पूर्व क्रिकेटर

और भार था, जिसे सफलतापूर्वक उठाते हुए सुनील गावस्कर खेला करते। मगर 'लिटिल मास्टर' को हमेशा पता होता था कि बड़े विपक्षी खिलाड़ियों से कैसे निपटना है ? वह ऐसा समय था, जब हरेक टीम में एक से एक ज गेंदबाज होते थे। मैल्कम मार्शल, माइकल होल्डिंग तज गदबाज हात था मल्कम माराल, माइकल हाल्डन, रिचर्ड हैडली, इमरान खान, डेनिस लिली, बॉब बिलिस... आप किसी का भी नाम लें, गावस्कर ऐसे खिलाड़ी रहे हैं, जो उनके सामने डटकर रन बनाते थे।

कोई उनकी बराबदी नहीं कर सकता । बा, या बूं कहें कि आज भी कोई उनकी टक्कर में नहीं है। यह उन खिलाड़ियों में शुमार हैं, जिन्होंने भारतीय क्रिकेट को खुद पर परेशता करना सिखाया वह वास्तव में भारत के सर्वश्रेष्ठ क्रिकेटरों में एक हैं और उस दीर के लिए तो अद्भुत रोल मॉडल थे। उन्होंने हमें बाताबा कि कैसे पेशेवर बनना है, कोई उनकी बराबरी नहीं कर सकत हम बताया कि कत पराय प्रमान है अपने खेला के प्रति कैसे ईमानदार रहना है और क्रिकेट को किस तरह अपने जीवन में उतारना है? मुझे व्यक्तिगत रूप से लगता है कि सुनील को 1983

मुझ व्यावताना रूप सं लगाता हाक सुनाल का 1983 के विश्व कप का कप्तान होना चाहिए था। वह कहीं अधिक विश्व और परिपक्त खिलाड़ी थे। इसी तरह, बाद के दिनों की यह चर्चा भी गलत थी कि उन्होंने मुझे कप्तानी से हटा दिया। तब बाहर से हालात जिस तरह कप्तानी से स्टा दिया। तब बाहर से हालात जिया तरह संभावने एम, बेंदूबर को कप्तानी कर्षों प्रीयं के हमारे, प्रदर्शन के आड़ नहीं आई। इससे कोई फर्क ही गर्ही पड़ता कि कीन नेतृत्व कर रहा है ? आप तो शिपके अपने देश का प्रातिनिध्यं कर तहीं शब्ध में सुनिध्यं को कप्तानी में खेल रहा था, तब भी में भारत का प्रातिनिध्यं कर रहा खा और जब हा में के क्यानी में खेल रहे थे, तब वह भी देश का ही प्रतिनिध्यं कर रहे थे। बारहाराल, सुनील अब जब 75 साल के हो गए है, मैं बहा हतना ही करना कार्याण 'फेटर कर हिन्द अंडिंग करीं। हिम्मी ही दर्धरें 'दोस्त, यह दिन इंजॉय करो। किसी भी दूसरे

क्रिकेटर से कहीं अधिक तुमने देश को दिया है।' (ये लेखक के अपने विचार हैं)

### मनसा वाचा कर्मणा

### सत्संग एक आश्रय

कभी तुमने गौर किया है कि लोगों को घर की आवश्यकता क्यों होती है? क्या वे बिना किसी आवश्य के पाछुओं की तक जंगलों में हैं रह सकते हैं है? दरअसल, मुच्य को परिवर्तन गोंल प्रकृति से सुरक्षा चाहिए, इसलिए वह अपने सार्थिक सुख के लिए एक आअब बनाता है। इसी प्रकृत आधारिक, सुख के लिए एक आअब बनाता है। इसी प्रकृत अध्यक्त है। सार्थ मुच्य को सम्य बनाता है। इसी प्रकृत के करोंदे और प्रतितन मेहिए प्रमुं की बचने का आअब है। सार्थम यह प्रास्ता है। सार्थ के बचने का आअब है। सार्थम यह प्रसिक्त महाज है। वहिंद सुख खुरिवाल बंटोर में एने हो, तो तुमहें दुख मिलता है। विदे तुम खुरिवाल बंटोर में एने हो, तो तुमहें दुख मिलता है। विदे तुम खुरिवाल बंटोर में एने हो, हमें प्रकृत की एक सुक्त के स्ति है। विदे तुम खुरिवाल के स्ति है। सार्थम प्रकृत के प्रकृत की एक पुणनी कवालता है। हमें प्रकृत की एक पुणनी कवालता है कि इसियों और ज्ञानियों की वाणी तत्काला ही अनुभव बन जाती है। हमाप पुण शति एसाणुओं से बना है। ऐसे में, जब तुम इस सार्थ के साब बेठी हो, तो तुम्मरी प्रतर अर्थ प्रकृत होती है और चेतना उन्तत होती है। जब सरस्तों में तुम भजना तो है। हो, तो उन्हों में आव सरस्तों में तुम भजना मते हो, तो उन्हों भागता है। जैते, एक प्रकृत में समा जाता है। जैते, एक प्रकृत में समा जाता है। जैते, एक प्रकृत में सार्थ जिते हैं। जित्न सार्थ मार्थन होता है। जित्न सार्थ होते हैं। जित्न सार्थ मार्थन होता है। जित्न सार्थन होता है। जैते, एक प्रकृत में समा जाता है। जैते, एक प्रकृत में समा जाता है। जैते, एक प्रकृत में समा जाता है। जैते, एक प्रकृत के प्रकृत के प्रकृत में समा जाता है। जैते, एक प्रकृत के प्रकृत कभी तुमने गौर किया है कि लोगों को घर की आवश्यकता

शरीर के कण-कण में समा जाता है। जैसे, एक रारार के करा-करा में सभा जाता है। जस, एक माइक्रोफोन ध्विन को पकड़कर विद्युत में परिवर्तित करता है, वैसे ही शरीर ध्विन के स्पेदन को समेटकर चेतना में परिवर्तित करता है। जब तुम भूजन करते हो,

चतना में परिवारत करता है। जब दुन भेजन करते हैं, जूसवा समस्त करीं कर जो से तर जाता है और दुनवारी चेतना में परिवर्तन जाता है। जदि दुन से कै-है केए मासते हो या तीव संगीत सुनते हो, तो वह ऊर्जा तुम्हारे सगैर में समा जाती है। जब तुम जुनकी चेतना उन्हों ती हो या दूर की जम करते हैं, तब जुनकी चेतना उन्हों ती हो या दूर की, जो मन सुख खोजता रहता है, यह केंद्रित नहीं हो सरकता। सत्संग

संखाता है, जब तुम केंद्रित होते हो, तब सारे सुख सिखाता ह, जब तुम काहत हात छा, तब सार सुख अपने आप नुमार्ग सता जाती है और तब दे सुब नहीं रह जाते। उनका आकर्षण नहीं रह जाता। यदि तुन्हें अपने दुख में रस आता है. तब भी तुम केंद्रित नहीं हो सकते और तुम पथ से बहुत दूर हो जाते हो। जो मन सुख खोजता है या दुख में रस लिता है, वह परम सुख को कभी प्राप्त नहीं कर सकता। यदि तुम सुख के पीछे

यदि तुम खुशियां बटोरने में लगे हो, तो तुम्हें दुख मिलता है। यदि तुम खुशियां बांटने में लगे हो, तुम्हें प्रेम और आनंद मिलता है। सत्संग हमें बांटना ही सिखाता है।

भागते हो, तो सत्संग को भूल जाओ। अपना समय क्यों

भागत हा, तो सत्सम को भूल जाओ। अपना समय बंदो ब्यार्थ नेवा है है ? तुम ईश्वर को किस प्रकार का समय देते हो ? प्राध-बना-खुवा समय, जबारुं के दीर कोई काम नहीं, किसी मेहमान के आने को संभावना नहीं, किसी दावत में जाना नहीं और सिनेमा या सीरियल नहीं रहेवागा ऐसा समय वुम ईरबन वेते हों, पर वहते हो केट साम नहीं। तुम्मदी धर्मनाएं नहीं सुनी जा तहीं हैं, तो कराण है कि तुमने अपना मूल्यवान समय प्रभु को नहीं दिया। अपने जीवन में सत्संग और ध्यान को महत्वपूर्ण स्थान दो। श्री श्री रविशंकर

द्रौपदी मुर्मु । राष्ट्रपति, मारत



महात्मा गांधी ने सात सामाजिक पाप परिभाषित किए हैं, जिनमें से एक है दयाहीन विज्ञान, यानी मानवता के प्रति संवेदनशीलता से रहित विज्ञान को बढावा देना। सार्थक ज्ञान वही है, जिसका प्रयोग मानवता की बेहतरी के लिए हो।

## मानसूनी बारिश से परेशानी में लोग

देश में मानसून की प्रतीक्षा बेसब्बी से की जाती है, किंतु मानसूनी बारिश की अधिकता के कारण पहाड़ी और मैदानी इलाकों में मचने वाली तबाही पर नियंत्रण हेतु समय से उपाय नहीं किए जाते। यही हतु समय से उपाय नहां किए जाता वर कारण है कि हर साल आम लोगों को प्राकृतिक आपदाओं का दंश झेलने के लिए मजबूर होना पड़ता है। प्रकृति से लिए मजबूर क्षना पड़ता है। प्रकृति से छेड़छाड़ और प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन से एक ओर पर्यावरण का संतुलन बिगड़ रहा है, तो दूसरी ओर प्राकृतिक आपदाओं की आवृत्ति बढ़ गई है, जो जानलेवा साबित होने लगी हैं। ह, वानाराजा है। कि कहीं पहाड़ दरक रहे हैं, तो कहीं भूस्खलन हो रहा है। बाढ़ और जलभराव की गिनती तो सामान्य घटनाओं में होने लगी है।

नतीजतन, मानसून का खौफ लोगों के मन में समाने लगा है। निस्संदेह, यह सब पहली बार नहीं हो

रहा है, (राकन मानसून का समस्या बन जाना नया चलन है। विचारणीय बिंदु यह है कि मानसून आने से पहले इससे निपटने के लिए कितनी समुचित तैयारी की जाती है? लगता तो यही है कि इससे निपटने की हें? लगता ता वहाँ है कि इससे निपटन की तैयारी सिर्फ कागजों पर की जाती है अथवा खानापूर्ति या धन की बंदरबांट अधिक की जाती है। साफ है, शहरी क्षेत्रों अधिक की जाती है। साफ है, जाफी क्षेत्रों में जल-निकाती की व्यवस्था युवाकर ने होने से जलाभगव और बाह की व्यवित उत्पन्न होती है। नागर लागों की सफाई ने खोने से उनके उकनने की आशंका अधिक होती है। मार एकाड़ों पर इसलिए पुरख्लान की पटनाएं बहु नाई है, क्योंकि हमने कांचत तीर पर क्लिकास के नाम पर एकाड़ों की काटना गुरूक कर दिवा है। इससे पहले से कमजोर एकाड़ और कमजोर होने लगे हैं। इतना ही नहीं, पर्यावरण को शुद्ध रखने में मुख्य भूमिका का निर्वाह करने वाले वृक्षों के नाम पर भी खानापूर्ति अधिक की

रहा है. लेकिन मानसन का समस्या बन

जाती है। वक्षारोपण अभियान भी कागजों और यथार्थ में कम प्रभावी पर आधक आर यथाय म कम प्रभाव। दिखते हैं। साफ है, मानसून आने से पहले ही

इससे निपटने की चाक-चौबंद व्यवस्थ इससे 1नपटन को चाक-चाबंद व्यवस्था होनी चाहिए। इसमें हमारा तंत्र चूक रहा है। अभी स्थिति ऐसी है कि मानो मानसून के रौद्र रूप को देखकर संबंधित विभाग व अधिकारी समस्या से निपटने का महज व जावकार पतानित निर्मात के निर्मा होंग कर रहे हैं। यह गलत प्रवृत्ति है। जब तक समस्या के स्थावी समाधान के प्रति वे सजग नहीं होंगे, तब तक वह समस्या जस की तस बनी रहेगी, अलबत्ता और भी जटिल होती जाएगी। तंत्र को आम लोगों के हितों के बारे में सोचना चाहिए। इसके लिए अगर किसी कानूनी कार्रवाई की जरूरत हो, तो वह भी की जानी चाहिए। समस्या के समाधान में समग्रता

सो प्रयास करने की जरूरत है।

से प्रयास करने की जरूरत है।

से प्रधाकर आशावादी, टिप्पणीकार



## मानसून को कोसना बंद कीजिए

पिछले महीने जब पूरा उत्तर भारत सूरज की तेज गर्मी की चपेट में था, तो सभी यही कामना कर रहें थे कि जरूर से जरूर मानसून की दरतक की तब जमीन ही नहीं तप रही थी, इंसान भी चढ़ते सूरज को हेल्ले में खुद की सक्षम करीं मान रहा था। उज्जानी दिल्ली में तो तापमान 50 डिडी सेल्सिस को भी पार कर गया था। ऐसी साल्सवस का भा पार कर गया था। एसा स्थित में मानसून राहत की बारिश लेकर आया। इसका हम सबने दिल खोलकर स्वागत भी किया, लेकिन अब जब चारों ओर से प्रतिकृल खबरें आने लगी हैं, तो हम इसे कोसने लगे हैं और कामना करने हम इस कासन लग व उस कामना करन लगे हैं कि जल्द से जल्द यह बारिश बंद हो। वाकई, हम ईसानों की सोच निजी हितों तक ही सिमटी हुई है। हम अपने फायदे-नुकसान को देखकर ही कदम आगे बढ़ाते हैं। कुण्या, मानसून को कोसना बंद कीजिए। यह गलत है। मानसूनी बारिश किसानों के लिए

अमत के समान मानी जाती है। वैसे भी अमृत क समान माना जाता है। बस भा, अपने देश में कृषि जयक्या मूल रूप से वर्षा-जल पर ही टिकी हुई है। इसका मतलब है कि अनाज उत्पादन के लिए हमें मानस्त्री बारिश की जरूत है ही। हां, कुछ ज्यातों पर बेहिसाब पानी से जनजीवन प्रभावित होता है। वहां की आधारभूत संस्थाओं को भी काफी आधारभूत संरचनाओं को भा काणी नुकसान पहुंचता है। मगर यह सब इसलिए होता है, क्योंकि इम उनके रस्ते में आ चुके हैं। जब पानी को बहने का हम रस्ता नहीं देंगे, तो वह अपनी राह खुद तलाशु लेगा। पहले के दिनों में हर इलाके में पानी के बहाव का प्राकृतिक रास्ता होता था। अब अपनी जरूरतों के मद्देनजर इंसानों ने डूबू क्षेत्रों में भी मकान आदि बना लिए हैं। इस कारण, मकान आदे बना हिए हैं। इस कारण, पानी शहरों में अटकने लगा है। यह अटका हुआ जल समस्याएं पैदा करता है, मानसून नहीं। पहाड़ों पर भी व्यवस्थागत

गलितयों का खामियाजा लोग भुगतते हैं। ऐसे में, भला मानसूनी बारिश को क्यों दोष देना ? अच्छे मानसून से खाद्यान्न उत्पादन बढ़ता है, सिंचाई की सुविधा वेहतर होती है, खाद्यान्तों की मूल्यवृद्धि नियंत्रण में रहती है, बिजली संकट कम होता है, निदयों का जलस्तर सुधरता है, बिजली के बेहतर उत्पादन में मदद |बजला क बहतर उत्पादन म भदद |मिलती है, पानी की कमी दूर होती है, नदी-जलाशय-तालाब आदि लबालब भर जाते हैं और सबसे बड़ी बात गर्मी से गहत मिलती है। इस सूरते-हाल में मानसून को कोसने का हमें नुकसान ही हो सकता है। रूटा मानसून कितनी दिक्कतें दे सकता है, यह किसी भी किसान से पूछ सकते हैं। इसलिए अभी मानसूनी बारिश का आनंद लीजिए और उन स्थानों पर गाने से बचिए, जहां सुरक्षा की मुक्कमल व्यवस्था नहीं है।

😝 सेहित कुमार, टिप्पणीकार

## सपादकाय जनसता। ११ जुलाई, २०२४

## कुल्पमेधा

बिना कृष्ट के ये जीवन बिना नाविक के नाव जैसा है, जिसमें खुद का कोई विवेक नहीं । हल्की हवा के एक झोंके में भी चल देता है ।

- ईश्वर चंद्र विद्यासागर

### गजारे का हक

लाकशुदा मुसलिम महिलाओं के लिए गुजारा भत्ता संबंधी सर्वोच्च न्यायालय का फैसला ऐतिहासिक है। न्यायालय ने कहा है कि हर , महिला को गुजारा भत्ता पाने का अधिकार है,

चाहे वह किसी भी धर्म की हो। दरअसल, अभी तक मुसलिम पर्सनल कानून के तहत तलाकशुदा महिलाओं का गुजारा भत्ता तय होता था। शरीअत कानून के मुताबिक उद्दरत की अवधि तक ही तलाकशुदा महिला को गुजारा भत्ता दिया जा सकता है। इद्दत यानी तीन महीने की वह अवधि, जिसमें महिला किसी दूसरे के साथ विवाह नहीं कर सकती। मगर सर्वोच्च न्यायालय ने भारतीय दंड संहिता की धारा 125 को सभी महिलाओं पर समान रूप से लाग करार देते हुए कहा कि इद्दत के बाद भी महिलाएं गुजारा भत्ते का दावा कर सकती हैं। हैदराबाद उच्च न्यायालय ने एक मामले में फैसला दिया था कि पति अपनी तलाकशुदा पत्नी को गुजारा भत्ता दे। उसी फैसले को पति ने सर्वोच्च न्यायालय में उ चनौती दी थी। उसकी दलील थी कि मसलिम महिला (विवाह विच्छेद पर अधिकारों का संरक्षण) अधिनियम, 1986 के चलते, तलाकशुदा मुसलिम महिला देंड प्रक्रिया संहिता की धारा 125 के तहत गुजारा भत्ता नहीं ले सकती। मगर सर्वोच्च न्यायालय ने स्पष्ट कर दिया कि धर्मनिरपेक्ष कानून पर यह धारा आरोपित नहीं की जा सकती।

मुसलिम महिलाओं के गुजारा भत्ते संबंधी विवादों पर पहले भी अदालतें सहानुभूति पूर्वक विचार कर चुकी हैं। करीब दो वर्ष पहले इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने फैसला दिया था कि तलाक के बाद महिला को पति से गुजारा भत्ता पाने का पूरा हक है। मद्रास उच्च न्यायालय ने स्पष्ट कह दिया था कि शरीअत कार्जसल कोई अदालत नहीं है और न उसे कानन बनाने का हक है, तलाकशुदा औरतों को अपने पहले शौहर से गुजारा भत्ता मिलना ही चाहिए। इसी साल बंबई उच्च न्यायालय ने कहा कि तलाकशुदा महिला अगर दूसरी शादी कर लेती है, तब भी वह अपने पहले पति से गुजारा भत्ता मांग सकती है। सर्वोच्च न्यायालय ने उन तमाम फैसलों पर अपनी मुहर लगा दी है। मुसलिम महिलाएं तीन तलाक और गुजारे भत्ते की परंपरा के कारण सदियों से अत्याचार सहन करती आ रही हैं। तीन तलाक के विरुद्ध कानून बन जाने से उन्हें काफी राहत मिली। अब तलाक के बाद दूसरे धर्मों की महिलाओं की तरह ही गुजारा भत्ता पाने का कानून स्थापित हो जाने के बाद उन्हें बड़ी राहत मिलेगी। सर्वोच्च न्यायालय के ताजा फैसला के बाद जो महिलाएं गुजारा भत्ते के लिए पहल नहीं करती थीं, वे भी दावा पेश करेंगी।

भारतीय समाज में आज भी अधिकतर महिलाएं विवाह के बाद अपने पति पर निर्भर हैं। अगर किन्हीं स्थितियों में पति उन्हें छोड़ देता है. तो उनका भरण-पोषण मश्किल हो जाता है। जिन महिलाओं के कंधों पर बच्चों को पालने, पढ़ाने-लिखाने का बोझ है, उन पर तो जैसे मुसीबतों का पहाड़ ही टूट पड़ता है। बहुत सारी तलाकशुदा मुसलिम औरतें दुबारा शादी नहीं करतीं, इसलिए केवल इंद्दत तक गुजारा भंता पाने से उनके जीवन की मुश्किलें दूर नहीं हो पातीं। फिर, जो महिलाएं दूसरा विवाह कर भी लेती हैं, जरूरी नहीं कि उससे उनके बच्चों का उचित भरण-पोषण हो ही जाए। असल सवाल है कि किसी महिला को केवल धर्म के आधार पर दूसरी महिलाओं से अलग क्यों माना जाना चाहिए। एक नागरिक के तौर पर हर महिला को समान अधिकार मिलना चाहिए। इस दृष्टि से सर्वोच्च न्यायालय का ताजा फैसला एक कल्याणकारी राज्य के कर्तव्यों के अनुकूल और सराहनीय है।

### हादसों की सड़क

माम सरकारी दावों के बावजूद देश में

सड़क दुर्घटनाएं कम नहीं हो पा रही हैं।

आए दिन बड़े सड़क हादसों की खबरें आ जाती हैं। खासकर आधुनिक तकनीक से बने एक्सप्रेस-वे पर भीषण दुर्घटनाएं हो रही हैं। उत्तर प्रदेश के उन्नाव में आगरा-लखनऊ एक्सप्रेस-वे पर एक तेज रफ्तार बस के टैंकर से टकराने और उसमें अठारह लोगों के मारे जाने की घटना इसकी ताजा कड़ी है। पहले भी इस मार्ग पर कई बड़े हादसे हो चुके हैं। सवाल है कि एक्सप्रेस-वे पर आखिर इतने बड़े हादसे क्यों हो रहे हैं? पिछले वर्ष नवंबर में केंद्र सरकार की तरफ से जारी एक रपट के मुताबिक, 2022 में देशभर में हुई कुल सड़क दुर्घटनाओं में से 32.9 फीसद एक्सप्रेस-वे पर हुई और इनकी वजह तेज रफ्तार थी। दरअसल, एक्सप्रेस-वे पर दिन-प्रतिदिन वाहनों का दबाव बढ़ रहा है, ऐसे में तेज गति से गाड़ी चलाने पर दुर्घटना की संभावना हर वक्त बनी रहती है।

वैसे तो यातायात नियमों का उल्लंघन करने वालों से निपटने के लिए सख्त कानून बनाए गए हैं। मगर, ये कानून तभी कारगर साबित होंगे, जब प्रशासनिक तंत्र इन पर कड़ाई से अमल सुनिश्चित करेगा। अक्सर देखा गया है कि दुर्घटना संभावित चिह्नित स्थलों पर भी वाहनों की निगरानी के लिए माकूल व्यवस्था नदारद होती है। हालांकि, एक्सप्रेस-वे पर सीसीटीवी की व्यवस्था है. लेकिन उनकी भी नियमित निगरानी किए जाने की जरूरत है, ताकि दुर्घटना के संभावित खतरों को समय रहते टाला जा सके। बढ़ते सड़क हादसों के मद्देनजर एक्सप्रेस-वे पर यातायात पुलिस की गश्त बढ़ाने, आपात सेवा के लिए त्वरित प्रतिक्रिया प्रणाली स्थापित करने तथा कार्रवाई में देरी करने पर जिम्मेदारी तय करने का मुद्दा भी उठाया जाता रहा है। मगर, इस दिशा में कोई ठोस पहल नजर नहीं आती है। तेज रफ्तार के अलावा लापरवाही से वाहन चलाना, क्षमता से अधिक यात्री बिठाना, अकुशल चालक चलाना, क्षमता स आध्यक थात्रा ।बठाना, अकुशल चालक और नम्में ची बाहन चलाना भी सडक हादसों का कारण बनता है। इन पर रोक लगाने के लिए पुलिस और प्रशासन के स्तर पर पुख्ता इंतजाम किए जाने की जरूरत है। व्यवस्था में खामी के लिए जावाबरीह तब करना जरूरी है, तभी सुधार की उम्मीद की जा सकती है।

# घटते भूजल स्तर से बढ़ती मुश्किलें

विश्व आर्थिक मंच की एक रपट में कहा गया है कि दुनिया की आबादी के कुल 75 फीसद से अधिक लोग किसी न किसी रूप में पानी की कमी से जुझ रहे हैं। भारत को नदियों का देश कहाँ जा सकता है, लेकिन यहां भी प्रति व्यक्ति जल उपलब्धता लगातार कम हो रही है।

अतुल कनक

वि रहीम ने कहा: 'रहिमन पानी राखिए, बिन पानी वि रहाम ने कहा: 'रहिस्त पानी (राह्य), बिन पानी स्व सुन, पानी गए न कवरे मोती, मानूप, चून! से ख सुन, पानी गए न कवरे मोती, मानूप, चून! कि बात करता है तो कहा साने का अपव्यय रोकने और वर्षों जल संग्रहण की सीख भी देता है। चूंकि आज भी दुनिया अपनी जल संबंधी करूरतों को पूरा करने के लिए प्रकृति प्रार पुक्ति हारा पुक्ति कार पुक्ती का प्रार करने के लिए प्रकृति पर प्रकृति पर स्वाप्त का ने वाले जल को वरदान का तरह सहंजा जाना चाहिए। बरदान क्यंब करने के लिए प्रकृति हारा पुक्ति हारा पुक्त हारा पुक्त हारा पुक्त करा प्रकृत भागा स्वाप्त क्यं करने के लिए कही होरे पहुंचा ग्रेम मान्य स्वाप्त क्यां कर स्वाप्त करा करा करा करा करा करा करा करा है।

बरदान को तरह सहंजा जाना चाहिए। बरदान व्यर्थ करने के लिए नहीं होते। दुर्भाग्य से मुच्य समाज वर्षा जल संग्रहण के प्रति अभी भी पर्योग्न संवेदनशील नहीं हुआ है। हालांकि पृथ्यी की सतह का दो तिहाई से अधिक हिस्सा पानी से आच्छादित है, लेकिन विसंगति यह हैं कि इस पानी में से अधिकांश मनुष्य को दैनीदिन जरूरतीं को पूरा करने के काम नहीं आ सकता। वैज्ञानिकों का करना है कि पूर्य पृथ्यी पर मीजून कुल पानी का लगभग दो भीसद हिस्सा ही मनुष्य पेयजल के काम में ले सकता है। समुद्री पानी में लगण तत्क को आधिक्य दर्श गीवन के लावण्य को संवारने लावण कर को आधिक्य दर्श गीवन के लावण्य को संवारने लावण कर ही रहने देता। विश्व आधिक मंत्र के प्राप्त रूपट में

संवार्त लायक नहीं रहने देता। विश्व आधिक मंच को एक रपट में कहा गया है कि दुनिया की आवाती के कुल 25 भोतर से अधिक लोग किसी न किसी रूप में पानी की कमी से जुड़ा रहे हैं। भारत को नदियों का देग कहा जा सकता है, लेकिन यहां भी प्रति व्यक्ति जल उपलब्धता लागात कम हो रही है। कुछ वर्ष पहले भारत सरकार ने संसद में बताया था कि जहां 1951 में 5177 घन मीटर जल प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष उपलब्ध था, वर्ष 2025 में इसके प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष 1341 घन मीटर होकर रह जाने की संभावना है। वह आंकड़ा डराता है। खासकर तब, जब इसी

वहा 2025 म इसके प्रति व्यावत प्रति तथा 13वी घन माटर होकर रह जाने की संभावता है। वह आंकड़ इतात है। वास्तवत राज, जब इसी राप्ट में यह भी बताया गया कि सन 2050 तक वह जल उपलब्धता 1140 घनमीटर प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष कर सिम्ट जाएगी। तब जबकि आयादी बढ़ रही है, ऐसे उत्पादनों की संख्या लगातार बढ़ रही है, जिनमें जल का अव्यधिक व्यय होता है और जल की उपलब्धता लगातार कम होती जा रही है, मानन जाति को अप्रिय स्थितियों से बचाने का सबसे अच्छा तरीका हो सकता है कि वर्ष ब्रह्म में अस्तामान से मिन्ने वाले भानी का संख्या किया बाखा ब्रह्म में आसामान से मिन्ने वाले भानी का संख्या किया बाल स्थान के बता दरअसल, वैश्वक तिष्म ने जहां दुनिया भर के खुत्युक को बदला है और दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में होने वाली बरसात को 'पैटर' बदला है, वहीं भूजन के अध्याध्य 'तहन से जमीन के अंदर के पानी की मात्रा पिछले पांच दशकों में तेजी से कम हुई हैं। भारत जैसे देश में भूजल का लगातार विस्मकता हुआ रत्स नीति निर्धार्यों के लिए चिंता का विषय बना हुआ है। भारत एक कृषि प्रधान देश हैं। किसी भी कृषि प्रधान देश के लिए मानसुन की वर्षा उत्सव का कारण होती है। एरंपरावन तैए रह हमार पढ़ी मानसुन एक आनंद का अवसर रहा है। वह पीड़ी अभी भी सामाजिक जीवन में सिक्रय है, जिसते बचपन के कितने ही घंटे बारिश में भीगकर 'इंसर



राजा पानी दे, पानी दे गुड़-धानी दे' गाते हुए या सड़क किनारे इकट्ठा हो गए पानी में कागज की नावें तैराते हुए बिताए हैं। अब बच्चों की प्राथमिकताएं बदल गईं हैं, उनके खेल बदल गए हैं। मगर बारिश का मन तमाम व्यस्तताओं के बावजूद अभी भी मन को बौराता है

तर के दशक में गांव-गांव में पानी पहुंचाने के तिए नतकूप खोदे गए। इसी समय प्रयंगागत जल संस्वताओं क्सी समय परपरागत जल सरवानाओं के प्रति स्थान में जोक्षा का भाव बढ़ा और पुराने तालाब, कुंए, कुंड, बावड़ी एक एक करके क्षतिबारत होते गए। उनकी और ब्यान नहीं दिया गया। सड़के सीमेंट की हो गई। पुराने तालाबों के पेट्र में बरितयां बना दी गई, यानी धरती के गर्भ में जल जाने के रास्ते एक एक करके बंद कर दिए गए। नलकूपों के कारण भूजल का दोहन कई गुना बढ़ गया। बढ़ती आबादी ने उपलब्ध संसाधनों पर अतिरिक्त भार लाद दिया। परिणाम् यह हुआ कि घटता हुआ भूजल स्तर धीरे-धीरे सबकी विता का विषय हो गया। ऐसे में सबको वर्षा जल संग्रहण के लिए सतत सवेत और सिक्य रहना होगा।

प्राचीन काल में बरसात के पानी को संग्रहित करने के प्रति हमारा समाज बहुत सचेत था। जिस दौर में नलों के माध्यम से पानी घर-घर

नहीं पहुंचा था, तब लोगों की दिनचयां अपनी जरूरत के लिए जल प्राप्त करने की कोशिशों से मुरू होती थी- दिन बहुधा निर्देगे, कुओं, तालाब, होलों, आवडियों या कुंडों से पानी लाने से मुरू होता था। मनुष्य का एक स्वभाव है- जिस चीज से उसका स्वार्थ पूरा होता है, उस रिश्ते वा उस वस्तु के संस्थाण के प्रति वह सचैत रहता है। पूराने तालाब, बावड़ी, हुए आदि बहुधा चर्चा जल के प्रवाहत के रात्ने में होते थीं, यह कर व्यर्थ जा रहे जल को अपने अंतस में सहेज लेते थे। ये जल संस्वनाएं व्ययं जा रह जल का अपन अतस म सहज लत या व जल सर्पनाएँ न केवल वर्ष पर्यंत अपने आसमारा रहन चाल लोगों को जल सर्वाधी आवरणकताओं को पूरा करती थीं, वश्लिक इनमें जमा पानी रिस रिस कर। पूजल रुसर को बचाने और बढ़ाने में भी महत्त्वपूर्ण पूर्विका निभावा था। पुराने लोग इन जल सर्पवमाओं के संरक्षण के प्रति कितने सजग

पुराने लोगा इन जल संस्वनाओं के सरेखण के प्रति कितने सकार रहते थे, इसका अनुमान जेसलमेर के गहसीमार तालाब के सरस्वाव के लिए वनाए परिवारी से तालाव को सरस्वाव के लिए वनाए परिवारी से तालाव को सरस्वाव के रितार के पहले सफाई होती थी और रिवारत के महाराव खुद उसमें हिस्सा लेते थे। जब शासक स्वयं किसी कार्य में हिस्सा लेते थे। जब शासक स्वयं किसी कार्य में हिस्सा लेते और संभा के शास इस तालाव के लिए संपाण के लिए के लिए के लिए से लिए के लिए से लिए से सहस्वाव की जिम्मेदारी निभाती थी। घरती बरसा के बाद इस तालाव में महाना सरस्व मा बा। यह तालाव विषिष्ट संस्वनाओं के माध्यम से अन्य तालावों से जुड़ा था। इसका लाभ यह होता था कि कभी अगर जल की आवक औरक होती थी, तो बर पानी तालाव से बक्त में कारण जेका अबक किस होती थी, तो बर पानी तालाव से बक्त में कारण खेकार नहीं जाता था, बीस्तमेर राजस्वात के माध्यम से अन्य संस्वाद को आवक औरक होती थी, तो बर पानी तालाव से बक्त में कारण खेकार नहीं जाता था, बीस्तमेर राजस्वात के मध्यम से अर्थ के उस के स्वाव माता होता है। से स्वाव के स्वाव के संस्वाव के अर्थ के स्वाव को समझ सकता है?

18 मार अब इस अरूरत की सबकी समझना होगा, क्वॉकि घरती के अर्थ का आप भूजन वेता नहीं की साथ संस्वाव नियंत्रक की समझ सकता है?

18 मार अब इस अरूरत की सबकी समझना होगा, क्वॉकि घरती के अर्थ का आप भूजन वेता है। होती में से स्वाव के सुख संस्वाव में से स्वाव के सुख संस्वाव के सुख संस्वाव की सुख संस्वाव की सुख संस्वाव के सुख संस्वाव के सुख संस्वाव ही किए गए तो पेवजन को मार अर्थ का समुचित प्रवास के बाव कुत से अपने परिवार के लिए पेवजन की माज़ का स्वाव की संस्वाव के सुख संस्वाव के सुख संस्वाव की साथ संस्वाव के सुख सुख संस्वाव के सुख संस्वाव के सुख सुख सुख संस्वाव के रहते थे, इसका अनुमान जैसलमेर के गढ़सीसर तालाब के रखरखाव

बढ़ा। जाबाजा न उराध्य स्ताधाना पर जातास्त्र भार राध्य प्रमा परिणाम यह हुआ कि घटता हुआ भूजल स्तर धीरे-धीरे सबकी चिंता का विषय हो गया। ऐसे में सबको वर्षा जल संग्रहण के लिए सतत सचेत और सक्रिय रहना होगा।

## गुमशुदा प्याऊ

दुनिया मेरे आगे

'हाइजीन' के नाम पर ऐसा वातावरण बनाया कि

बोतलबंद पानी की आंधी में प्याऊ पूरी तरह उड़ गई है और पानी की मशीन भी कम ही

दिखाई देती है। यहां तक कि होटल, रेस्तरां, थड़ी-खोमचे वालों ने भी अब बोतल रखना शुरू कर दिया है।

छले कुछ सालों में बाजारवाद ने

सतीश खनगवाल

त ज्यादा पुरानी नहीं है। तब अपने गांव से पांच-छह किलोमीटर कच्चे मिट्टी भरे रास्ते पर पैदल चलकर लोग

ाधा नर रास्त पर पदल चलकर लीग उस स्थान पर पहुंचा करते थे, जहां से यातायात का कोई साधन मिला करता था। अक्सर पांच-दस लोग एक समृह में ही यह पैदल यात्रा करते थे। आपसी बातचीत में रास्ता कट जाता था। इस करते था। आपसी चालचीत में रास्ता कट जाता था। इस पंस्तत यात्रा में ये जगह पहांच हो आते थे। एक मोन-परकाम खेलड़ी के पेड़ के नीचे एक प्याक हुआ करती थी। इसमें पास के गांव के एक बुजुर्ग राहरीरी को पानी पिताते थे। एक अन्य स्थान था, जहां एक गांव के बाहर एक 'छतरी' बनी थी, जिसके नीचे भी एक प्याक थी। वहां एक मुजुर्ग महिला राहरीरों को पानी पिताती। बोनों ही स्थाप पर लोग थोड़ी देर बैठते, सुस्ताते टंडा पानी पीते और फिर अपना गरना प्रस्त लेवे

पर लाग थाड़ा दर बठत, सुरतात ठडा पाना पात आर एकर अपना रारता एकड़ लोते। उस समय प्याऊ के रूप में किसी सड़क या रास्ते के किनारे, छोटे-बड़े बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन, आदि पर एक छोटी-सी झीएडी डाल ली जाती थी। इसमें दस-बारह पानी के

था। इसम दस-बारह पाना क घड़े होते थे। झोपड़ी में एक छोटी-सी खिड़की निकाल दी जाती थी, जिसमें रामझरा, सागर, लोटे आदि की सहायता से प्यासे राहगीरों को पानी पिलाया जाता। प्यासा पथिक प्याऊ की खिड़की पर व्यासा पायक प्याक का खिड़का पर बैठकर या आधा झुककर अपने हाथों की 'ओक' बना कर पानी पीता। छोटे-बच्चों के लिए उनके भागा-शिंद-चंद्या के (१९ उनक माता-पिता अपने हाथों की ओक बनाते। थके-मांदे प्यासे पथिक के लिए प्याऊ का शीतल जल किसी अमृत् से कम नहीं होता था। यह अनुभी की न केवल प्यास बुझाता, बल्कि उनकी आत्मा तक तुप्त कर देता था। जाते-जाते राहगीर अपनी इच्छानुसार अठन्नी-चवन्नी या रुपए

इच्छानुसार जठन्या-पचन्याचारवर्षः का सिक्का प्याऊ पर रख जाते थे, जो पानी का क्या ति स्वा जात पुरुष जाता पुरुष निर्माण का मोल नहीं होता था, बल्कि प्याऊ वाले के लिए धन्यवाद स्वरूप होता था। उन प्याऊ पर कोई बुजुर्ग महिला या पुरुष बैठते और

उन पाकि पर काई बुंजुं। माहला या पुरंश बठता आहे. राज़ारीं को भागी शिलातों उनके बुंज़ीयर चेंद्रों से स्नेह टफ्कता और वे बढ़ें प्रेम से पानी पिलातों। पानी पीती-पीज सोस न चड़ जाए, इसका भी ज्यान रखते। इसलिए पीजेंच-पीज में पानी की धार को रोक देते। कभी 'ओक' ठीक से न होने पर स्नेह से डांटनें-डफ्टरों। फिर समय बदला। प्याङ तेक जाह टंडे पानी की मधीना आ हो, कुछ समय फ्लंड तेक छोटे-बड़े होटल, रेस्तरां, खोमचे-बड़ी वाले सब अलग से

पीने का पानी रखते थे। शादी के पंडाल के बाहर दो-तीन भाग भाग पता (खता या शाया के पड़ारों के बाहर या निया इस पानी के भरे होते थे। एक व्यक्ति का बही काम होता था कि खाना खाने के बाद जो लोग पंडाल से बाहर निकलते, वह उनके हाथ धुलवाता और प्रेम से पानी पिलाता, लेकिन पिछले कुछ सालों में बाजारवाद ने 'हाइजीन' के नाम पर ापछल कुछ साला म बाजारवार न बिडाजा के नाम पर ऐसा वातावरण बनाया कि बोतनलबंद पानी की आंधी में प्याठ पूरी तरह उड़ गई है और पानी की मशीन भी कम ही दिखाई देती है। यहां तक कि होटल, रेस्तरां, बड़ी-खोमचे वालों ने भी अब बोतत राजना सुरू कर दिया है। आजकत तो शादी-ब्याह में भी पानी के लिए छोटी बोतल रखा जाना 'स्टेटस

व्याह में भी पानी के लिए छोटी बोतल रखा जाना 'स्टेटस सिंबल' यानी समुख का प्रतीक बन गया है। बोतलबंद पानी सोंधे-सीधे बाजारवाद से जुड़ा है। पांच रुपए प्रति बोतल से शुरू हुई कीमत चंद ही सालों में बीत रुपए प्रति बोतल रहे जु रहे हैं। बढ़ इतने मुनाफे का सीवा हैं कि बड़ी-बड़ी कंपनियां पानी के इस बोतलबंद धंधे में कूद पड़ी हैं। कुछ कंपनियां के पानी की बोतल के दाम सुनकत तो पैसे के तल की जामित विस्तर काए। सवाल यह है कि स्वास्थ्य के नाम पर हम जो बे बोतलों में बंद पानी का प्रयोग रूप में हैं कह प्रार्थ किया किया प्रार्थोग हैं कर रहे हैं, वह हमारे लिए कितना फायदेमंद है।

लिए फितना भावसंप्र है।

बास्विकता यह है कि
बोतलबंद पानी हमारे स्वास्थ्य के
लिए घातक सिद्ध हो सकता है,
क्योंकि पानी को अधिक समय
तक सुरक्षित रखने के लिए इसमें कई
तरह के रसायन मिलाए जाते हैं, जो
हमारे लिए खतरनाक साबित हो सकते हमार (लिए खतरनाक साबित है। सकत हैं। इनसे हमारी शारीरिक कार्यप्रणाली धीरे-धीरे कमजोर होने लगती है। बोतलबंद पानी से गैस की समस्या होना तो आम बात है। यह प्रजनन और तंत्रिका संबंधी विकारों को भी आर पात्रका स्वया पिकार का ना बढ़ा सकता है। यह गर्भवती महिलाओं, छोटे बच्चों और बुजुर्गों के लिए भी ठीक नहीं माना जाता है। हम सब जानते हैं कि प्लास्टिक

हमारी प्यारी पृथ्वी और उसके वातावरण के लिए सबसे घातक है। आज पालीथिन की थैलियों के बाद

सबसे ज्यादा प्लास्टिक की बोतलें इधर-उधर पड़ी मिलती है। पानी पीने के बाद लोग बोतलों को इधर-उधर फंक देते हैं। जहां भी पानी के संयंत्र लगते हैं, वहां से पानी का इतना अधिक दोहन किया जाता है कि चंद सालों में ही जुमीन का आधक यहिन किया जाता है कि चंद साला में हो जमान की पानी या तो यहा जा है या बहुत निचे चला जाता है। हमारी सम्यान, स्तंकृति और धर्म प्रारत्नों में प्यासे को पानी पिलाना बड़े पुण्य का काम माना जाता है। इसलिए लोग पहले के समय में प्याक लगाते थे। पर पुण्य का यह कार्य अब मुनाफे के सीद में बदल गया है। इस वर्ष पर्यकर गर्मी पड़ रही है। ऐसे में पुराने वर्ष को देख चुके लोगों को प्याक का वह जमाना याद आता रहा है।

हमें लिखें, हमारा पता : edit.jansatta@expressindia.com | chaupal.jansatta@expressindia.com

### मुसीबत की थैली

रकार प्लास्टिक की वैलियों और अन्य प्लास्टिक उपादों पर ग्रेक लगाने की बात करती रहतीं हैं, मगर उसका चावा खोखला साबित हो तह हैं। कहीं भी पहेखा बातना है कि लोग प्लास्टिक के खुतरों के प्रति अनजान हैं। वे प्लास्टिक की वैलियों में सामान

क खता के प्रात अनुना है। व प्लास्टक का यालवा म सामान लेती हैं और दुनावारा भी इनों में मामान की पैका करता है, क्योंकि वे योनों के लिए गुविधाननक हैं। सरकारी अधिकारी और नेता आदि बार न्यार प्लास्टिक की वैलियों के प्रति अगाढ़ करते हैं, मार जमीनी हकीकत यह है कि प्लास्टिक की वैलियों चलन में हैं। इससे बंदी बाता जाहिर होती हैं कि सरकारी अधिकारी बस दिखाने की कार्याई करते हैं। लोग प्लास्टिक के आदी हो गए हैं। ऐसा लगाता है कि इस आदत से मुक्ति साना मुश्किल हैं। आप रापा 'दापास-क' का आज तो एरे हा एसा प्रापता के कर का आत्म तो पुत्रता भागा गुरन्तरा है। आभे कर भी देखें हि लीग धातुं के बतते के बजाब प्लारिटक की एक बार इस्तेमाल करके फेंक के बात स्वाताल करके फेंक के बात है। इसका दुष्परियाग वह होता है कि सड़क पर गर्दागी के रूप में प्लारिटक को पे सामग्रियों ऐसी रहती हैं। वह हो हो चाहिए कि एसी समाग्री का उपस्त वर्च करवाया जाए। ऐसा होने से लीग अपने आप ही प्लारिटक की बैलियों में बंद सामग्री से मुक्त हो जाएंगे। दिलीप कुमार गुप्ता, बरेली

#### सबक के बजाय

मारे येश में धार्मिक स्थलों पर अक्सर होने वाले आयोजनों और बड़ा होने वालो भीड़ के लिए भीड़- प्रचंपन, सुरक्षा, पार्किन आदि की व्यवस्थाओं का रही से अकलान नहीं किया जाता है और न ही स्थानीय प्रशासन को उस आयोजन के कै स्थानाय प्रशासन का उस आयाजन के संभावित दुष्परिणामों का अंदाजा हो पाता है। इसके बाद फिर आयोजन की अनुमति न दी जाए तो लोगों की आस्था और भावनाएं आहत होती हैं और अनुमति दे दी जाए तो

वहां की व्यवस्थाएं संभाले नहीं संभातती हैं। हाल ही में हुए हाथरस हादसे की जांच चलंगी, दोषियों पर मुकदमें चलंगे, मारा लोगों को मालूम नहीं पड़ेगा कि दोषियों को सजा हुई या नहीं। तब तक देश के किसी और स्थान से धार्मिक आयोजन में होने वाले आर स्थान स शामक आयाजन म हान वाल हादसे की खबर आ जाएगी। आम जनामानस में ट्याप्त अंधभितित और भेड़चाल को जब तक समाप्त नहीं किया जाता है, तब तक ऐसे हादसे होने बंद नहीं किए जा सकते हैं। – नरेश कानूनगो, देवास, मप्र

#### लापरवाही की हद

खरा में सत्सां को समाजि के मीक पर हुए हारते के संदर्भ में लिखे गए 'हारतों के संदर्भ में लिखे गए 'हारतों के आयोजन' (संपादकीर, 5 जुलाई) में व्यवस्थागत कार्सियों को लेकर उठाए एए तमामा प्रश्न सर्वथा समीजीन हैं। इस विषय में कुछ और लाह जी ध्यावस्था है। तीन यहें के सत्सां ये क्या सामान्य संदम भी सीख कर नहीं ठंठ उसमें हिस्सा लेने वाले लोगा, आखिद क्यों है कि स्वस्टाना से बैंचे का प्रारंप के स्वस्टाना से बैंचे का प्रारंप के सुंख और की मदद करने के बजाय गिर पहुं लोगों को थरस में सत्संग की समाप्ति के

कुन्ततते हुए निकल जाना कैसे ज्ञान की निशानी है? बाबाओं या धर्मगुरुओं का अंधानुकरण किसी को क्या दे पाया है? जो बाबा हारता होने के बाद घटना-स्थल से फरार हो जाए क्या उसके प्रति कई लोगों का आज भी सकारात्मक तरीके से सोचना सही है? शिष्ट स्कारात्मक तराक स साचना सिका है राज्य होने की अपूर्ण पात्रता सुनिश्चित किए बिना और गुरु की समुचित बोंग्यता प्रमाणित हुए बिना किसी से क्या हासिल हो सकता है, सिवा विवेकहीन भीड़ का हिस्सा बनने के। र्द्रप्रवर चंद्र गर्ग कैथल

#### बिगडता भविष्य

अभा इस डिजिटल पूग में जाड़ी डिजिटल तरककी हमारे लिए वरवान साबित हो रही. है, वहीं इसके कई दुम्मरिणाम भी देखने को मिल रहे हैं। चिछले कुछ समय में इस वजह से कई रोपी भारिता हुई है, जिसके प्रश्न पत्र नहत तरीके से बाहर निकत गए। वे प्रश्न पत्र नहत तरीके हैं। चिछले के दुम्मरिणाम वह है कि इजारों, लाखों विद्यार्थियों को अपनी योग्यता के प्रदर्शन का अवसर नहीं मिल सकत। तमाम मामले सामने आने के बावजूद सरकार का इस तरफ रहनता से व्यान ने देना एक तरह से स्मक्ता को बातजा हो बहु जा सहस्त हो लोही मानता प्रजान है। लेहिन सरकार के इस दुम्मरिण इस समय अगर सरकार या दिखायों को भुगता पड़ता है जो इसकी परीक्षा दोते हैं। इसलिए इस समय अगर सरकार या सरकारी संगठनों द्वारा इस पर लगाम न लगाया गया तो यह भविष्य के लिए युखदायी बनता जाएगा। – *दिलीपरिसंह सोझ मूलाना, जैसलमेर* 

### नवभारत टाइम्स

### आतंकियों के मंसबे

जम्मू **कश्मीर** के कठुआ में सोमवार को सेना के काफिले पर हुआ जम्मू करमार क कडुआ में सामवार का सेना के काणिक पर हुआ आतकवादी इनाए इस बात की नए प्रेस से पुष्टि करता है कि बदले हालता में आतकी तत्व अपनी मीजूरगी का जरूर से जरूर और अधिकाधिक तीवता से अहस्सा कराना चारत है। हाल के दिनों में अंजाम दी जा गती आतंकी घरनाओं में कुछ नए पैटनं दिख रहे हैं जो कई तिकास मोत करने लायक हैं। निशानेपर जन्मू। इसी साल की बात करें तो जम्मू क्षेत्र में छह बड़ी



को देखते हुए कोई सामान्य बात का दखत हुए काइ सामान्य बात नहीं है। दूसरी बात यह कि घाटी में सुरक्षा बलों की बढ़ी हुई चौकसी के मद्देनजर आतंकी तत्वों ने जम्मू के अपेक्षाकृत शांत माने जा रहे इलाकों में अपनी सक्रियता बढाई है।

**लोकल सपोर्ट |** जिस सफाई से आतंकी वारदातों को क्षाना ६ ता आतका वारदाता की अंजाम दिया जा रहा है, इसके लिए उपयुक्त स्थान और समय को चुना जा रहा है, वारदात के बाद आतंकवादी मौके से सुरक्षित निकल जा रहे हैं, यह सब बगैर स्थानीय स्मार्थक के रंग्य ज्ञा <sup>3</sup>

समर्थन के संभव नहीं हैं। स्विप्त हों अतंत्र हरकतों में हुए इस इजाफे को खुफिया तुर्जे से मिली इस सूचना से अतग करके नहीं देखा जा सकता कि करीब दो महीने पहले हो सीमा पार से बुझे संख्या में आतंकवादियों को सुप्तरें कर मंद्र हैं। हो होला आतंकवादियों को सुप्तरें कर मंद्र हैं। हो होला आतंकवादियों को स्वाचित्र से गोर करें तो साफ हो जाता है कि प्लानिंग से लेकर इम्प्लोमेंटेशन तक पूरी प्रक्रिया अब्बेश तरह प्रशिक्त लोगों द्वारा अंजाम दो जा रही हैं। प्रक्रिया अब्बेश तरह प्रशिक्त लोगों होंग अंजाम दो जा रही हैं। प्रक्रिया अब्बेश तरह प्रशिक्त लोगों होंग अंजाम के दो जा रही हैं। के सामा पार देने आताओं का मकस्द जम्मू करमाँग से आगामी चुनावों को प्रक्रिया को प्रक्रिया को स्वक्ता है। पिछले लोकसभा चुनावों में हुए 58.6% मतदान ने निश्चत रूप से आतंकवादियों के आताओं को परेशान किया होगा, जो पिछले उत्तरों को उत्तरों को अज्ञाओं का परेशान किया होगा, जो पिछले उत्तरों के उत्तरों को अज्ञाओं का परेशान किया होगा, जो पिछले उत्तरों के उत्तरों को अज्ञाओं का प्रशास क्या हो।

35 वर्षों का जम्मू कश्मीर का सबसे ऊंचा मत प्रतिशत है। चाल न हो सफल | ऐसे में इन आतंकी घटनाओं पर काबू पाना धाता न हा संकला । एस में इन आतका घटनाओं पर काथू पाना तो महत्तपूर्ण हैं हैं, लिकिन सबसे महत्त वेत सु तिशियन करना होगा कि आतंकी तत्वों के मंसूबे पूरे न हों। चुनाव हर हाल में सूक्षेम कोट द्वारा तत्र की गई 30 सितंबर की समय सीमा के अंतर संस्नन किए जाए औत कम्मू करमीए को उपन का दर्जा भी जल्द से जल्द दिया आए। आदिवा आतंकवाद की जड़ में मूड़ा डालने का एक प्रभावी तरीका निर्णय प्रक्रिया में लोगों की भागीदारी सनिश्चित करना भी है।



### साड्डी दिल्ली

#### राजधानी में रूस

विवेक शुक्ला

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से बीते दिनों मास्को में शिखर वार्ता के बाद प्रधानमध्या नरद्र मादी स बती दिनी मास्को में शाखर बता के बाद स्कून के पत्नी में रूक के प्राप्टपति कारियोंस पूतिन ने वाज्यानी दिस्ती में अपने देश के प्रतीकों का जिक्र किया होगा, ऐसा कहना तो आसान नहीं है। जिंकन पुतिन के लिए पारत को राजधानी में रूस के प्रतीकों की तालाजा जरूर आसान है। चाजप्यपूर्ण में रूसी ऐसी के कवीब नेहरू पार्क में रूसी क्रांति के जनक व्लादिमीर लेनिन की आदमकट मूर्ति है। पांक में इस्सी क्षेतात के जनके क्लादिमार लागन का आदमकर मुनित है। लीगन को मृति वहाँ जा 15% में स्थापित हुई थी। इसकी स्थापण के वस्त रूस के तब के प्रधानमंत्री निकोलाई रिप्सानकोव तो थे ही, राजीय गांधी और सीमिया गांधी भी मीजुर थे। राजीव गांधी तब देश के प्रधानमंत्री थे। अगर राष्ट्रपति पुलित कभी कर्नाट प्लेस एरिया में तथापित लाएं तो उन्हें सिनों प्रतिकृति मांधी अपने कुछ दूर मोंदी हाइस में इस्सी कवि पुलिस्त की आदमकर प्रतिथा। पुलिस्त को प्रतिमा के इस्तीन्ति राज्य स्थापित करा स्थाप करा है। काव पुश्कन का आदमकर प्रतमा। पुश्कन का प्रातमा के इद-गा-ए सुक्त-शाम रोगक लगी रहती है। टॉलटपंटम मानं, बारायंका रोड से शुरू होकर संसद मार्ग तक जाता है। संसद मार्ग की सीमा पर यह समाग्र हो जाता है। यह एक किलोमींटर से भी कुछ छोटी सड़क है। टॉलटपंटी की एक प्रिमा जनस्थ पर जवाहर व्यापार पर्समा के सुई है। राजधानी के पुराने लोगों को यह होगा कि

टॉलस्टॉय मार्ग का पहले नाम था सर हेग कीलिंग रोड। कीलिंग चीफ इंजीनियर थे, जब नई दिल्ली रोड। कीलिंग चीफ इंजीनियर थे, जब नई दिख्ली का निर्माण है राह था। इस एडिविन लुटियन के साथीं थे। डी., 1970 के आसमस् कीलिंग रोड का नाम हो गया 'वार एंड पीस' जैसे कालकर्य उप्तासा के लेखक के नाम पर टॉक्क्टर्डिय की कालकर्या रचनाओं का असर गांधी जी पर भी हुआ था। दोनों के बीच चिट्ठी-पत्री भी चलती थी। पुष्टिकन को मूर्ति के करोत वे फिरोक्शाह रोड पर रूसों यूचना केंद्र है। यहां रूसी फिर्च्यों के प्रदर्शन के उपलाब पेस चीपनात्रीण होतों रही है। इसर आकर मगहूर एक्टर क्लाफ साली ने कुछ गोण्डियों को संबोधित भी किया है। करीब तीन दशक पहले नक रूसों ऐसी का एक टफ्तर बारखंबा रोड पर भी था। उसर, चाणकस्पुरी में रूस बाराखबा राड पर मा था। उबर, पाणक्यपुरा म रूस के भारत में राजदूत रहे अलेक्जंडर कदाकिन के नाम पर सड़क हैं। वह भारत के सच्चे मित्र थे। उनका 2017 में निधन हो गया था।

#### एकदा

### मैं भी बादशाह

**लखनऊ में** जब नवाब आसफुद्रौला का देहांत हुआ तो तख्त पर सआदत खां विराजमान हुए। तब तक मीर लखनऊ में ही थे, लेकिन उन्होंने दरबार जाना बंद कर दिया था। एक रोज नवाब साहब सवारी से जा रहे थे। मीर तहसीन मस्जिद के पास सड़क पर बैठे थे। जब स जा रह था भार तहस्रमा मास्तद क पास सड़क पर बेटे थी जब ग्याब्स महाब की अवारी करीव आहे तो बहा मीजूर सब गणा उठ सहे हुए, लेकिन मीर बेटे रहे। वह नवाब की इज्जत मे बढ़े नहीं हुए। संबद इंसा नवाब के खास लोगों में शामिल मे नवाब ने उनसे पूछा, 'इंडाए दें की वा क्रिक्त कमाई ने उसे उठने नहीं दिवा? इंसा ने कहा, 'अंडिंग्स के बीना बार मार्डिंग एकार है, जिससा जिक्र आपने अक्सर सुना है। महाने कर का स्वार के गणा किया कर में गणा



डा फकार है, ाजसका जिस आपना अक्सर सुना है। - गूजारे का बुध हाल है और मिजाजा कर ये हाल है। आज भी यह खाली पेट ही होगा।' सआदत खा ने महल पहुंचकर मारे की दरबार में बहाली की और उन्हें एक इजार रुपये भिजवाए। चोबदार जब इनाम लेकर मीर तकी मीर के पास पहुंचा तो उन्होंने कहा, 'मिरिजद में भिजवाहए।

पहुँचा (१) उनके कहा, मास्तद मा भाववाद्गा स्व गुनहाग हुना मोहताव नहीं। सवादत अली खान मीर का जवाब सुनकर बेहद हैरान हुए। उनके खास दरलारियों ने समझाया तो सैयद इंगा से नवाब साहव ने कहा कि वह खुद दे सब लेकर उनके पास जाएं इंगा वन मीर के पास पहुंच तो उन्हें समझाया, 'गीर साहब, अपने लिए ना सही, अपने परिताप रर हम कर बारणा का इनाम कुक्त करणाहए।' गीर का जवाब आ, 'वो अपने मुल्क के बादशाह है, मैं अपने मुल्क का बादशाह हूं। मेरे पास एक दस रुपए के नौकर के हाथों इनाम भिजवा दिया। इस फकीर को फाके कुबूल हैं, लेकिन इस तरह की जिल्लत

नैशनल रैली को रोकने के लिए तमाम दल एक तो हो गए, पर इससे नई राजनीति शुरू हो गई है

# स में गढबंधन सरकार के क्या



इस महीने के आखिर में शुरू हो ऐसा लग रहा था कि यह पार्टी चुनाव रहे पेरिस ओलिंपिक से ठीक पहले वाली है। फ्रेंच नैशनल असेंबली के आकरिसक चुनावों के नतीजों ने फ्रांसीसी राजनीति

चुनाव क नताज न प्रकाससा प्रजनात निशान प्र की पूर्णने दारों को और विटल वना देशी । स् क्यां सिंह स्थापना से आज तक, पहली बार इस हो लोकांह तरह के खंडित परिणामों के चलते गठबंधन सरकार का के आवनन एक नया अध्याप पुरुक्त हैं रहा हैं। वक मैंकों के लिए वि दो धी सबसे बड़ी चुनीती होगी गठबंधन दस्तों से जूझना। उनका

इसकी अध्यक्षता जीडन बाईडला ● नेशनल रहें लो का कर लगातार बढ़ रहा असमवर्ती में सबस बढ़े हरत से प्राप्त कर रहें हैं। उन्होंने प्रवासन, ● यूक्रेन मस्तेश पर मैक्कें पर पहेंग दखब में कर रहें हैं। उन्होंने प्रवासन, ● यूक्रेन मस्तेश पर मैक्कें पर पहेंग दखब में अधिक बोट जीतने होते हैं। यदि कोई भी इस सीमा को पर रख को नत्स किया है, जो आशिक रूप से उनकी बढ़ती को अलग-अलग रूलों से कैकिंग्ट चुनने की अनुमति किरता है, तो 12.5% से अधिक बोट के उन्होंने पर सामा को पर स्थास के नित्स किया है, जो आशिक रूप से उनकी बढ़ती को अलग-अलग रूलों से कैकिंग्ट चुनने की अनुमति है। स्थास में जो हैं। इस रूप में सबसे अधिक बोट के इसरे रूप से प्रतास किया है, जो आशिक रूप से उनकी बढ़ती को अलग-अलग रूलों से कैकिंग्ट चुनने की अनुमति है। स्थास में जो से किंग्य चुने गए 76 उम्मीदिवारों में से 39 राष्ट्रीय रिता से थे। यापस ले लिया। गीर-र्दाक्षणपंथी बोटों का यह एककिरण अलग-अलग रहतों से होंगे। लेकिन इससे यह सुनिधिवार

निशाने पर नैशनल रैली | सन 1972 में नैशनल रैली की स्थापना न गरानल की स्थापन होलोकॉस्ट जीन-मैरीले

कार्यकाल पूरा होने से तीन साल पहले ही अचानक केवल तीन हफ्ते में

चुनाव कराने के पीछे मैक्रों का यही एक बड़ा मकसद राष्ट्रपति मैक्रो शक्तियो से इस दल को और भी

> कौन होगा पीएम अधिकांश अधिकाश उदार लोकतंत्रों के विपरीत, फ्रांसीसी राष्ट्रपति के लिए यह बाध्यकारी नहीं है कि वह नैशनल असेंबली में सबसे बड़े दल से ही अपने प्रधानमंत्री का चयन

नैशनल रैली को सत्ता तक पहुंचने से रोकने होगा कि उनकी गठबंधन सरकार को रोजमर्रा के काम में में सफल रहा। विधायिका के कम विरोध का सामना करना पड़ेगा।

प्रधानमंत्री की शक्ति । फ्रांसीसी संविधान का अनच्छेद प्रधानमंत्री की शिक्ति। जारीसी संविधान का अनुकेट 49 सरकार को बिना सेट के बानून पारित करने की अनुमति देता है। सदन के नेता के रूप में यह शक्ति प्रधानमंत्री के पास रोती हैं। विधायक केवल अधिक्यास प्रस्ताव लाकर ही ऐसे विधेयकों को पारित होने से रोक प्रकार है। उन्हें यह केवल 24 मंदे के भीतर करना होता है और ऐसे निर्णय को रोकने के लिए एक्ट 289 खोटों की आयरयकता होगी। राष्ट्रपति मेक्को ने अपने पहले कार्यकाल के दौरान एक बार और दूरसे कार्यकाल के दौरान 11 बार इस शक्ति का उपयोग किया है।

मैक्रों की चिंता | राष्ट्रपति मैक्रों को गठबंधन के भीतर के विरोध की चिंता होगी। उदाहरण के लिए, सबसे बडे के विरोध की चिता होगी। उदाहरण के लिए, सबसे बड़े "स्यू पॉय्युलर कर में समाजवादी, क्यूमेलर, प्रवादण और सामाजिक त्याय वाले, कट्टर वामपंथी जीन-ल्यूक मेलेनबॉन का "फ्रांस अननीएड" - सब शामिल हैं। मेलेनबॉन का नाम पंपाप पढ़ के लिए त्यू पॉयुलर फ्रंट की जवांओं में है। वक पहले ही इस चुनावी फैसले को प्राप्यात मेकों को नैतिक हार बता चुके हैं। उनकी मांग है कि राष्ट्रपति मेकों की नैतिक हार बता चुके हैं। उनकी मांग है कि राष्ट्रपति को नैशनल असेवलों के सबसे बड़े ब्लॉक यानी न्यू पॉय्युलर फ्रंट से ही प्रधानमंत्री चुनना होंगा।

संतुलन की चुनौती | नैशनल रैली के नेता रूस के करीबी माने जाते हैं। वामपंथी भी रूस-यूक्रेन युद्ध को जल्द समाप्त करने का आह्वान कर रहे हैं। ऐसे में मैक्नों के जिए संतुष्त वर्षा गढ़ आक्षा अर्फ है। एक न नाम हिल लिए संतुष्त बनाए रखना मुश्किल हो सकता है। अपने राष्ट्रपति पद को निष्क्रियता के लिए याद किए जाने से बचाने को उन्हें वाम और दक्षिणपंथ के उन नेताओं को तलाशना होगा, जो मध्यमार्गी रुख के साथ जुड़ सकें। (लेखक जेएनयू में प्रफेसर हैं)

# 



हुर चा। इसपा रास्त्र है शहरों को बेहतर और रहने लायक बनाना। हाल ही में इस मिशन को एक साल

का एक्सटेशन मिला। संसदीय परामर्श समिति की रिपोर्ट के संसदाय परामश सामात का तिराट क मृताबिक, मिशन के तहत जून 2024 तक 1.8 लाख करोड़ रुपये कीमत के 7,800 प्रॉजेक्ट पूरे होने थे। इनमें से 1.1 लाख करोड़ रुपये की परियोजनाएं अभी तक पूरी

कुराल प्रशासन । शहरों को बदलने में सबसे बड़ी बाधा है डेटा जुटाना और सही फैसले लेने के लिए उनका विश्लेषण करना। इसमें इंटीग्रेटेड कमांड एंड कंट्रोल सेंटर (ICCCs) की महत्वपूर्ण भूमिका है। ये सेंटर बेहतर योजना और विकास में शहरों की मदद कर रहे हैं। अब सभी स्मार्ट शहरों

शाहर कादिमाग | ICCCs शहर के अलग-अलग कममें को देखने और मैनन करने के क्लाइमेट जेंक के हिसाब से बदनने और क्ला कममें को देखने और मैनन करने के क्लाइमेट जेंक के हिसाब से बदनने और किए एक सेंद्रल पैसीलिटों की तद कमा विकिन्स सेंदर को चुनीतियों का समाधान पैसी की समस्या | विनीय स्थिता के

स्मार्ट सिटी मिशन करते हैं। ये सेंटर स्मार्ट शहर के दिमाग जैसे की शुरुआत 2015 में हैं। कई सिस्टम को आपस में जोड़कर शहर हुई थी। इसका लक्ष्य के काम करने का तरीका बेहतर बनाते हैं। इनमें बड़ी विडियो वॉल जैसी सुविधाएं होती हैं, जिससे real-time monitoring हो सकती है और इमरजेंसी में तुरंत रेस्पॉन्स किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, इंदौर नगर निगम ने कचरा प्रबंधन के लिए GPS आधारित वाहन ट्रैकिंग और मॉनिटरिंग सिस्टम (VTMS) लगाया है। इससे वेस्ट मैनेजमेंट बेहतर हुआ है।

> समय की मांग | Integrated Command and Control Centre करने में ICCCs महत्त्वपूर्ण भूमिका का मुख्य तथ्य स्थानीय और राज्य निमा सकते हैं। ये सेंटर विभिन्न urban एजेंसियों को आपस में मिलकर काम करने management institutions को साथ एजासवा का आपस म मिलकर काम करन में मदद करना है ताकि शहर की सेवाएं और इंफ्रास्ट्रक्चर बेहतर तरीके से चल सकें। शहरीकरण तेजी हो रहा है। 2036 तक करीब 60 करोड़ लोग शहरों में रह रहे होंगे। इतनी बड़ी आबादी के लिहाज से टिकाक इंफ्रास्ट्रक्चर और स्मार्ट सलुशन



चिंता की बात | ICCCs बेहद फायदेमंद हैं, लेकिन इन्हें चलाने में बहुत खर्च आता है। कई शहरों के पास इतने पैसे नहीं। ICCCs को स्पेशन पर्पंज बीकल (SPVS) द्वारा चलाया जाता है। ऐसे में यह भी सवाल है कि बेहतर गवनेंस के लिए स्थानीय निकाय के साथ इनका integration कैसे हो।

लिए Public-private partnership महत्वपूर्ण हैं। इसके बाद भी अभी केवल 21% फाइनैसिंग ही PPP के तहत होती 21% नगरी जिस्ता है। मार प्राप्त है। है। वर्ल्ड बैंक की एक रिपोर्ट के मुताबिक, बढ़ती आबादी की जरूरतों को पूरा करने के लिए भारत को अपने शहरी इंफ्रास्ट्रक्चर में हर सुल 55 बिलियन डॉलर लगाने की जरूरत है।

भरोसा बना रहे । ICCCs के जुटाए डेटा को स्टार्टअप्स और social entrepreneurs के साथ साझा किया जा सकता है ताकि शहरों में इनोवेशन को बढ़ावा मिले। Smart Cities Promoting Innovation Research Promoting Innovation Research and Incubation in Technology (SPIRIT) जैसी पहल को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। जब शहर डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन की ओर बढ़ रहे हैं, तब डेटा सिक्यारिटी और प्राइवेसी को लेकर सख्त नियम बहुत जरूरी हैं, जिससे जनता का विश्वास बना रहे। रेगुलर सिक्यॉरिटी ऑडिट और पारदर्शिता से इस तरह के कमांड और कंट्रोल सेंटर्स के प्रति जनता का भरोसा बढ़

(लेखिका The Energy and Resour Institute में रिसर्च असोसिएट हैं)



## बांटो. यह उतनी ही बढती है

संजय तेवतिय

सभी जीवों में ईश्वर का स्वरूप है।' यह विचार हमारे जीवन के हर पहलू को प्रभावित विचार हमार जावन के हर पहलू का प्रभावत करता है। यह बताता है कि हम एक ही दिव्य स्रोत से जुड़े हुए हैं और हमें एक-दूसरे के प्रति प्रेम, आदर और करुणा का व्यवहार करना चाहिए। जब हम मानते हैं कि सभी जीवों से ईश्वर का नाता है, तो हम हर जीवित प्राणी से

जुड़ने लगते हैं। जब हम सभी में ईश्वर का रूप देखने लगते हैं, तब सबसे पहले हमारी आत्मा की सफाई ्, तब सबस ४६०ए हमारा जातमा का स्वकृष्ट होती है, फिर समाज में भी सुधार होता है। ऐसे लोग एक-दूसरे की मदद के लिए तत्पर रहते हैं। वे किसी भी प्रकार का अन्याय और अत्याचार् नहीं करते। यह विदार हमारे आत्म-विकास में भी सहायक होता है। हमारा अहंकार ावकास में भा सहायक हाता है। हमा अहकार कम होने लगता है। हम अधिक विनम्न और द्यालु बनते हैं। हम सभी धर्मों और संप्रदायों में ईश्वर का वही विराट स्वरूप देखने लगते हैं, जो हम अपने अंतर्मन में पाते हैं। फिर किसी के प्रति गलत करना हमें अधर्म लगने लगता है। ऐसे विचार अपने अंदर की संवेदनाओं को परस्वने के लिए लिटमस टेस्ट की तरह है। यह हमारे विश्वास और आस्था की सचाई को भी

खत ह। कहते हैं कि महादेव उसी के दिल में विराजते , जो भोला है, निश्छल और दयावान है। हैं, जो भोजा है, निफछल और दायावान है। भोक्त हो नहीं, आज्ञास से जुड़ाव का भी यही सहज उपाय है। गृहस्थ में रहते हुए भी शुद्ध मन और आयरण में दाया रहनीं जरूरी है। जब दिल में भोलापन रहता है तो हमारे हाम स्वयं ही सेवा के लिए प्रस्तृत हो जाते हैं। होया क्या है? सेवा सामें चाले में ईच्यर को देखने का एक रास्ता ही तो है। और जब हमें प्रत्येक प्राणी में

रास्ता हा ता हा आर जब हम प्रत्यक प्रणा म इंश्वर दिखने लगते हैं, तो हम उनसे एकाकार हो जाते हैं। हम जान जाते हैं कि ईश्वर के रूप अनेक हैं, पर स्वरूप एक ही हैं। बहुत लोगा इसके लिए ज्यान करते हैं तो बहुत से लोगा सेवा, दान-पुण्य करते हैं। ध्यान ईश्वर के साथ एकाकार होने के लिए किया जाता है। वहीं एक भोला हृदय सेवा के जरिए अपने आप ईश्वर को अपने पास पा जाता है। अपने आप इस्टम का अपने पास था जाता है। इसके बाद हम पाते हैं कि प्रभु किसी समय या स्थान में सीमित नहीं हैं, बल्कि वह एक ही समय में हर जगह मौजूद हैं। दोनों ही रास्ते हमें ईश्वर की ओर लेकर जाते हैं। परमात्मा ने इस जगत को आत्मा के आनंद और कल्याण इस जगत को आत्मा के आनद और कल्याण के लिए एचा है। वह सभी का न्यायकर्ता है, इसीलिए कहते हैं कि सभी को उसके हिस्से का मिलकर ही रहता है। परमाल्मा चाहते हैं कि हम सब्बी निस्वाध भाव से सेवा करे। यहाँ उनकी सच्ची पूजा है। पूजा के सारे विधान मानसिक शांति देने वाले होते हैं। जिसे जो भी रास्ता

शाति दन वाल होत है। जिस जो भी रास्ता रुचिकर लगे, वह चुन सकता है। बड़ी बात यह है कि इस रास्ते पर चलने के लिए किसी प्रेरणा की नहीं, बल्कि दिल में भोलेपन की और दिमाग में दया की जरूरत होती है। जिसका हृदय प्रेम से लबालूब है, उसकी आत्मा पर किसी का वश नहीं चलता दया. निश्चळलता आदि ईश्वरीय वरदान है। पत्रा, गत्यक्षणता आहा इस्तराव पर्यस्ति । यह हम सबके पास बराबर गात्रा में हैं। न किसी के पास कम हैं, न किसी के पास ज्यादा। बस करना यही हैं कि इसे सबको देते रहना है। जितना देंगे, यह उतना बढ़ता है और उतने ही हम ईश्वर के करीब आ जाते हैं।

## अकबर के नाम पर क्यों बना चर्च

(3)

18 फरकरी 1580 यही वह नारीख थी जब बाटणाह 18 फेरवरा 1580, यहां वह ताराख था जब बादशाह अकदर से मिलने तीन जेसुइट पादरी आगरा पहुँचे। दूसरे धर्मों के बारे में जानने की बादशाह अकदर की ललक को देखते हुए इन तीनों पुर्तगाली पादरियों ने गोवा से आगरा तक का लंबा रास्ता तब किया था।

अकबर चर्च | अकबर ने सम्मान के साथ इन पादरियों का स्वागत के साथ इन पादिस्यों का स्वागत किया। उन्होंने प्रस्ताव दिया वि क्यों न स्थानीय धार्मिक विद्वानों के साथ जेसुइट पादिस्यों की बहस कराई जाए। कहा जा सकता है कि इस तरह के वाक्यात से ही आगरा में ईसाई धर्म और संस्कृति आगरा म इसाइ धम और संस्कृति का प्रचार-प्रसार हुआ। आगरा उक्त वक्त मुगल साम्राज्य की राजधानी था और अक्सर ही वहां फ्रांस, पुर्तगाल, इंग्लैंड, इटली जैसे देशों से व्यापारियों और दूसरे लोगों का

स व्यापारिया आर दूसर (लागा का आना-जाना त्या या। उनके प्रभाव में कुछ स्थानीय लोग ईसाई धर्म अपनाने लोग फिर एक चर्च की जरूरत महसूस हुई, तो अकबर ने इसके लिए एक आर्मीनियाई बस्ती के पास जमीन दान की। इस तरह 1598 में

'जनकर चर्च' को स्थापना हुई।

वीशु पर नाटक । इतिहासकार आरवी स्मिथ के सुताबिक, क्रिस्तमस की सुबह खुद बादशाह अकदर अपने दरवार के नदराने के साथ इस चर्च में तरहारेफ लाते थे। शाम के हर मके ख्वानीत और हाजादियों आती। यही वह दौर था जब भारत में यीशु जन्म के नाटकों के मंत्रन को शुरुआत हुई। तिसमें यूरीपों बलों भूपिका निभाते थे। बादशाह अकदर एक दर्शक के तौर पर इन नाटकों का मुंत्रन लिया करते। यह परंपरा अकदर के बुद बादशाह जहांगी के शासनकार में भी जारी रही। और, समय के साथ नाटक का आयोजन अकबर चर्च' की स्थापना हुई।

ज्यादा भव्य होता गया। इसके लिए फुलत्ती इलाके में जोरदार रिहर्सल की जाती। इन सबसे मुगल शाही म जारदार रिहसले का जाता। इन स्वयस मुराल शाहा परिवार गहरे तक जुड़ गया और उस पर इसका काफी असर भी पड़ा। बात यहां तक पहुंच गई कि सन 1610 में इसी चर्च में जहांगीर के तीन भतीजों का वपतिस्मा

अब्दाली का हमला | शाहजहां के शासनकाल मे इस्लाम में यकीन रखने वाले इस्लाम में यकीन रखने वाले मुगल दरबार और पश्चिमी इंसाइयों के बीच भाइंचारे और दोस्ती की तस्वीर फीकी पड़ने लगी। पुर्तगालियों के साथ बादशाह शाहजहां की टकराहट बादशाह शाहजहां का टकराहट की सजा जेसूट पादरियों भुगतनी पड़ी। उन्हें कैदरखाने में डाल दिया गया। बाद में, 1635 में उन्हें रिहा किया गया। उसी साल चर्च को ढहा दिया गया। कुछ फेरबदल के साथ 1636 में इसे वहीं पर दोबारा बनाया गया।

हस वहा पर दावारा बनाया गया। पूराल सालनात का उपनी हाला पर थी तो हिंदुस्तान पर अहमद शाह अव्याली का हमला हुआ। उसकी जैजों ने अकबर चर्च के तहस-नहार कर दिया। एक यूरोपीय साहसी यात्री वॉल्टर रेनहार्ट ने इस चर्च की दोबार

टाइम

खां जा निकाला। चर्च परिसर में मकबरा | प्रार्थना सभाओं के लिए ज्यादा जगह की जरूरत को देखते हुए 1848 में बगल में ही एक बड़ा चर्च बनवाया गया, जो अब एक कैथेडूल है। उसी दौर में आगरा में कुछ प्रोटेस्टेट चर्च कथड़ल है। उसा दौर म आगरा म कुछ प्रास्टरट चय बनने भी शुरू हुए। इनमें सिकंटरा स्थित सेट जीनं चर्च सबसे अहम है। इसे 'निश्चन चर्च' के नाम से भी जाना जाना जाता है। औपनिवेशिक काल में इस चर्च का परिस्स काभे दूर तक फैला हुआ था। अकबर की एक बेगम, मिरप्स उज-जमानी का मकबरा इसी परिसर

## सहूलियत या काम?

प्रणव प्रियदर्शी

इसी सप्ताह सप्रीम कोर्ट ने महिलाओं को पीरियडस के दौरान इसा स्पाह सुप्राम काट न माहलाओं का भारवहस्य क दारान होने वाली तकलीफ के महेनज छुटी देने की व्यवस्था अनिवार्य करने का एक अनुरोध नामंजूर कर दिया। ध्यान रहें, शीर्ष अदालत इस अजी के पीछे निहित भावना के खिलाफ नहीं है। वह इससे सहमत है कि कामकाजी महिलाओं को ऐसी सहलियत मिलनी चाहिए। फिर भी अगर उसने इस बारे में कोई निर्देश जारी करने से परहेज किया तो इसलिए क्योंकि उसे दर है

निर्देश जाती करने से परतेज किया तो इसलिए क्योंकि उसे डर है कि ऐसा करना महिलाओं के लिए ही मुक्सानेदर हो सकता है। उत्पासल देश की सर्वोच्च अदालत को ऐसा लगता है, और इस संभायता से इनकार भी नहीं किया जा सकता कि अगर महिलाओं को पीरियहस के तकलीफ वाले दिनों के लिए छुट्टी की व्यवस्था अनिवार्य को गई तो कंपनिया और रखना बंद या कम कर देंग। जाहिर है, ऐसा हुआ तो वर्कमोसे में महिलाओं का प्रतिशत और कम हो आणा। वर्कमोस में महिलाओं को भागीदार्य का राष्ट्रीय औरत

जाएगा। वर्कफोर्स में महिलाओं की भागीदारी का राष्ट्रीय औसत आज भी अपने देश में करीब 37% ही है जो 50% के ग्लोबल आज भी अपन दश भ कराब 37% जा र ... उर्घाट प्रतरेज से काफी कम है। जाहिर है, अपने देश में आज भी कंपनियां और

महिलाओं की भागीदारी की अहमियत ठीक से समझ पाए म माहताओं को भागादारा को अहामपत उनके से समाई पाए हैं, न उनमें महिलाओं की रिस्मित, उनकी जरूरतों को लेकर संवेदनशीलता पनप पाई है। इस मामले में हम कितना पीछे हैं इसका अंदाजा इस तथ्य से होता है कि कई संवेदनशील राष्ट्र, अरस्ता पहले इस दिशा में टोक करना ठठा चुके हैं। सोवियत रूस में भी पीरियङ्स के दौरान दर्द की वजह से काम पर न

रूस में भी भीरियहर के दीरान दर को वजह से काम पर न आने वाली महिलाओं को भुगतान करने का नीतिगत फैसला लिया जा चुका था। जापान इस आशय का कानून 1947 में ही लागू कर चुका है। साउथ कोरिया में यह 1953 से लागू है। लिकिन हमारे खांड रहें कि ऐसा किया जो मिहिलाओं काम का जो मीका मिल रहा है वह भी उनसे छिन जाएगा। है ना हम नारियों की पूजा करने वाले' देश!

#### रीडर्स मेल 📣 www.edit.nbt.in

■ मिट रहीं धारणाएं

10 जुलाई का संपादकीय 'सबको सही संदेश' पढ़ा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी दो दिन की रूसी यात्रा को सफल माद्रा पित के लिस वाज के संभव कुटनीतिक अंजाम दे चुके हैं। इस पर यूक्रेन और अमेरिका ने अपनी प्रतिक्रिया दी है। बावजूद इसके नरेंद्र मोदी ने रूसी राष्ट्रपति पूतिन के साथ हुई बातचीत में युक्रेन युद्ध को नकारने का समरकंद मे द्विया गया 2022 का बयान दोहराया है। अंतरराष्ट्रीय जगत में भारत का स्पष्ट अंतरराष्ट्राय जगत म भारत का स्पष्ट संदेश गया है कि वह इस पक्ष या उस प के दबाव के आगे झुकने वाला नहीं है। पीएम मोदी की इस यात्रा से वह धारणा

भी मिट गई है जिसमें दुनिया को लगने लगा था कि भारत अमेरिका और पश्चिमी देशों के दबाव में रूस से दूरी बनाए

माम चंद सागर, ईमेल से

यह पत्र 10 जुलाई के लेख 'एतराज की राजनीति से नहीं बनेगी बात' से संबंधित राजातात स नहा बनना बाता स स्वायता है। बिडंबना है कि हमारे यहां चुनाव-दर-चुनाव गैर-जिम्मेदाराना राजनीति का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। सत्तारूढ़ दल और विपक्षी दोनों ही जनता के लिए कम और अपने राजनीतिक अवसरों को भुनाने के लिए संसद का ज्यादा इस्तेमाल करते दिखते हैं। क्या ही अच्छा हो, अगर सत्ता पक्ष और विपक्ष के वरिष्ठ सदस्य मिलकर सुष्ट्रहित में अपना योगदान दें। उनके लिए भी अच्छा होता, चुनाव के समय अपनी उपलब्धियां भी गिना पाते और जनता

■ काबू में नहीं आतंकी जम्मू कश्मीर में आतंकवादी घटनाएं बढ़ती ही जा रही है। अक्सर सेना के बढ़ा। हा जा रहा जनसर सा की काफिले पर हमले की खबरें आ रही हैं। मुठभेड़ में आतंकवादी मारे जा रहे हैं, तो हमारे सुरक्षा बलों के जवान भी शहीद हो रहे हैं। चिंताजनक यह है कि तमाम मुस्तैदी के बावजूद हमारी कमियां सामने आ रही हैं। समझ में ही नहीं आता है कि ये आतंकवादी कहां से आते हैं और कहर बरमा कर कहां चले जाते हैं? आतंक की जडों को खाद-पानी देने वालों पर भी शिकंजा कसना होगा।

nbtedit@timesgroup.com पर अपनी राय नाम-पते के साथ मेल करें। अंतिम पत्र बारिश ने मौसम विभाग को फिर

## रखना चाहता है।

■ पक्ष-विपक्ष की जिम्मेदारियां

सुभाष बुड़ावन वाला, ईमेल से

हेमा हरि उपाध्याय, ईमेल से

किया फेल - एक खबर - मौसम तो बेईमान है, वक्त पर न आने वाला मेहमान है!

#### मोदी की रूस यात्रा

#### स्पष्ट संकेत

प्रधानमंत्री मोदी की रूस यात्रा 'रणनीतिक स्वायत्तता' बनाए रखने व राष्ट्रीय हित में काम करने का स्पष्ट संकेत हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी दो दिवसीय राजकीय यात्रा पर मास्को गए। उनकी यह यात्रा लंबे समय बाद हुई है क्योंकि प्रधानमंत्री मोदी आखिरी बार 2019 में रूस गए थे बार हुं हु र स्थापन प्रधानना नाथा जायाचर बार 215 न रूस्त में इससे बाद से कंतरराष्ट्रीय परिदुश्य में काफो बदलाव आए हैं तथा भारत और रूस विश्वसनीय मित्रों के रूप में उभरे हैं। इस यात्रा का भारत-रूस संबंधों के लिए बहुत महत्व हैं और इसने परोक्ष रूप से चीन और पश्चिमी देशों को संदेश दिए हैं। भारत और रूस के बीच लंबे समय से पाएचमा दशा को सदशा (रए है। भारत और रूस के बाब लव समय स बद्दुत अच्छे संवध हैं जिनका आपर ऐतिहासिक, एणनीतिक तथा आर्थिक सदयोग है। इस यात्रा से इन परंपरागत संबंधों को और मजबूत करने की भारत की प्रतिबद्धता स्पष्ट होती है। दोनों देशों के बीच साखेदारी अनेक क्षेत्रों तक फैली हुई हैं जिसमें रक्षा, ऊर्जा, अंतरिक्ष तथा नाभिकीय तकनोक शामित्व हैं। इन संबंधों की पुन. पृष्टि कर प्रधानमंत्री मोदी ने स्पष्ट संवत्त दिवा है कि भारत किसी अर्केत विश्वक व्यक्ति के साथ पूरी तरह जुड़ने के बाहरी दवाबों का प्रतिरोध कर अपनी 'रणनीतिक स्वायत्तता' बनाए रखेगा। चीन के साथ भारत के संबंधों में रणनाताक स्थापताता बनाए रखना। चान के साथ मारत के सबया र सीमा पर तनाव हावी है। प्रधानमंत्री मोदी की रूस यात्रा इस नाजुब संतुलन को संभालने का रणनीतिक कदम है क्योंकि रूस और चीन वे बीच बहत निकट संबंध हैं। रूस के साथ भारत की दोस्ती चीन को यह याद दिलाने के लिए काफी है कि भारत की अपने पड़ोसियों के साथ मजबूत साझेदारी है। प्रधानमंत्री मोदी का हवाईअड्डे पर स्वागत रूस के प्रथम उप-प्रधानमंत्री डेनिस मांतुरोव ने किया जो हालिया यात्रा पर वहां



गए चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग का स्वागत करने वाले उप-प्रधानमंत्री से उच्च स्तर के अधिकारी हैं। इससे स्पष्ट होत् है कि रूस भारत के साथ अपने संबंधों को कितना महत्व देत है। यह स्थिति चीन से संबंधों की तुलना में देखी जा सकती है क्योंकि शी जिनपिंग का स्वागत एक निचले दर्जे वाले उप-प्रधानमंत्री ने किया था। दूसरी ओर पश्चिमी देशों, खासकर अमेरिका से भारत के

संबंध हालिया वर्षों में काफी

सुधरे हैं। लेकिन रूस की यात्र कर प्रधानमंत्री मोदी ने संदेश दिया है कि भारत अपनी स्वतंत्र विदेश नीति बनाए रखेगा। यह यात्रा याद दिलाती है कि भारत पश्चिमी हितों नाति चनार एउना नात चनाति वादा है। इससे अंतरराष्ट्रीय संबंधों में के साथ एकमात्र जुड़ाव नहीं चाहता है। इससे अंतरराष्ट्रीय संबंधों में भारत का बहुधुबीय दृष्टिकोण उजागर होता है जहां वह परस्पर हित तथा लाभ के आधार पर सभी प्रमुख श्रकितयों से संबंध बनागा चाहता है। इस परिदृश्य में यह तथ्य महत्वपूर्ण है कि रूस भारत को हथियारों का प्रमुख सप्तायर है और परिचमी प्रतिबंधों के बावजूद भारत ने रूसी तेल बसदिन में कोई कसर नहीं छोड़ी । प्रधानमंत्री मोदी की यात्रा का महत्वपूर्ण आयाम आर्थिक और ऊर्जी सहयोग है। रूस भारत का प्रमुख कर्जा संप्लायर है जिसमें तेल व प्राकृतिक गैस शामिल हैं। इस कर्ज ज्ञथा संशोबरी है असर को अपने स्रोतों के विविधिकरण के साथ पांची ज्ञां आवश्यकतार्थे सुनिश्चित करने में सहायता मिलेगी। रक्षा सहयोग भारत-रूस संबंधों का प्रमुख आयाम है। प्रधानमंत्री मोदी की यात्रा में रक्षा संबंधों तथा तकनीक हस्तांतरण पर चर्चा को महत्वपर्ण स्थान मिल रक्षा क्षत्र वा प्रधानमञ्जूर स्थापित स्वयं भारत को अपने पढ़ीस्था में पैदा होने हैं। रूप के साथ मंत्रीपूर्ण संबंध भारत को अपने पढ़ीस्था में पैदा होने वाली चुनौतियों से निपटने में सहायक हो सकते हैं। रूसी समर्थन भारत को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् में स्थाई सदस्यता दिलाने में सहायक हो सकता है। रूस के साथ मित्रता विश्व शांति स्थापित करने और बहुधूवीय दुनिया बनाने में सहायक हो सकती है।

## सामाजिक असमानताओं का परिणाम

हाथरस घटना हाशियाकृत समुदायों की गहरी सामाजिक अनदेखी का परिणाम है। इससे स्वयं को सामाजिक सुधार के मसीहा के रूप में पेश करने वाले संदिग्ध लोगों के उभार की परिस्थितियां पैदा होती हैं





विस्तृत व्याख्या नहां कर रह है। सूरजपाल सिंह जाटव डैंसे 'बाबा' का उभार अपने आप में बहुत कुछ कहता है। यह वर्तमान समय के विरोधाभास भी प्रकट करता है। ऐसे समय जब सर्वाधिक शक्तिशाली नेता अपनी पूरी आर्थिक शक्ति और संगठनात्मक मशीनरी के बावूद एक रैली में 25,000 लोगों को एकत्र करने में कठिनाई का अनुभव करते हैं. ऐसे में सरजपाल सिंह के कामकाज में कुछ खास जरूर होना चाहिए जिसके चलते वह एक आयोजन में 2,50,000 लोगों को एकत्र करने में सफल हुआ। ऐसे समय जब भाजपा पिछले संसदीय चुनाव में खासकर उत्तर प्रदेश में अनेक हिंदू मतदाताओं के अपने से अलग होने की बात करती हो तब हाथरस की घटना एक प्रकार से इसका जवाब देती है। राहुल गांधी और अखिलेश यादव के नेतृत्व में विपक्षी नेताओं ने इस त्रासदी के लिए प्रशासन को जिम्मेदार ठहराया है। इस प्रकार उन्होंने यदि प्रत्यक्ष नहीं तो भी परोक्ष रूप से 'बाबा' का बचाव करने का



सूरजपाल से नहीं है, बल्कि हरियाणा में जाट समुदाय से आने वाले रामपाल जैसे लोगों ने भी हिंदू आध्यात्कि विमर्श पर उच्चजातीय एकाधिकार को चुनौती दी है। ऐसे 'बाबाओं' के तरीके न केवल शुद्धताबादी व्यवहारों को चुनौती देते हैं, बल्कि उनके समर्थक इनके लिए उनकी प्रशंसा भी करते हैं। हाथरस प्रकरण में पुलिस जांच की रिपोर्ट में कहा गया है कि आयोजकों ने 'आयोजन में संभावित क आयाजन म सभावित सहभागियों की संख्या बहुत कस बताई, ट्रैंपिक प्रबंधन में सहायता नहीं की तथा भगदड़ के बाद प्रमाण मिटाने के प्रयास किए। भगदड़ उस समय हुई जब बाबा के बाहन गुजरने के रास्ते से लोगों ने मिट्टी या चरण धूल एकत्र करने के प्रयास किए।' एफआईआर से संकेत मिलता है कि पुलिस और प्रशासन ने उपलब्ध संसाधनों के साथ यथासंभव अधिकाधिक प्रयास किए।

प्रयास किए।
विडंबना है कि एफआईआर से यह
भी स्यष्ट होता है कि न केवल इस जिले
मे, बिल्क पूरे भारत में प्रशासन पूरी तरह
जमीन पर चल रही घटनाओं के बारे में
अनभिज हैं। जब लोगों को इतनी बड़ी
संख्या प्रस्थान कर रहें। बाबा की कार द्वारा उड़ाई थूल या 'चरण रज' एकत्र करने का प्रयास करे तो इससे स्पष्ट होता है कि सरकार और समाज गरीबों और विचतों को अपने साथ लेने में विफल रहे

हैं। गरीबी केवल ऐसी चीज नहीं है जिसकी परिभाषा अर्थशास्त्री करें, बल्कि इसका संबंध अज्ञान और असमानता से भी हैं। इससे समुदाय से ऐसे 'बाबा' के उभरने की परिस्थितियां पैदा होती हैं जिनमें वह स्वयं को 'समाज सुधारक' के रूप में पेश कर सकता है।

सरकार द्वारा संचालित समाज सुधार कार्यक्रमों में समाज में समता के प्रसार के बजाय नकदी हस्तांतरण या पैसा देने पर बजाय नकदी हत्यांतरण या ऐसा देने पर जोर दिया गया है, फिर चाते दे पर जमाने के 'सर्वादेद' जैसे कार्यक्रम रहे हों या वर्तमाम समय के 'संबोदर' जैसे कार्यक्रम ! इससे पता लगता है कि स्र्त्जपाल और उसके जैसे 'यावाओं की तिल व्यवस्था केरो काम करती है। विताय कप से समुद्ध समाज सामाजिक पेदभाव समाज करने की वालें करते हुए उदारता से दान देता है। सूर्वज्याल भी अपने प्रवन्तों में समता और स्थालतिकरण की वालें करता था। वह शिक्षा को पैरोकारों करता है तथा उसने अपने सम्प्रवाल के ब्लां के तथा है वहा अपने समुदाय के बच्चों को अच्छे स्कूलों में दाखिला कराने में भी सहायता की थी। वह अमतौर से जाति-आधारित भेदभाव की निन्दा करते हुए सबके बीच भाईचारे की पैरवी करता था। उसके समर्थकों की संख्या में भारी वृद्धि इस कारण भी हुई कि उसने कोविड-19 वैश्विक महामारी के दौरान अपने समुदाय के गरीबों में

भोजन, दवायें तथा अन्य जरूरी चीजें बांटने में भी सहायता की। मई, 2021 में वैश्विक महामारी की दूसरी लहर के दौरान जब महामारी शिखर पर थी, तब सूरजपाल ने फर्रूखाबाद में एक शिविर का आयोजन किया था। जिला प्रशासन ने उस समय इसमें शामिल होने के लिए 50

उस समय इसमें आति होने का रिए उठ लोगों की अनुमति दी थी, पर इसमें कई हजार लोगों ने भाग लिया। ऐसे 'सामाजिक आंदोलन' केवल पश्चिमी उत्तर प्रदेश की विशेषता नहीं हैं जहां से सूरजपाल का उभार हुआ। लोग खासकर हरियाणा और पंजाब में विभिन्न प्रकार के 'डेरों' में भारी भीड़ लगाते हैं। हालांकि, ये सभी 'डेरे' हर जाति में अपने हालााब, य सभा डर, हर जाति में अपन समर्थक होंगे का दावा करते हैं, पर उनके अधिकांश अनुवाई दलित व पिछड़ों जातियों के लोग हैं जो अक्सर आर्थिक रूप से गरीव भी होते हैं। वर्तमान असमानता, सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था तथा समाज में दलितों की हाशियाकृत स्थितियों के मलते पंजाब में बड़ी संख्या में 'डेरे' उभरे हैं।

सिख विद्वानों द्वारा लगाए गए मोटे अनुमानों के अनुसार पंजाब के 12,000 गांवों में लगभग 9,000 सिख और गैर-सिख डेरे अस्तित्व में हैं। इनमें पंजाब और पड़ोसी हरियाणा में 300 बड़े डेरे शामिल हैं। इनमें से लगभग एक दर्जन में प्रत्येक के अनुयाइयों की संख्या एक लाख

देखने से स्पष्ट होता है कि सरजपाल का आश्रम 'अपने संख्याबल के आधार पर आश्रम अपन संख्यावल के आधार पर यदि पंजाब में बीस के राधास्वामी, सिरसा के डेरा सच्चा सौदा, निरंकारी, नामधारी, नूरमहल के दिव्य ज्योति जागरण संस्थान, रोपड़ के डेरा संत भैंनरवाला तथा बालन के डेरा सच खंड से बड़ा नहीं तो भी उनके लगभग बराबर है। वर्तमान समय में उत्तर प्रदेश सरकार ने हाथरस प्रकरण की जांच के लिए एक न्यायिक आयोग का गठन किया है। ऐसा लगता है कि आयोग सूरजपाल

उनके भक्तों तथा प्रशासन पर इस त्रासदी का आरोप लगाएगा। इसके साथ ही राज्य सरकार कुछ समय के लिए पूरी शक्ति के साथ इस त्रासदी के जिम्मेदार लोगों की साथ इस ज्ञासदा का जम्मदार लागा का गिरफ्तारी करेगी। लेकिन जनता का फ्रारफ्राताबा घटने के बाद मीडिया वहां से अपने कैमरे हटा कर किसी अन्य खबरिया घटना पर केन्द्रित करने लगेगा। इसके साथ ही न्यायिक जांच की रिपोर्ट सामने आने के बाद कुछ समय उस पर चर्चा होगी, लेकिन यह नहीं कहा जा सकता है कि उस पर क्या कार्रवाई होगी। संभवत: कोई इस बात का जवाब नहीं देना चाहेगा काइ इस बात का जजाब नहां दना चाहगा कि सूरजपाल जैसे 'बाबा' क्यों उभरते हैं और वे जनता की भावनायें अपने पक्ष में कैसे एकजुट कर लेते हैं। सूरजपाल जैसे बाबा' भारी संख्या में अपने अनयाइयों के कारण 'राजनीतिक प्रभाव' भी प्राप्त

अनुयाइयों की बड़ी संख्या के कारण अनुवाइया का बड़ा सख्या क कारण हर राजनीतिक पार्टी उनको अपने पाले में लाने का प्रयास करती हैं। ऐसे में कोई आश्चर्य नहीं कि कांग्रेस और समाजवादी पार्टी सूरजपाल सिंह जाटव का समर्थन कर रही हैं। एलेक्ट्रानिक मीडिया ने एक कर रहा है। एतब्दानक माडिया ने एक दल के अध्यक्ष के पुराने बीडियो तलाशे हैं जिसमें वे 'बाबा' सूरजपाल जाटव की भूरि-भूरि प्रशंसा करते दिखते हैं। हालांकि ये नेता विदेश में शिक्षित इंजीनियर हैं, पर 'बाबा' की तारीफ करते समय वे संभवत: विज्ञान की सीमायें भी तोड़ देते हैं।

हालांकि, हरियाणा की भाजपा सरकार ने भी हत्या के दोषी डेरा सच्चा सौदा के राम रहीम सिंह को कई बार उदारतापूर्वक फर्लों दी है। लेकिन इस तथ्य से भी इनकार नहीं किया जा सकता है कि 'बाबा' लोगों का गुस्सा किसी राजनीतिक पार्टी के लिए राजनीतिक रूप से हानिकारक सिद्ध हो सकता है।

# ब्रिटेन और ईरान में नेतृत्व परिवर्तन



यूके और ईरान में हुए हालिया नेतृत्व परिवर्तन यह दर्शाते हैं कि वैश्विक स्तर पर मतदाता समावेशी व समभाव वाले नेताओं को पसंद कर रहे हैं।





नाइटेड किंगडम और ईरान दोनों में नेतृत्व में बदलाव हुआ है। यू के. में कंजविटिव पार्टी के ऋषि सुनक की जगह लेबर पार्टी के कीर स्टारमर ने ली है। ईरान में लोगों ने सुधारवादी और अपेक्षाकृत उदार म लागा न सुधारवादा आर अपश्चाकृत उदार उम्मीदारा मासू एं पेशाकियन को अपना नया राष्ट्रपति चुना है। महं में हेलीकॉप्टर दुर्घटना में पूर्व राष्ट्रपति इज्राहिम रहंसी को मृत्यु के कारण इंरानी राष्ट्रपति चुनाव की आवश्यकता थी। यूरोप और एशिया में ये बदलाव महाद्वीपों के लोगों की मानसिकता में बदलाव को दशति हैं। देशों देशों में तक्की समद्र परंपाओं

दोनों देशों में, उनकी समृद्ध परंपराओं और सभ्यताओं के साथ, उनके मतदाताओं ने उदार नेताओं और पार्टियों के पक्ष में

विकल्प दिया जाता है, तो लोग सभ्यता और ायकर पुरा जाता है, तो तान सन्यता जार प्राप्टवाद का आह्वान करने वाले कट्टरपेथियों की निरंतर वयानवाजी के बजाय वर्तमान जरूरतों के अनुसार बड़े पैमाने पर सोच-समझकर निर्णय लेते हैं। ब्रिटेन में लेबर पार्टी पिछले 14 वर्षों से सत्ता से बाहर थी। कई लोगों ने पार्टी के पतन की भविष्यवाणी की थी और माना था कि देश अनिश्चित काल तक कंजवेंटिव शासन के अधीन रहेगा। राष्ट्रवादी इच्छाओं से प्रेरित कंजवेंटिवों ने ब्रिटेन को यूरोपीय संघ से बाहर निकाल दिया, जिससे देश अपने पडोसी लोकतंत्रों से अलग-थलग पड गया।

पड़ासा लाकतंत्रा स अलग- ब्लग- ब्लग पड़ गाया। यह उल्लेखनीय है कि कंपलीटमां की हार ब्रिटिश लोकतंत्र के संदर्भ में ऐतिहासिक रूप से कम है, जबिक लिखल होने के स्टेश में से से के स्टेश में देशों के स्टेश में 11 से बढ़कर अब 72 हो जाना, ऐतिहासिक रूप से उच्च सरा को दर्शाता है। चूंकि लिबरल डेमोक्रेट्स को लेबर पार्टी से भी कुछ हद तक अधिक वामपंथी माना जाता है, इसलिए देश के राजनीतिक परिदृश्य में किसी भी अन्य समय की तुलना



में आम आदमी के जीवन की गुणवता में अर्थव्यवस्था को कमजोर कर दिया है। सुधार पर नए सिरं से जोर दिया जा रहा है। इसके अतिदिक्त, इंदगी लोगों ने समय-इसके विपरीत, 1979 में इस्लामी क्रांति के समय पर एक के सामाजिक कानूनों के प्रति बाद से, इंदान ने अपनी संप्रभुता का दावा अपना असंतोष व्यवत किया है। ब्रिटेन और करने के लिए लगातार पश्चिम के रिवलाफ करन के लिए लेगातार पश्चिम के खिलाफ खुद को खड़ा किया है। इस रुख ने न केवल पश्चिम के साथ सांस्कृतिक संघर्षों को जन्म दिया है, बल्कि ईरान की अर्थव्यवस्था के िता है। सरकपूर्ण चुनीतियों पैदा की हैं। इससे पता चलता है कि ब्रिटेन यूरोणीय संघ इसके अलगाव और तर देशों के साथ के साथ संबंधों को नवीनीकृत करने की टकराव ने इसकी तेल आधारित कोशिश कर सकता है, और ईरान परिचम

उपना जिस्ताव अस्ता जिया हो में हुए बदलावों के साथ, दोनों नए नेताओं ने अपने देशों के अलगाव को समाप्त करने और वैश्विक मित्रता को बढ़ावा देने का संकल्प लिया है।

रख सकता है। यह देखना दिलचस्प होगा कि क्या कीर स्टारमर ब्रेक्सिट पर पुनर्विचार करेंगे और ब्रिटेन को यूरोपीय संघ के करीब

इसी तरह जैसा कि नए ईरानी राष्ट्रपति इस्त तरह, जस्ता कि नए इरोना राष्ट्रपति ने सभी के लिए दोस्ती का हाथ बढ़ाने का वादा किया है, यह देखना बाकी है कि क्या इससे अमेरिका और अंतत: तकनीक-समृद्ध इज्राइल के साथ शांति स्थापित होगी। यह इज्तरहरा के साथ साति स्थापित होगा। यह देखना भी दिलचस्प होगा कि क्या ईरानी नेता सर्वोच्च नेता को परमाणु अप्रसार संधि (एनपीटी) ढांचे पर लौटने के लिए राजी कर पाते हैं. जो पश्चिम में ईरान के अलगाव

का मुख्य कारण है। ये चुनाव परिणाम वैश्विक राजनीति में संभावित वामपंथी बदलाव का संकेत देते हैं तमानिया वानस्या बदलाव पर्म स्वर्मा द्वार होनों जिसमें प्रमुख यूगेपीय और एशियाई दोनों देशों में महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहे हैं। इसका मतलब यह हो सकता है कि सरकारों को रोजगार सुजन और अपने नागरिकों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता होगी। ब्रिटेन वर्तमान में वित्तीय कठिनाइयों और उच्च

मुद्रास्फीति का सामना कर रहा है, संपत्ति की कीमतों में उछाल के बावजूद। इसी तरह, ईरानी लोग अमेरिका और उसके सहयोगियों द्वारा लगाए गए लगातार बढ़ते सहयागया द्वारा लगाए गए लगातार यहत प्रतिवंधों का भार महसूस कर रहे हैं। इंसानियों को एक नई अर्थव्यवस्था और पश्चिम के साथ अपने संबंधों के लिए एक नए दृष्टिकोण की आवश्यकता है। जबकि पश्चिमी देश ईरान में बदलाव के बारे में सतर्क रूप से आशावादी हैं. उन्हें विश्वास है कि यूके में नया लेबर नेतृत्व एक व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाएगा।

व्यावहार्षिक दृष्टिकोण अपनाएगा। द्वारानी अंगिपनेशिक दृष्टिकोण से ग्रेरित आनावरण्क सुख्यता को रुहिवारी एमांति से हटकर, युक्त को अपनी एमांति को फिर से परिमाणित करने और जनता के साथ अधिक खुले तीर पर जुड़े को आवयप्तकता होगा। उस्ते में दुगिया भर के ग्राव्यायकता होगा। उस्ते में दुगिया भर के ग्राव्यायकता होगा। उस में दुगिया भर के ग्राव्यायकता होगा। उस में दुगिया भर के ग्राव्यायक्ता होगा अपने स्वार्थ के भाग वर्मामी तर से अुड़े एते हैं और व्यावहार्षिक तरीकों से आम एमोंगा के मुखें को संबोधित करना जारी रखते हैं, तो आप प्रासंगिक बने रहेंगे व संभावित रूप से

#### आप की बात

#### हाथरस के सबक

भारत में डिजिटल इंडिया एवम कंप्यूटर के युग के बावजूद अधविश्वास, पाखंड, आडंबर जादू-टोने व तांत्रिकों के चक्कर में जादू-टान व ता।त्रका क चक्कर म समाज का एक हिस्सा जकडा है। धार्मिक, आस्थावान व निष्ठावान रहने के साथ ही हमें समाज को भीड़-तंत्र और भेड़-चाल से बचाना होगा नहीं तो हाथरस जैसे हादसे होते रहेंगे। सभी धर्मों के धर्मगरुओं को इस गंभीर स्थिति ार विचार करना चाहिए। सभी परियों के राजनेताओं को भी केवल वोटबैंक के लिए ऐसे फर्जी बाबाओं की प्रशंसा से बचते हुए जनता में जागरूकता पैदा करने के प्रयास करने चाहिए। नेताओं के ऐसे कदमों से जनता भ्रमित होती है और इससे धर्म के प्रति उसकी

सच्ची श्रृद्धा और आस्था विकृत हो जाती है। सुश्री मायावती का दृष्टिकोण इस पूरे मामले में एकदम अलग और प्रशंसनीय है। उन्होंने अलग आर प्रशसनाय है। उन्हान ऐसे भ्रष्ट बाबाओं के खिलाफ कार्रवाई का आह्वान करते हुए जनता को अंधविश्वास से दूर रहने की सलाह दी है। अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद का भी दृष्टिकोण इस मामले में बिल्कुल सही है जिसने देश भर के अनेक तथाकथित बाबाओं को फर्जी घोषित किया है। योगी सरकार ने भी बड़ी कार्रवाई करते हुए सात अधिकारियों को निलंबित किया है। हमें हाथरस त्रासदी से समुचित सबक लेने चाहिए ताकि ऐसी घटनाओं से बचा जा सके।

**वीरेंद्र कुमार जाटव,** दिल्ली

#### कश्मीर की रिथति

जम्मू-कप्रमीर से भाग 3/0 व 35 ए खुल्म करने के बाद केंद्र सरकार ने इसे जम्मू, कप्रमीर और लदाख़ के तीन भागों में सुरक्षा और सुशासन को दृष्टि से बांटा था, तािंक आतंक व उपद्रव प्रस्त क्षेत्र को नायदित्र करने में आधाना हो तक पंत्र वहां जन-जीवन सामान्य वन सके। लेकिन अभी भी यदा-कदा पड़ोसी देश की शह पर आतंको प्रदार्ग हो तो है जिसमें हमारे बीर जवना शतिह यु की अभी भी हो रहे हैं। शाल ही में कदुआ में आतंकी हमले में 5 जवान शतिह यु गए। सरकार ने इसे भीता से लेते हुए सख्या व तुरंत उपित कार्रावाई कर आतंकियों व उनके अर्जुं को नष्ट किया है। सर्वविद्यात है कि ये सारी कारसतानों सोमा पार से आने वाले पुसर्पियों की ही है। अलः सीमा पर भी चौकसी बढ़ाने की बहुत जरुरत है। हालांकि, अभी भी साना पर ना चाकरा चढ़ाने का बहुत जररा है। हालाकि, जना ना जम्मू करमीर के कुछ तत्व इन आतंकियों की अनेक प्रकार से सहायता करते हैं। ऐसे तत्वों की पहचान कर उनके खिलाफ कटोर कार्रवाई जरूरी हैं। खुशी की बात है कि पाकिस्तान से बातचीत की पैरोकारों करने वाले फारूक अब्दुल्ला ने भी इस बार पाकिस्तान को चेतावनी दी है कि आतंकवाद उस देश को बरबाद कर डालेगा। उन्होंने कहा कि आतंकी घटनाओं के साथ बातचीत असंभव है - शर्म्कृतला महेश नेनावा, इंदीर

### संतुलित विदेश नीति

**पिछले दशक** में भारत ने संतुलित विदेश नीति अपनाई है। ब्रिक्स जैसी संस्थाओ में भी भारत ने अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराई है। पश्चिमी देशों के पश्चिमी देशो की परवाह किए बगैर मोदी की विश्वसनीय मित्र साथ संबंध बेहतर बनाने के साथ बगर मादा का विश्वसनाय गिन्न देश रुस की यात्रा करना, लेकिन उसके द्वारा यूक्रेन के बाल चिकित्सालय पर हमले में बच्चों उसने रुस से भी अपने वर्षो पुराने संबंध पर आंच नहीं आने दी सब्बंध पर अधि नहां आने दा। उसने हमास द्वारा इजराइल पर किए आतंकी हमले की कड़े शब्दों में निंदा की तो गाजा में इजराइली सैनिक कार्रवाई के शिकार लोगों के लिए मानवीय की दुःखद मृत्यु का मुद्दा पुरी शिद्दत से उठाना यह सिद्ध करता हे किए भारत की अपनी स्वतंत्र विदेश नीति है तथा वह राष्ट्रीय हित को सर्वोपरि मानकर किसी सहायता भी भेजी। मोदी ने एक हित को सवीपार मानकर किसा के आगे झुकता नहीं है। भारत को मंशा किसी एक गुट का हिस्सा बनकर रहने की नहीं है। वह पश्चिमी वर्चस्व वाले जी-20 और क्वाड के साथ जी-7 के साथ भी रहा है। वहाँ चीनी वर्चस्व वाले बार फिर पुतिन से साफ-साफ कहा कि शांति के लिए बातचीत और राजनय का रास्ता अपनाना चाहिए। दम विदेश नीति से दुनिया भर में भारत तथा मोदी का सम्मान बढ़ा है। - विमलेश पगारिया, बदनावर

शंघाई सहयोग संगठन और

## अमेरिका में राजनीति

अमेरिका में राजनीति सारी दुनिया के लिए महत्वपूर्ण लगती है। दो भीषण युद्धों से परेशान दुनिया में अमेरिका के राष्ट्रपति चुनाव बहुत ही अहम हैं। डोनाल्ड ट्रंप का पिछला कार्यकाल देखते हुए जाहिर है कि यदि वे राष्ट्रपति बने तो अपनी याद व राष्ट्रपात बन ता अपना स्वच्छंदता को बरकरार रखते हुए सिर्फअमेरिकी हितों की बात करेंगे और कई अंतरराष्ट्रीय संधियों के निष्क्रिय होने का भय बना रहेगा। नारो भी दम संभावना से चितित हैं। नाटा मा इस समाजना सा पारत है। बायडेन की जीत में उनकी उम्र सबसे बड़ी समस्या है। डेमोक्रेटिक पार्टी को समय रहते उनके स्थान पर किसी युवा व जोशीले उम्मीदवार

को आगे करना चाहिए ताकि ट्रंप को सता में आने से रोका जा सके। यदि बायडेन को पार्टी ऐसा नहीं करती है तो अमेरिकी मतदाता ना चाहते हुए भी ट्रंप को ही वोट देंगे। वैसे भी बायडेन के जीतने की संभावना मात्र 25 प्रतिशत है। ऐसे में देश और पार्टी के हित को ध्यान में रखते हुए बायडेन को चुनाव लड़ने की अपनी जिद छोड़ देर्न चाहिए। इसके साथ ही टंप को भी पाहिए। इसके साथ हा ट्रंप का मा स्पष्ट करना चाहिए कि वर्तमान परिस्थितियों में चुनाव जीतने पर वे कैसी दुनिया बनाना पर्सद करेंगे जिसमें अमेरिका प्रथम भी हो।

- **विभृति बुपक्या,** खाचरोद पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से responsemail.hindipioneer@gmail.com पर भी भेज सकते हैं।

#### **Editorial**



#### **Locked in confict**

Governors and CMs must step back from a political confrontation

n calling for a report from the State government on the action taken against two police ofcers. West Bengal Governor CV. Ananda Bose has escalated the confict between Raj Bhavan and the State government. He has written to the Union government and to the Chief Minister, Mamata Banerjee, about what he perceives as impropriety by Vineet Goyal, Kolkata CIty Police Commissionar and totals withstates a Deputy Commissioner, and Indira Mukherjee, a Deputy Commissioner of Police. The Governor is aggrieved that they made remarks pertaining to an investigation into a complaint of alleged sexual investigation into a complaint of alleged sexual harassment that a Raj Bhavan employee had made against him. While the complaint has not been acted upon — as Mr. Bose enjoys immunity from proceedings under Article 361 of the Constitution — it has become a thorny issue, with the Governor believing that the police ofcers had fouted the rules of conduct in speaking about an investigation that cannot be instituted or continued. His consternation is also because he believes the Commissioner had stopped a group of people with grievances about post-election violence from meeting him, even though he had agreed to meet them. The Governor has also demanded a report on the action taken with regard to a woman being disrobed in public, a couple beto a woman being disrobed in public, a couple be-ing fogged and other incidents of mob violence,

in a wonlan being uisloued in plunis, a budgit ceing fogged and other incidents of mob violence, undoubtedly a legitimate request. The Governor is indeed authorised to seek information from the State government under Article 167. Whether disciplinary action involving central service ofcers, normally within the domain of the State governments when they are serving the State, can be inlitated at the instance of the Governor or the Union government is a separate question altogether. Mr. Bose has cited incrumstances surrounding the harassment complaint against him to argue that it is a "concocted allegation", induced and facilitated" by the police. However, it may not be in anyone's interest to escalate such issues by asking for punitive action against ofcers. At a time when personal squabbles and institutional conficts between Governors and Chief Ministers are on the rise, the devenors and Chief Ministers are on the rise, the deve lopment is likely to be seen as one more stand-of involving the politicisation of Raj Bhavan by incumbents seeking to undermine elected regimes The two sides appear locked in perennial confict, mirroring the antagonism between the Centre and the State. There is the usual one over Centre and the State. I nere is the usual one over grant of assent to Bills, and a recent one involves the question who should administer the oath of foce to newly elected legislators. And there is a defamation suit the Governor has fled against the Chief Minister. Constitutional functionaries should pull back from the brink before they are sucked into a political rabbit hole.

#### Even the odd jobs

Gig workers need a comprehensive national law on their employee status

or India's gig workers, who are increasing in numbers but are perched precariously on the edge of the unregulated labour pool, the Karnataka Platform-based Gig Workers (Social Security and Welfare) Bill, 2024, ofers a welcome reprieve, but still stops short of provid-ing them with the security of being employees. When app-based gig work was introduced a decade ago, courtesy ride-sharing and food delivery apps, the absence of the word 'employee' was acpass, and supplies and passes and passes and passes and passes as a positive; it supposedly ofered a chance for 'partners' to retain their autonomy and earn good money without being locked into contract with rigid timings. That illusion soon dissolved as incomes crashed and working hours lengthened, and the lack of a formal 'employee' status left workers at the mercy of the aggregator and all-powerful algorithms, in the absence of safety nets or governmental regulation. Despite this, the gig economy is growing. According to a NTTI Aayog report, India had 77 lakh gig workers at the beginning of the decade, and by 2029-30, they are projected to account for 4.1% of income, and 6.7% of the non-agricultural workforce. A right-based legislation, the draft Bill aims to

A rights-based legislation, the draft Bill aims to prevent arbitrary dismissals, provide human grievance redress mechanisms, and to bring more transparency into the opaque tangle of augrievance recrease mechanisms, and to bring more transparency into the opaque tangle of automated monitoring and algorithm-based payments. It is a step up from the Union governments Tode on Social Security, 2020. Kamataka's law also ofers social security, 1020. Kamataka's law also ofers social security through a welfare board and fund, with contributions from the government and the aggregator, either through a cut from every transaction on the app, or as a percentage of the platforms tunover in the State. Noting that many of the first workers' unions have rightly demanded that the welfare fee is charged as a cess on each transaction. Sceptics note the morbium nature of other unorganised sector welfare boards, but one advantage of mandatory registration with such a board is that it will make gig workers visible in the eyes of the law. Kamataka's Congress governent aims to enact the Bill in the monscoor sesment aims to enact the Bill in the monsoon session of the Assembly, and it must quickly form late rules and establish the welfare board to ensure that the law is in force before the end of ensure that the law is in force before the end of the year. A similar legislation in Rajasthan, enacted by the predecessor Congress government, has been efectively put into cold storage by the BJP government. At the national level, comprehensive legislation is needed not just to set minimum wages, reasonable working hours and conditions and robust social security but also to provide gig workers with the coveted status of 'employees'.

### India's demographic journey of hits and misses

s we observe World Population Day on July 11, there is much to look at In India's demographic journey over the decades. It was in 1989 that the United Nations established the day after Dr. K.C. Zachariah, a renowned demographer, had proposed the concept of a "World Population Day." The world population had touched five billion in 1987 and challenges such as poverty, health and gender inequality were plaguing the world, developing countries in particular. The decades of the 1960s and 1970s were scary as the global population was growing at a yearly rate of 2%. Er or India, there was a prediction of doom. This meant that widespread poverty, lunger and deaths were soon to follow in the s we observe World Population Day on

hunger and deaths were soon to follow in the next decades. However, despite the predictions, the next decades told a diferent story altogether Global fertility rates declined rapidly. Due to improvements in living conditions and medical

Improvements in living conditions and medical infrastructure, life expectancy increased. In India too, fertility rates began to fall since the 1970s and at progress in many health parameters has been outstanding. There have been significant reductions in maternal and child mortality. In 2015, the UN adopted the Sustainable Development Coals (SDGs) which were soon recognised as important metrics in assessing the progress of nations. With 2030, the target year, drawing closer, India's progress in the SDGs should be understood particularly in light of its population dynamics.

India's population dynamics
Three components, namely fertility, mortality, and migration, play a pivotal role in shaping India's demographic landscape. India has made significant strides in reducing its fertility. According to the National Family Health Survey (NFHS)-5, India's total fertility rate (TFR) (NFHS)-5, India's total fertility rate (TFR) decreased from 3.4 to 2 between 1992 and 2021, decreased from 3.4 to 2 between 1992 and 2021, dropping below the replacement level of 2.1. There has been a significant drop in the mortality rate as well. The average life expectancy of Indians has also increased over time. With this, India is experiencing a demographic shift, towards an ageing population. According to the 2011 Census, individuals aged 60 years and above constituted 8.6% of the total population. The figure is projected to rise up to 19.5% by 2050. But what really do these changing dynamics signify? India's population dynamics signify?

fertility signifes a transition toward smaller family norms. This can reduce the proportion of the dependent population and result in a demographic dividend - a period where the working-age population is larger than the dependent population. India can harness the potential of its young workforce by creating employment. The decline in mortality and increase in life expectancy are refections of a robust health-care system and increased living



#### Paramita Majumdar

loctoral fellow pulation studies at the International Institute for Population Sci (IIPS), Mumba



Nitin Kumar

independent researcher and a Legislative Assistan to Members of Parliament (LAMP) Fellow (2023-24), New Delhi

From pulling back from the brink of a

demographic

year of 2030 for the Sustainable

Development Goals, there is

much to look at

in the country

disaster to striving to reach the target standards. The issue of population ageing, however, requires a long-term plan — focusing on geriatric care and providing social security benefts. Migration and urbanisation are also benefts. Migration and urbanisation are also critical issues. Rapid rural to urban migration is posing a threat to the existing urban infrastructure. Among all these, gender equality also finds an important place. Women labour force participation, which is straggling, their notable absence from political representation and their unending plight within society are the silent issues which can sabotace indica path to 2030. POPULATION

sabotage India's path to 2030. With six years in hand to meet the targets, India's road to 2030 crosses the path with its population dynamics Population issues such as gender equality and socio-cultural divides cannot be ignored in the journey to achieve SDGs. It is only with a thorough understanding that India will be able to achieve a 'development' which is sustainable in its truest sense

The country's SDG journey
'Development' in the simplest way means
ensuring the basic requirements of food, shelter
and health for all. No Poverty, Zero Hunger and
Good Health' are the three most important SDGs
which form the core of 'development'. India's
journey from the brink of a demographic disaster
to striving towards the 2030 goal of 'leaving no
ne behind' has seen a couple of hils and misses.
India made great leaps towards the goal of
eradicating poverty. The proportion of the
population living below the poverty line reduced
from 48% to 10% between 1990 and 2019. The
Mahatma Gandhi National Rural Employment
Guarantee Act (MGNREGA) that came into efect
in 2006 played a critical role in addressing rural

in 2006 played a critical role in addressing rural poverty. The Janani Suraksha Yojana of 2005 — it provides cash benefts to pregnant women — not only accentuated institutional deliveries but also saved poor families from hefty health expenditures.

expenditures.

In his controversial book, *The Population Bomb* (1968), Paul R. Ehrlich raised serious questions about India's ability to feed its population in the years to come. With the Green Revolution, India became self-sufcient in crop production and averted a catastrophe. The proportion of the population sufering from hunger reduced from 18-3% in 2001 to 16.6% in 2021. However, India's nutrition picture is not completely rosy. India contributes a third of the global burden of mainutrition. Though the Indian government launched the Prime Minister's Overarching Scheme for, Holistic Nourishment (POSHAN) Scheme for, Holistic Nourishment (POSHAN) Abhivaan in 2018, it will still require a miracle to fulfi the target of 'Zero Hunger' by 2030. Health is one sector in India where progress

made has been remarkable. All the critica mortality indicators have seen steady declines.
The Maternal Mortality Rate (MMR) decreased from 384.4 in 2000 to 102.7 in 2020. The mortality rate for children under fve reduced significantly post 2000s. The linfant mortality rate also reduced from 68.7 deaths per 1,000 live births in 2000 to 25.5 deaths per 1,000 live births in 2021. Although India is still not near reaching track. These achievements show that there has been a significant improvement in the quality and coverage of health care.

Despite these achievements, India's road towards 2030 is not easy.

ATTION A coording to Oxfam, the top 10% of India's population holds 7% of the national wealth. If the fulls of development are not equitably distributed and if development does not percolate to the poorest of the poor and the wealth scenario remains so from 384.4 in 2000 to 102.7 in 2020. The

the poor and the wealth scenario remains so skewed as it is now, sustainable development' can never be achieved in its truest sense. Absolute growth in GDP numbers has limited importance for a country where the top 1% holds 40% of the total wealth. Hunger and nutrition is another sector in crisis. In the Global Hunger Index (2023), India's rank was 111 out of 125 countries. In terms of nutrition, stunting, wasting and underweight among children below for years and anaemia among women pose serious challenges. India's epidemiological trajectory shows that the country has a double burden of communicable and non-communicable diseases (NCD). This is a serious challenge for India which also combats the early onset of NCDs and the rising health needs of the elderly. skewed as it is now, 'sustainable development

What needs looking into
For India to achieve the SDGs, the changing population dynamics has to be acknowledged while forming policies. India needs to address income inequality, harness its demographic income inequality, harness its demographic dividend by creating job opportunities for the youth of India and address changing health needs. NCDs, which incur high out-of-pocket expenditures, are catastrophic for some families. India needs a stronger safety net to save these families from slipping into utter poverty. The nutrition scenario should be set right by strengthening programmes. This will require an increase in budgetary allocation for the health and nutrition sectors. Another, but often missed, paradigm of this entire development discussion is gender equality. A gender equal approach and empowerment of vulnerable women can solve most issues and propel India's progress in the SDGs.

India still has a long journey to cover in order to meet all the targets of the SDGs. This will require multi-sectoral collaboration and political will. India's progress in SDGs is directly proportional to the well-being of its population and the route to progress lies in a better understanding of its population dynamics and addressing the issues.

## A case of people versus population

uly 11 has been observed as World Population Day since 1989 after the global population crossed the fve billion mark. The population is now estimated to be 8.1 billion,

with India as the most populous nation (1.44 billion), which is slightly more than China's. This writer wrote the article, "Myths about Population Growth", which was published in this daily on World Population Day (World Population Day 1997)—when India crossed the 100 crore mark. The article showed crossed the 100 crore mark. The article showed how the doomsday predictions of Malthus, 200 years ago, or that of his present-day followers in the West, that population growth would overtake food production, never came true and never will in the future. The aim of this article is to analyse what has changed in 27 years.

Changes in India
Let us look at some of the major socio-economic
changes in India over 27 years.
First, the population has grown 44% from 100
crore to 144 crore, but the annual growth rate of
the population has fallen sharply — from nearly
2% to below 1%. This is because the number of births per woman (total fertility rate or TFR) has fallen from 3.4 to 2, just below the "replacement

Second, the per capita GDP of Indians grew six times, from \$400 to \$2,400. The average life span of an Indian has increased from 61 years to 70

years.

Third, Indians living below the multi-dimensional poverty line decreased from 443i. The foundation of 1% However, 11% of 144 crore is still a very large number of 16 crore people.

The 16 crore people below the poverty line are not distributed evenly across the country. Just four States, namely, Ultar Pradesh: (5.4 crore out 02.36 crore), Bilhar (4.2 crore out of 12.7 crore), Madhya Pradesh (2.52 crore out of 8.7 crore) and Jharkhand (1.1 crore out of 4 crore) account for 83% of the national total of people below the poverty line, while accounting for only 34% of poverty line, while accounting for only 34 % of India's total population. How to address this persisting disparity in socio-economic growth



S. Ramasundaram

a retired Indian Administrative Service (IAS) oficer and a United States-trained demographer

governments and beyond the scope of this article Impact of climate change
But a far more serious issue facing the people of

but a at more services reading the people india is the adverse efects of climate change which do not recognise national boundaries. This is where the population versus people dichotomy becomes apparent. The debate on historical emissions (advanced by developing countries) emissions (advanced by developing countries) versus current emissions (advanced by the developed world) is closely linked to the population versus people divergence. This is because the per capita consumption of both natural resources and manufactured products directly correlates with the per capita income of the people.

The Organisation for Economic Co-operation and Development (OECD) countries with a per capita income of \$40,000 and a total population of 1.39 billion, together produce and consume \$55.6 POPULATION

billion, together produce and consume \$55.6 trillion worth of natural resources and manufactured goods. In comparison, India, with a per capita GDP of \$2,400 and a population of 1.44 billion, produces and consumes just \$3.5 trillion worth of natural resources and 1.44 nilmor, produces and consumes just \$3.5 intillion worth of natural resources and manufactured goods. In other words, the OECD countries with a population slightly less than that of India consume nearly 16 times of what the whole of India consumes. This has been the major cause of global warming over the past few decades, resulting in unpredictable weather changes. In turn this has adversely afected the poor in developing nations more severely than people in developed nations with much better housing and civic infrastructure.

With 11% off is people still below the poverty line, India will continue to accord priority to economic growth over climate change mitigation measures, and rightly so. That responsibility lies majorly with the OECD countries, and now increasingly with China. Successive Indian governments have negotiated hard at global

It is the welfare of the average citizen which matters and not forums on India's right to grow economically to alleviate poverty as early as possible.

#### Global South and growth

The Narendra Modi government has articulated this even more forcefully by expanding the definition of the Circular Economy framework in the G-20 New Delhi Declaration of September 2023: "In order to endeavour to decouple our economic growth from environmental degradation and enhance sustainable

radation and enhance sustainable consumption and production, including primary resource consumption while supporting economic growth, we acknowledge the critical role played by circular economy, extended producer responsibility and resource efciency in achieving sustainable development. This is an explicit statement of intent to maintain the economic with of the Global South nations, a term used all developing nations as a group, India is

for all developing nations as a group. India is looked upon by the nations of the Global South in their eforts to maintain economic growth in their respective nations as the frst priority, followed by measures to achieve net zero. India has fxed the year 2070 to achieve this, compared to the European Union's target of reaching net zero by 2050. But India would strive for zero poverty within the next decade

within the next decade.

The next few decades will see developing nations focusing on eradicating persistent poverty among their peopler ather than responding to population growth doomsday 'experts' who have so far not been proved right. As Tamil poet C. Subramania Bhratia siad nearly 100 years ago, 'Thani oruvanukku unavillai enil, inde jagatthinia aithithiduvom (even if one person does not have food to eat, we will destroy the world') So, it is the welfare of average citizen which matters and not population numbers at the macro level. macro level.

The views expressed are personal

#### LETTERS TO THE EDITOR

The successful visit of Prime Minister Narendra Modi to Minister Natieriaria Modi to Moscow bolsters the fact that Russia still remains India's robust, special and privileged strategic partner It would be prudent and

responsible if India strives responsible if India strives to defuse the ongoing war in Ukraine by bringing the two sides to the negotiation table by using its acclaimed global image. M. Rishidev, Dindigul, Tamil Nadu

Can the visit be called a Can the visit be called a success from a foreign policy angle? Is foreign policy only about economic interest? Is there no space for humanitarian and just concerns? India should have called a spade a spade,

macro-level

population

numbers

which requires moral courage. India failed to play a lead role in strongly calling for the war to end. The world was watching the visit very closely.

S.V. Venkatakrishnan,
San Jose, California, U.S.

### Disease threats It is of great concern that the spectrum of microbial

the spectrum of microbial threats is widening. In the past two decades, India has seen a rise in outbreaks of emerging and re-emerging viral, bacterial, and other

infectious diseases. A study in a top scientific journal says that over half of known pathogenic diseases can be aggravated by climate change. Dr. Biju C. Mathew, Thiruvananthapuram, Kerala